# देश 2024-25

धर्म बिना विज्ञान अपंग है, और
विज्ञान बिना धर्म दृष्टिहीन।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

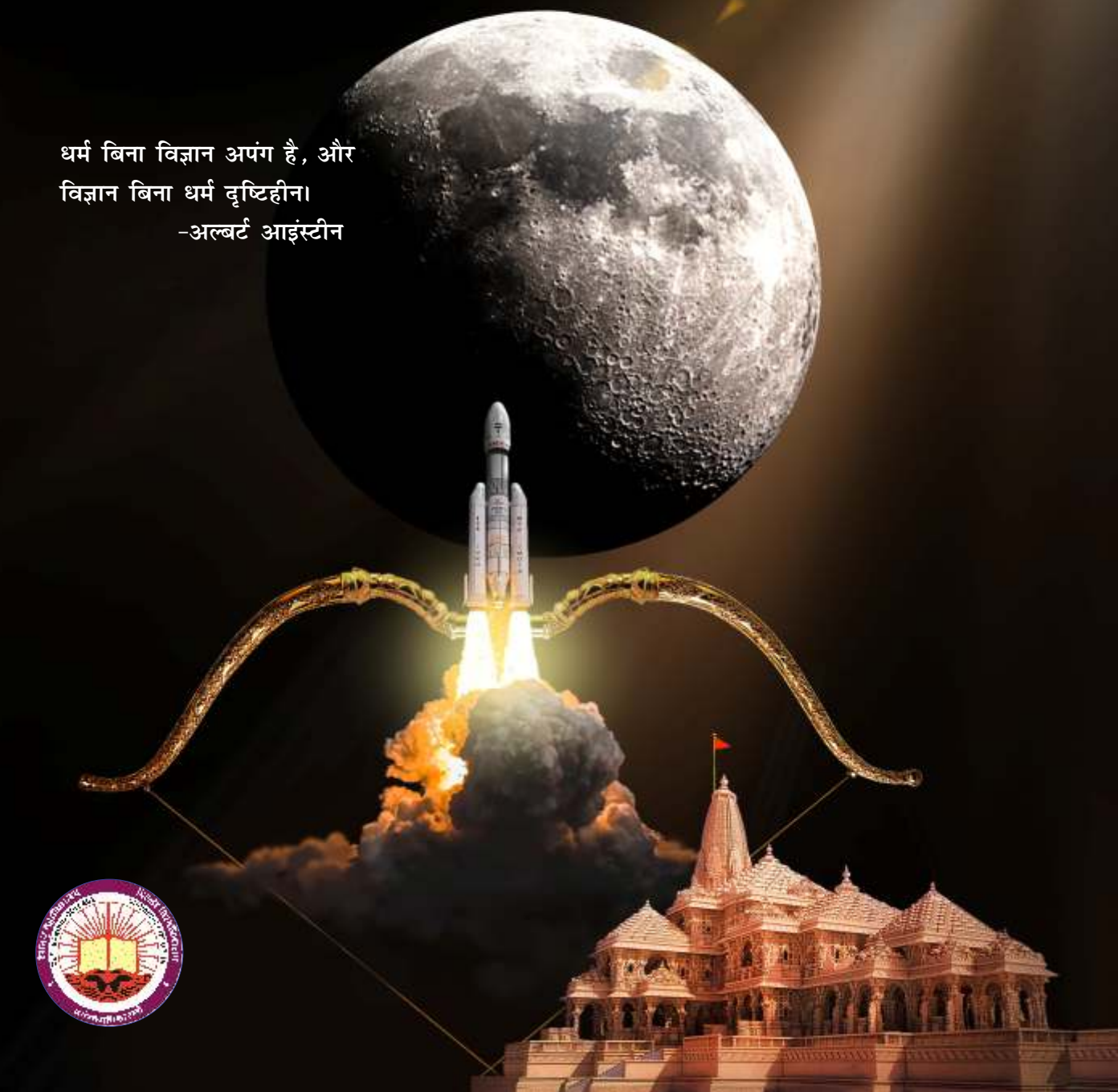

# संपादकीय बोर्ड

**बांए से दाएं** – आचार्य ललित मोहन (सिंधी), आचार्य छोटू राम मीणा (हिन्दी), डॉ. आशीष कुमार (संस्कृत), श्री शाश्वत भट्टाचार्य (अंग्रेजी), डॉ. मुकेश मिश्र (संस्कृत), डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी), आचार्या अंतरा चौधुरी (बांग्ला), डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा (सबसे पीछे– प्रधान संपादक)

# देश
# 2024–25

**संरक्षक**

**आचार्य राजेंद्र कुमार पाण्डेय**

**प्रधान संपादक**

**डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा**

| संपादक | विभाग | छात्र-संपादक |
|---|---|---|
| आचार्य छोटू राम मीणा | हिन्दी | अर्हत |
| शाश्वत भट्टाचार्य | अंग्रेजी | अंशुमान मिश्रा |
| डॉ. मुकेश मिश्र | संस्कृत | राघव झा |
| आचार्या अंतरा चौधुरी | बांग्ला | खुशबू कुमारी |
| डॉ. मुनीष कुमार | पंजाबी | पूजा चौहान |
| आचार्य ललित मोहन | सिंधी | वर्षा लुधवानी |

**'देश' पत्रिका अपने लेखकों के विचारों का आदर करती है। जरूरी नहीं कि वह उनसे सहमत हों।**

Statement Under Cause 19-D

Place of Publication : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi-110019.

Periodicity of Publication 01, Annual No. of Issue : 52

Printers Name : Parnasus Printers & Publishers

Nationality : Indian

Address : New Delhi-110014, Mobile : 9810054402

Publishers Name : Prof. Rajendra Kumar Pandey (Principal)

Nationality : Indian

Address : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi- 110019.

# प्राचार्य की ओर से...

मानव की सुखद यात्राओं का आरंभ चकमक से आग उत्पन्न करने के युग से शुरु होता है। चमत्कार ही धीरे-धीरे आविष्कार की श्रेणी बनाते चले गये। मनुष्य आत्मिक सुख के लिए नैतिक मूल्यों की ओर देखता रहा है। यही नैतिकताएँ धार्मिक आवरण में ढलती चली गई। विज्ञान जहाँ भौतिक रहस्यों का निदान करता रहा है, वहीं धर्म मानसिक रहस्यों को सुलझाता रहा है। कभी कभी दोनों पक्षों की भूमिका संदेह पूर्ण भी रही है। इसलिए 21वीं सदी में दोनों को तटस्थ होकर देखने समझने की ज़रुरत है। दोनों से बचकर आगे निकलने की जरूरत नहीं है।

हमारे महाविद्यालय की 'देश' पत्रिका भी इस तरह के मुद्दों को देखने समझने की एक दृष्टि देती है। अपने पाठकों के बीच इन दोनों पक्षों को नये संदर्भों में देखने की समझ देती है। पत्रिका का संपादन सामूहिक सहयोग की मांग के साथ ही सफल होता है। सामूहिकता किसी भी पत्रिका के संपादन की अनिवार्य शर्त है। जब कोई पत्रिका बहुभाषिकता के रूप में प्रकाशित होती है तब सहयोग की कसौटी ही उसको प्रकाशन तक पहुँचाती है। डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा के प्रधान संपादकत्व में निकलने वाला यह अंक बहुत से अर्थों में अपना संदेश पाठकों तक पहुँचाने में सफल होगा। संपादन सहयोग लिए मैं आचार्य छोटू राम मीणा, श्री शाश्वत भट्टाचार्य, डॉ. मुकेश मिश्र, डॉ. मुनीष कुमार, आचार्या अंतरा चौधुरी व आचार्य ललित मोहन का साधुवाद करता हूँ कि आप सबकी मेहनत से 'देश' पत्रिका का बहुत सुंदर अंक प्रकाशित हुआ। छः भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बांग्ला, सिंधी) के छात्र संपादकों को भी धन्यवाद देता हूँ। हमारी यह पत्रिका भारतीय भाषाओं के प्रति समान सम्मान की भावना को दर्शाती है। भाषाई सम्मान के कारण 'देश' पत्रिका हमारा गौरव है।

'देश' के इस अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

सुंदर व सुनहरे भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ।

**आचार्य राजेन्द्र कुमार पाण्डेय**
प्राचार्य, देशबंधु महाविद्यालय

# सेवानिवृत संकाय व गैरसंकाय सदस्य

प्रोफेसर सीमा नारायणन् (राजनीति शास्त्र)

डॉ शैलेन्द्र मोहन झा (इतिहास विभाग)

प्रोफेसर कामना सिंह (जैवरसायन विभाग)

श्री विनोद पंवार, प्रयोगशाला सहायक

श्री ए.पी. ध्यानी, प्रयोगशाला सहायक

श्री चंदन पटवाल, प्रयोगशाला सहायक

श्री राजबीर सिंह, कार्यालय परिचर

श्री रमेश सोलंकी, प्रयोगशाला सहायक

श्री रामनिवास, प्रयोगशाला सहायक

श्री जगबीर सिंह, प्रयोगशाला सहायक।

**देशबंधु महाविद्यालय परिवार आपके सफल, सुखद व स्वस्थ जीवन के साथ दीर्घायु होने की कामना करता है।**

# संपादकीय

21वीं सदी में ज्ञान-विज्ञान का विस्तार हुआ है। विज्ञान की सर्वसुलभता ने इंसान के जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंसान की कठिन परेशानियों को आसान बनाने में विज्ञान का अहम योगदान है। वैश्विक स्तर की परेशानियों से उबरने के लिए विज्ञान की ओर आशा भरी उम्मीदों से देखा जाता रहा है। भविष्य में भी दुनिया ऐसी अपेक्षाएं विज्ञान से करती रहेगी। स्थानीयता व वैश्विक नागरिकता के साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति निरंतर आगे बढ़ रही है। व्यक्ति के दुख-दर्द को देखने, समझने व उनको सुलझाने के लिए आध्यात्मिक पक्ष की बहुत महती ज़रुरत रही है। विज्ञान ने भौतिक सुख-सुविधाओं का रास्ता सौंपा है, तो आध्यात्मिकता ने व्यक्ति को मानसिक रूप से सम्पन्न बनाने का कार्य किया है। भौतिक उन्नति के बजाय भारतीय दर्शन आत्मा की उन्नति के लिए विख्यात रहा है। विज्ञान का धर्म व आध्यात्मिकता के साथ बहुत गहरा नाता रहा है। आध्यात्मिकता के अभाव में विज्ञान विनाश के रास्ते पर चल पड़ता है। ऐसे ही आध्यात्मिकता भी वैज्ञानिक मिज़ाज के बिना अंधविश्वास, कुरुतियाँ व पाखंड की भेंट चढ़ जाती है। इसलिए समाज में आध्यात्मिकता के साथ वैज्ञानिकता का संतुलन बराबर होना चाहिए। सूचना क्रांति के दौर में अंधविश्वास व पाखंड का बोलबाला होता हुआ सा दिखाई दे रहा है? यह समझने व चिंतन करने का विषय है। सूचना क्रांति के दौर में विज्ञान व धर्म का मानवीयता के संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन की ज़रूरत बनी हुई है।

'देश' पत्रिका का यह अंक अपने साथी संपादकों का आभार व्यक्त करता है। इस कार्य को पूरा करने के लिए आप सभी ने बिना किसी व्यवधान के महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके सहयोग के बिना देश के इस अंक की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रो. छोटू राम मीणा (हिंदी), श्री साश्वत भट्टाचार्य (अंग्रेजी), डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा (संस्कृत), डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी), प्रो. अंतरा चौधुरी (बांग्ला) व प्रो. ललित मोहन (सिंधी) के साथ-साथ सभी छः भाषाओं के छात्र संपादकों का सहयोग भी मिलने के परिणामस्वरूप यह कठिन कार्य आसान व सहज रूप से सफल हो पाया। इस अंक के प्रकाशक पारनासुस का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

प्राचार्य प्रोफेसर राजेंद्र कुमार पाण्डेय का हरसंभव सहयोग व समर्थन के कारण यह अंक प्रकाशित होकर आप सब पाठकों के बीच आ सका है। इस अंक के सुंदर आवरण चित्र के लिए प्रोफेसर अंतरा चौधुरी का बहुत बहुत आभार। आपके आवरण चित्र ने पत्रिका के आकर्षण में चार चांद लगा दिये। अंक के प्रधान सम्पादक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा ने संकलन, संयोजन व संपादन में अद्वितिय कार्य करके इसको अंतिम रूप दिया। इसके बावजूद भी उम्मीद करते है कि यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा। पाठकों को यह अंक सौंपते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

**प्रो. छोटू राम मीणा**

# CONGRATULATIONS

*Aman Raj – selected in Indian Military Academy*

*Aryan Tanwar – selected as a Pilot in the Indian Air Force*

# SABRANG

# SABRANG

# SABRANG

# SABRANG

# NCC ACTIVITY

# NCC ACTIVITY

देश

2024-25

# हिंदी विभाग

**संपादक : आचार्य छोटू राम मीणा**

**छात्र संपादक : अर्हत**

## विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| वाद-विवाद-संवाद | – आचार्य संजीव कुमार | 2-6 |
| तीर्थयात्राएं, दलित और अंबेडकर का दर्शन | – आचार्य छोटू राम मीणा | 7-9 |
| संघर्षशील निम्न वर्ग और समकालीन कहानियाँ | – डॉ. सीमा कुमारी | 10-14 |
| आधुनिक भारत के सामाजिक एवं आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा संत नारायण गुरु | – डॉ. नरेंद्र कुमार | 15-20 |
| समय | – हरप्रताप सिंह | 20 |
| हिन्दी पाठक, और उर्दू कविता की गुण विवेचना की समस्याएँ | – अर्हत मेश्राम | 21-23 |
| सच्चा मित्र | – महेश | 24 |
| चिड़िया | – पायल शर्मा | 24 |
| गजल | – अर्हत | 25-26 |
| गजल | – राहुल दीप | 27 |
| हमारी पहचान | – तोफीजा जमाल | 27 |
| सुख किसमें हैं? | – सुहानी पीजंजि | 28 |
| भूल जाती हूँ | – डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव | 28 |
| गलती | – श्रेया | 29 |
| झूठ-सच | – डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | 29 |
| कविता | – विपिन करनोजिया | 30 |
| कहाँ है पहलगाम | – दिविक रमेश | 31-32 |

# वाद–विवाद–संवाद

हिंदी के साहित्यिक हलके में गंभीर बहसों के दिन कब लदे और कब फेसबुकीय (गौर करें, यह फेसबुकिया के मुकाबले सम्मानजनक पद है) विवादों ने उनकी जगह ले ली, यह शोध का विषय है। किसी निश्चित दिन–महीने–साल तो ऐसा नहीं हुआ होगा, इसकी एक प्रक्रिया रही होगी, पर जान पड़ता है वह प्रक्रिया लगभग संपन्न हो चुकी है। समकालीन हिंदी आलोचना की कथित विपन्नता का स्यापा करनेवालों ने संजीदा बहसों के फेसबुकीय विवादों द्वारा प्रतिस्थापन पर गौर किया हो, ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है। अगर किया होता तो शायद उन्हें दोनों के बीच एक रिश्ता नजर आता। आलोचना के औजार बहसों की सान पर ही अपने को धार देते हैं। लेकिन वह तभी होता है जब बहसें तैयारी के साथ हों। फेसबुकीय विवाद उत्तेजना को सही दिशा में जोतने की नहीं, एक झटके में स्खलित कर की प्रणाली हैं और उनकी प्रकृति ही यथेष्ट तैयारी के खिलाफ है। अव्वल तो इसलिए कि वे तुरंत होती हैं और अविलंब प्रतिक्रिया देना वहाँ मैदान में बने रहने की शर्त होती है। दूसरे, उनमें जरूरी संदर्भों के साथ तर्क–प्रतितर्कों को जगह देनेवाला विस्तार नहीं होता। इस माध्यम का उपयोग करने वाले जानते हैं कि विस्तार पर कोई बंदिश भले न हो, विस्तार में जाना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। उसकी चादर जितनी भी बड़ी दिखे, पैर पूरे फैलाने पर आप मुँह की खाते हैं, क्योंकि आपका लक्ष्य–समूह उस फैलाव को देखकर मोबाईल के टच स्क्रीन पर एक बार अँगूठा घसीटता है और अगली पोस्ट पर पहुँच जाता है। लिहाजा, हाजिरजवाबी और वन पंच नॉक आउट वाली मानसिकता इस माध्यम में जारी बहसों के लिए सबसे मूल्यवान गुण हैं। ये 'गुण' आलोचना के विकास में कोई योगदान कर सकते हैं, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं।

हिंदी आलोचना के विकास पर गौर करें तो पाएँगे कि अगर वाद–विवाद न होते तो न हिंदी को रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्द दुलारे वाजपेयी, शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, विजयदेव नारायण साही, नामवर सिंह सरीखे आलोचक मिलते, न ही प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला, रांगेय राघव, जैनेन्द्र, अज्ञेय, मुक्तिबोध और नयी कविता – नयी कहानी के अनेक रचनाकारों का आलोचनात्मक लेखन मिलता। गोपाल प्रधान ने 1910–40 के छायावादयुगीन साहित्यिक वाद–विवादों पर जो शोधकार्य किया है, उससे पता चलता है कि उस दौर के जिन लेखों और ग्रंथों को हम स्थायी महत्त्व का मानते हैं, वे बहसों के बीच से ही निकले हैं। हममें से ज्यादातर लोग भले ही उन बहसों की शृंखला से अनभिज्ञ हों, वे आलोचनात्मक कृतियाँ उन्हीं शृंखलाओं की कड़ियाँ हैं। इसका बहुत दिलचस्प उदाहरण रामचन्द्र शुक्ल का 'कविता क्या है' शीर्षक निबंध है जिसका जिक्र गोपाल प्रधान के शोध–प्रबंध की शुरुआत में ही आया है। वहाँ चिंतामणि के तीसरे भाग की नामवर सिंह द्वारा लिखित भूमिका से एक लंबा उद्धरण देते हुए इस लेख की पृष्ठभूमि बतायी गई है। नामवर जी लिखते हैं:

> *शुक्ल जी के 'कविता क्या है' नामक लेख से पहले 'सरस्वती' में इस विषय पर अनेक*

*लेख प्रकाशित हो चुके थे। जून 1901 की 'सरस्वती' में 'कवि कर्तव्य' समझाने के बाद आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जुलाई 1907 में फिर 'कवि और कविता' नामक लेख लिखा। बीच की अवधि में राधाचारण गोस्वामी का 'कवि कल्पना' शीर्षक लेख निकला और चतुर्भुज औदीच्य का 'कवित्व'। इसके अलावा अलंकारवाद के समर्थन में एक लेख 'कवि और काव्य' शीर्षक भी छपा, लेकिन यह बात आचार्य द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' संभालने के पहले की है। शुक्ल जी का लेख जैसे इसका जवाब है, लेकिन जवाब भर नहीं। 'कविता क्या है' की पूर्णाहुति अलंकारवाद के खंडन से होती है और अलंकार चर्चा की शुरुआत इस प्रकार : "कई वर्ष हुए 'अलंकार प्रकाश' नामक पुस्तक के कर्त्ता का एक लेख 'सरस्वती' में निकला था। उसका नाम था- 'कवि और काव्य'। उसमें उन्होंने अलंकारों की प्रधानता स्थापित करते हुए और और उन्हें काव्य का सर्वस्व मानते हुए लिखा था कि आजकल के बहुत से विद्वानों का मत विदेशी भाषा के प्रभाव से काव्य के विषय में कुछ परिवर्तित देख पड़ता है। वे महाशय सर्वलोकमान्य साहित्यग्रंथों में विवेचन किये हुए व्यंग्य-अलंकारयुक्त काव्य को उत्कृष्ट न समझ केवल सृष्टि-वैचित्र्य-वर्णन में काव्य समझते हैं।'' शुक्ल जी का जवाब है : "इस विषय में पूर्वोक्त ग्रंथकार महोदय को एक बात कहनी थी, पर उन्होंने नहीं कही। वे कह सकते थे कि सृष्टि-वैचित्र्य-वर्णन भी तो स्वभावोक्ति अलंकार है । इसका उत्तर है कि स्वभावोक्ति को अलंकार मानना उचित नहीं। वह अलंकारों की श्रेणी में आ ही नहीं सकती।" 'कविता क्या है' नामक निबंध के वर्तमान संशोधित रूप से यह अंश निकाल दिया गया है, लेकिन विवाद के पूरे संदर्भ की जानकारी के लिए यह प्रासंगिक है।*

विवाद के संदर्भ की जानकारी देने के साथ नामवर जी ने विवाद के सार को इन शब्दों में स्पष्ट किया है:

> *विदेशी भाषा के प्रभाव से काव्य की जो 'परिवर्तित' दृष्टि 'सृष्टि-वैचित्र्य-वर्णन' की हिमायत कर रही थी, स्पष्टतः शुक्ल जी उसके पक्ष में थे। यह भी स्पष्ट है कि इस परिवर्तन से घबड़ाकर पुराने अलंकारवादी आत्मरक्षा में इस पक्ष पर आक्रमण कर रहे थे। इसलिए शुक्ल जी का लेख एक प्रकार का प्रत्याक्रमण है। उन्होंने इस लेख के बहाने सीधे उन सर्वलोकमान्य साहित्य ग्रंथों पर आक्रमण किया, जो निश्चय ही साहस की बात है। विषय स्वभावोक्ति के अलंकारत्व का है, पर चुनौती मम्मटाचार्य को दी गई। वस्तुतः स्वभावोक्ति को अलंकारों के संकुचित घेरे से निकालकर शुक्ल जी 'सृष्टि-वैचित्र्य-वर्णन' का स्वच्छंद पथ प्रशस्त कर रहे थे।*

यह लंबा उद्धरण सिर्फ इसलिए कि आलोचना के विकास में हम जिन लेखों को मील का पत्थर मानते हैं, उनके लिखे जाने की द्वन्द्वात्मक पृष्ठभूमि को न भूलें और उसके ओझल होने पर उसे

अस्तित्वहीन ही न मान लें। गोपाल प्रधान का प्रबंध 1910 से 40 तक की ऐसी पचासों बहसों के संदर्भ मुहैया कराता है।

दिलचस्प तरीके से, प्रधान की शोध – अवधि के बाद यानी 40 के दशक में वाद–विवादों का यह सिलसिला और सघन होता है जब प्रगतिशील आंदोलन के भीतर परंपरा के मूल्यांकन, भक्ति आंदोलन और भारतेन्दु युग के मूल्यांकन, साहित्य में यौन – नैतिकता और सेक्स चित्रण जैसे सवालों पर बहुत तीखी बहसें सामने आती हैं। उन बहसों पर थोड़ा बहुत इन पंक्तियों के लेखक ने भी लिखा है, पर उनके मुख्य बिंदुओं को इकट्ठा और व्यवस्थित रूप में देखने के लिहाज से रेखा अवस्थी की किताब प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य बहुत उपयोगी है, जिसमें 'प्रगतिशील समीक्षा' पर केंद्रित लगभग 20 पृष्ठों का पूरा अध्याय यही बताता है कि किस तरह "... हर विषय पर प्रगतिशील लेखकों के बीच दो धाराओं का संघर्ष भी है और एकता भी ।... दो धाराओं के संघर्ष और विशेष अवस्थाओं में उनकी एकता का वस्तुनिष्ठ ढंग से अध्ययन करने पर ही पता चलता है कि 'कुत्सित समाजशास्त्र', 'संकीर्णतावादी दृष्टिकोण', 'उदारतावाद', 'भाववादी चिंतन', 'बुर्जुआ वर्ग का साहित्यिक प्रवक्ता' आदि आरोप या गालियाँ विवाद के हथियार मात्र हैं।'' गरज कि इन आरोपों को ही असली विवाद समझने की गलती न करें; विवाद इन ऊपर उतराये हुए आरोपों /गालियों के मुकाबले अधिक गहरे और अर्थवान हैं।

तात्कालिक रूप से लाइनों की जीत और हार का फैसला लगभग हो चुके होने के बावजूद मार्क्सवादी धारा के भीतर विवाद खत्म नहीं हुए। उनमें पुराने मुद्दे तो बार–बार उठते ही रहे जिनमें हार–जीत के उन फैसलों को पलटा गया, नए मुद्दे भी शामिल होते रहे। अपनी पुस्तक हिंदी आलोचना में कैनन निर्माण की प्रक्रिया में युवा आलोचक मृत्युंजय का कहना बिल्कुल दुरुस्त है कि "यदि मार्क्सवादी आलोचकों की आपसी बहसों को निकाल दिया जाए तो किसी भी एक धारा के भीतर हिंदी साहित्य में बहस की कोई परंपरा दिखाई नहीं पड़ती। इसलिए आलोचना के मार्क्सवादी कैनन के बारे में बात करते समय यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इसका निर्माण मार्क्सवादी आलोचकों की तीखी बहसों के क्रम में हुआ है। इसीलिए इस कैनन की सर्वस्वीकार्यता के दावे सदैव गलत होंगे और ठीक इसीलिए ये कैनन सतत विकासमान होंगे।"

इस उद्धरण में 'भीतर' शब्द महत्त्वपूर्ण है। मृत्युंजय मार्क्सवादी धारा की तरह किसी भी अन्य धारा के 'भीतर' बहसों की उपस्थिति नहीं देखते, लेकिन इन धाराओं 'के बीच' की बहसों का तो लंबा इतिहास रहा है जिसे उनकी किताब बखूबी चिह्नित करती है।

यह अवसर सभी तरह की बहसों पर विहंगम दृष्टि डालने का नहीं है, इसलिए विस्तार में न जाते हुए इतना ही कि इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआती कुछ सालों तक हिंदी आलोचना में बहसों की यह परंपरा जीवंत दिखती है। हिंदी नवजागरण की थीसिस को ध्वस्त करती वीर भारत तलवार की रस्साकशी, कबीर संबंधी बहस को आगे बढ़ाते धर्मवीर और पुरुषोत्तम अग्रवाल के काम, दलित

प्रश्न पर चली बहसों में कँवल भारती और बजरंग बिहारी तिवारी जैसे आलोचकों के गंभीर हस्तक्षेप – ये बहुत पुरानी बातें नहीं हैं। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और दलित स्त्रीवाद ने इन्हीं वर्षों में हिंदी आलोचना के सामने कई असहज कर देनेवाले सवाल खड़े किए हैं।

लेकिन इन सबके बाद पिछले एक-डेढ़ दशक से, कुल मिलाकर, गतिरोध वाली स्थिति ही है। बहसें पत्रिकाओं से गायब हो रही हैं, भले ही सुलगाने – लहकाने की दावेदार कुछ पत्रिकाओं में बहस का प्रहसन जारी हो । हंस जैसी एक समय की संजीदा विवादप्रिय पत्रिका का 'बीच बहस में' स्तंभ अब संयोग से ही कभी नमूदार होता है। दसेक साल पहले तक विवाद के मद्दे उठाकर लेखकों को उकसाने और उनसे टिप्पणियाँ आमंत्रित करनेवाले जनसत्ता जैसे अखबार में इन दिनों रविवार को बीच के पन्नों पर क्या छापता है, यह साहित्यिक समाज को पता भी नहीं। वह साहित्यिक समाज या तो फेसबुक पर, उसी हाजिरजवाबी और वन पंच नॉक आउट वाली त्वरा के साथ, तुरंता टिप्पणियों में अपनी वैचारिक उत्तेजना को स्खलित कर रहा है, या फिर, उस समाज के जो सदस्य इस माध्यम से दूर हैं, वे अपने किसी वाद पर प्रतिवाद न पाकर खुद को और माँजने की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से वंचित, सुकून में एक किनारे पड़े हुए हैं। क्या यह अजीब नहीं है कि 2018 से आलोचना का संपादन करते हुए हमने ऐसे अनेक लेख छापे जिन पर बहस खड़ी होनी चाहिए थी और जो असल में किसी छूटी हुई बहस से ही संदर्भित थे, लेकिन हमें कोई जवाबी लेख नहीं मिला।

निस्संदेह, गंभीर बहसों के सिमटते जाने का ठीकरा अकेले सोशल मीडिया के सिर नहीं फोड़ा जाना चाहिए। इन पंक्तियों के लेखक ने ही अन्यत्र इस स्थिति का संबंध विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों से भी जोड़ा है जो आलोचना विधा की कोर कॉन्सटिचुएन्सी है और जहाँ ऐतिहासिक कारणों से बौद्धिक सरगर्मी शून्य डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुँच चुकी है। वहाँ रजाई-कंबल के भरोसे अपनी गर्मी का संरक्षण करने में लगे गिनती के पढ़े-लिखे लोग कितनी बहसें खड़ी कर पाएंगे!

ऐसे और भी कारण होंगे ही। युवा आलोचक वैभव सिंह को लगता है कि इसका संबंध लेखक संगठनों के नाकारा होते जाने से है, वे बहसें खड़ी नहीं कर रहे हैं। ऐसा उन्होंने पिछले साल राकेश बिहारी द्वारा संपादित वार्षिक संकलन पुस्तकनामा में संगठनों की स्थिति पर विचार करते हुए लिखा और अन्यत्र भी इस आशय की बातें दुहराई। यह बात बहुत आश्वस्त इसलिए नहीं करती कि बहसें खड़ी करना सिर्फ आज नहीं, कभी भी लेखक संगठनों का काम नहीं रहा। यह लेखकों का काम है। और लेखक एक ही संगठन से जुड़े होकर भी आपस में मतभेद रखते और बहसें करते हैं। पीछे प्रगतिशील लेखक संघ के भीतर की जिन बहसों का हवाला दिया गया, वे ऐसी ही थीं। अगर आप संगठनों से बहसें उठाने-चलाने की माँग करते हैं तो इसमें यह अपेक्षा निहित है कि ये संगठन सभी मुद्दों पर सर्वानुमति वाले समूह की तरह काम करें और इससे जुड़े लेखक आपसी जुगलबंदी के साथ किसी साहित्यिक बहस के पक्षकार बनें। इस तरह वे संगठन की तरह नहीं, गुट की तरह काम करें। क्या यह एक अच्छी स्थिति होगी? या कि वह

स्थिति बेहतर है जिसमें सामाजिक-राजनीतिक सरोकारों की बुनियादी एकता के आधार पर लेखक आपस में जुड़ते हैं, हस्तक्षेपकारी कार्यक्रमों को अंजाम देने में अपनी संगठन-शक्ति का उपयोग करते हैं, लेकिन इस जुड़ाव के कारण पढ़त-पद्धति, मूल्यांकन और निर्णय संबंधी अपने साहित्यिक मतभेदों का विसर्जन नहीं कर देते? कहने की जरूरत नहीं कि यह दूसरी स्थिति ही काम्य है। संगठनों द्वारा बहसें उठाए जाने का मतलब है कि वे बहसों के पक्षकार के तौर पर एक संसक्त गुट की तरह काम करें और यह कोई स्वस्थ स्थिति नहीं होगी। निस्संदेह, इसका मतलब यह नहीं है कि सामाजिक-राजनीतिक सरोकारों की बुनियादी एकता को छोड़ दें तो एक संगठन के सदस्यों के बीच साहित्यिक सवालों पर किसी भी स्तर की सर्वानुमति नहीं होती। इन पंक्तियों के लेखक ने ही अन्यत्र लिखा है:

> *समान सरोकारों वाले लोगों में उन्हीं सरोकारों से जुड़े साहित्य के प्रति एक व्यापक सहमति का होना तो किसी हद तक स्वाभाविक है, पर ऐसे सवालों को लेकर उनमें मतांतर भी हो सकते हैं/ होते हैं कि - (क) साहित्यिक गुणवत्ता के आकलन में सरोकारों को किस हद तक आधार बनाया जाए; (ख) कृति में सरोकारों की पढ़त किस तरह की जाए - कितने स्थूल या सूक्ष्म स्तर पर उनकी शिनाख्त की जाए और इस शिनाख्त के लिए क्या पढ़त-रणनीति अपनाई जाए: (ग) साहित्य में सामाजिक-राजनीतिक नजरिए के ढलने की शर्तें क्या होनी चाहिए; (घ) सोद्देश्यता के मायने क्या है; (च) हमारे समय के, और कुछ पहले के समय के भी, लेखकों की कृतियों के आकलन में उनके घोषित विचारों, राजनीतिक जुड़ावों और कुल मिलाकर उनके व्यक्तित्व को कितनी अहमियत दी जाए? आप किसी भी लेखक-संगठन से जुड़े लेखकों में इन सवालों पर मतांतर देख सकते हैं, उदाहरण देने की जरूरत नहीं। इस तरह के मतांतर की विशेषता होती है कि यहाँ विवाद के दोनों या तीनों पक्ष, सीधे-सीधे या निहित तौर पर, किसी एक सर्वानुमति प्राप्त सूत्र का हवाला दे रहे होते हैं और अपनी बात को उसकी सही व्याख्या या निष्पत्ति ठहरा रहे होते हैं।*

तो लब्बोलुआब यह कि बहसों के दिन लदने का कारण लेखक-संगठनों की निष्क्रियता में तलाशना गलत है। यह एक ऐसे काम के लिए संगठनों को कोसना है जो उनका काम है ही नहीं और होना भी नहीं चाहिए। यह लेखकों का काम है और सच है कि वे इन दिनों 'श्रमसाध्य' वाद-विवादों से दूर हटते जा रहे हैं। सोशल मीडिया उन्हें बहसों में शामिल होने की संतुष्टि तो दे सकता है, पर आलोचना की विधा को बहसों से मिलने वाले लाभ से वंचित रखता है। इसके साथ-साथ, श्रमसाध्य विवादों के दिन लदने के कारण ऐसा आलोचनात्मक लेखन भी चर्चा से बाहर, और इसीलिए व्यापक साहित्यिक समाज में अलक्षित, रह जाता है जिसमें उत्पादक बहसों की शुरुआत करने की संभावना निहित थी। यह भी एक वजह है कि आलोचना की विधा जितनी अशक्त हुई है, उससे कहीं ज्यादा उसकी अशक्तता की धारणा जोर पकड़ रही है।

**संजीव कुमार**

# तीर्थयात्राएं, दलित और अंबेडकर का दर्शन

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में चीन के वुहान शहर को कोविड-19 महामारी के जनक के रूप में पहचाना जाता रहेगा। वैश्वीकरण के दौर में जब इंसान अपनी ही महत्वकांक्षाओं के मकड़जाल में फंसता चला जा रहा है। कोरोना महामारी ने इंसान को बता दिया कि महामारी जब आती है तो वह बहुत भारी भेदभाव भी करती है। सेठ साहुकारों के लिए आपदाएँ लूटमारी के अवसर लेकर आती है। कमजोर, गरीब, दलित, मज़लूम, बच्चे, स्त्री के लिए संकट लेकर आती है। यह कहना चाहिए कि आपदा अवसर व मार दोनों लेकर आती है। कहीं वह चुनौती देती है। कहीं वह पक्ष लेती है। कमजोर के साथ दोगलापन व्यवहार करती है। सामान्य अवस्था के दिनों में भी आदिवासी, दलित और स्त्री आदि के पक्ष में समाज की मानसिक संरचना अलग ढंग की रहती है। सत्ता का व्यवहार जाति, वर्ग, क्षेत्र, धर्म-भाषा देखकर होता है। ऐसे समय में भीमराव अंबेड़कर को पढ़ने की जरुरत महसूस होती है। भारत में कोविड-19 महामारी के दौर में मजदूर, शोषित व वंचित के साथ गैर जिम्मेदार रहा। सत्ता ने नागरिकों के प्रति अमानवीय व्यवहार किया। विदेश में रहने वाले नागरिकों के लिए हवाई सुविधाऐं दी गई तो देश के विभिन्न नगरों में मजदूरी करने वाली जनता को जेठ की तपती गर्मी में परिवहन के साधनों से वंचित करके मरने के लिए छोड़ दिया गया। अपनी जिम्मेदारी से भागने वाला रहा। यात्राओं में दलित जीवन पर अंबेड़कर का दर्शन अलग दिखाई देता है। जिन बातों को समाज ने स्वीकार कर लिया उन बातों पर अंबेडकर का अलग दृष्टिकोण है। डॉ राममनोहर लोहिया ने समाजवादी आंदोलन में दलितों का मंदिर प्रवेश आंदोलन चलाया था। भारत के बड़े बड़े मंदिरों के दरवाजों पर शीलापट्ट लगाकर लिखा गया कि यहाँ दलितों का प्रवेश निषिद्ध है। मंदिर में दलित व्यक्ति का प्रवेश नहीं हो सकता है। आज इक्कीसवीं सदी में दलित व स्त्रियों के लिए दरवाजे बंद है। दलित पैसे से वैश्विक यात्रा पर जा सकता है पर अपने देश के मंदिरों में प्रवेश से वंचित है। यदि तीर्थयात्राओं के संदर्भ में इस बात समझने की कोशिश करें तो हमें भीमराव अंबेडकर के वाङमय में कुछ उदाहरण मिलते है। जातिय मानसिकता को बदलने की बात वे अपने लेखन में करते हैं।

समाज में शूद्रों की दयनीय स्थिति, उत्पीड़न, हिंसा, अस्पृश्यता जैसे व्यवहार से पीड़ित होने के कारण डॉ. भीमराव अंबेडकर ने विदेश से अनेक विषयों में उपाधि ग्रहण कर अपने देश में जब लौट आये तो अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। देश में दलितों को पीने के पानी, साफ हवा, स्वच्छ स्थान व संपत्ति के संग्रहण संबंधी अनेक बंधिशों के साथ सवर्ग समुदाय के व्यक्ति की बेगारी भी करनी पड़ती थी। इन्हीं कारण की पड़ताल करते हुए वे हिंदू धर्म के पौराणिक ग्रंथों के पास जाते हैं। मनुस्मृति दहन का ऐतिहासिक कदम उन्होंने उठाया। शोषण व अत्याचार का आधार होने के कारण वे अनेक पहलुओं की जाँच के साथ तथ्यो के साथ अंग्रेजी सरकार के सामने दलित जीवन की सच्चाई को रखकर एक नये नेतृत्व दलितों को प्रदान करते हैं। यात्रा संबंधी उनकी बातों को समझने के कुछ तथ्यों के उदाहरण से

तीर्थयात्राओं में दलितों के साथ किए जाने वाले व्यवहार को समझने की कोशिश की जाएगी।

"मराठा राज्य में पेशवाओं के शासन में यदि कोई हिंदू सड़क पर आ रहा होता था तो किसी अछूत को इसलिए उस सड़क पर चलने की अनुमति नहीं थी कि उसकी परछाई से वह हिंदू अपवित्र हो जाएगा। अछूत के लिए यह आवश्यक था कि वह अपनी कलाई या गर्दन में निशानी के तौर पर एक काला धागा बांधे, जिससे कि हिंदू गलती से उससे छूकर अपवित्र हो जाने से बच जाए। पेशवाओं की राजधानी पूना में किसी भी अछूत के लिए अपनी कमर में झाड़ू बाँधकर चलना आवश्यक था, जिससे कि उसके चलने से पीछे की धूल साफ होती रहे और ऐसा न हो कि कहीं उस रास्ते से चलने वाला कोई हिंदू उससे अपवित्र हो जाए"।(संपूर्ण वाङ्मय, खंड-1, पेज-56)

"एक बहुत ही नई घटना की सूचना जयपुर रियासत में चकवारा में मिली है। समाचार-पत्रों में छपी सूचना से पता चलता है कि चकवारा के एक अछूत ने जो तीर्थ-यात्रा के बाद घर लौटा था, अपने धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए गाँव के अपने अछूत भाइयों को भोज देने की व्यवस्था की थी। मेजबान की इच्छा थी कि मेहमानों को बहुमूल्य भोजन खिलाया जाए और घी से युक्त व्यंजन भी परोसे जाएं। किंतु जिस समय अछूत लोग भोजन कर रहे थे तो सैंकडों की संख्या में हिंदू लाठियाँ लेकर वहां दौड़े और भोजन को खराब कर दिया तथा अछूतों को बुरी तरह से पीटा। परोसे गए भोजन को छोड़, मेहमान अपनी जान बचाने के लिए भाग गए। नि:सहाय अछूतों पर ऐसा प्राणघातक आक्रमण क्यों किया गया? इसका जो कारण बताया गया है, वह यह था कि अछूत मेजबान इतना धृष्ट था कि उसने घी का प्रयोग किया और उसके अछूत मेहमान इतने मूर्ख थे कि वे उसे खा रहे थे। घी नि:संदेह अमीरों के लिए एक विलास की वस्तु है। किंतु कोई भी यह नहीं सोचेगा कि घी ऊंचे सामाजिक स्तर का प्रतीक है। चकवारा के हिंदुओं ने इसका दूसरा अर्थ लिया और उन अछूतों द्वारा उनके साथ की गई गलती के लिए हिंदुओं के धार्मिक क्रोध में उनसे बदला लिया, जिन्होंने अपने भोजन में घी परोसकर उनका अपमान किया था। उन्हें यह जानना चाहिए था कि वे हिंदुओं के सम्मान की बराबरी नहीं कर सकते। इसका यह अर्थ है कि किसी अछूत को घी का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा करना हिंदुओं के प्रति उद्दडता है। यह घटना पहली अप्रैल, 1936 की है"। (संपूर्ण वाङ्मय, खंड-1, पेज-58)

सार्वजनिक स्थान पर विचरण की स्थिति के संदर्भ में एक जगह वे लिखते हैं कि "मद्रास राज्य में पूरड वन्नन के बारे में कहा जाता है कि उन्हें दिन में विचरण करने की इजाजत नहीं होती क्योंकि उनका दर्शन भी अपवित्र माना जाता है। लोगों को रात्रि के समय कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता है। वे अंधेरा होने पर अपने घर से निकल सकते है और तब वापस लौटते हैं, जब बिज्जू रीझ के समान किसी भी प्राणी की झूठी आवाज सुनते है"। (संपूर्ण वाङ्मय, खंड-6, पेज-120)

"मेवाड़ में हरिजनों पर बहुत सारी बंदिशें लगी हुई हैं। वे मंदिरों में नहीं घुस सकते और न ही सार्वजनिक कुओं से पानी ले सकते हैं। वे मंदिरों में नहीं घुस सकते और न ही सार्वजनिक कुओं से पानी ले सकते हैं। त्यौहारों में और जूलूस में सवर्ण

हिंदुओं के साथ नहीं चल सकते। वे अपनी रथयात्रा या झाँकियाँ उन रास्तों से या उन दिनों नहीं निकालेंगे जब हिंदू निकालते हैं, वे गाँव से किसी सवारी पर सवार होकर नहीं गुजर सकते"।(संपूर्ण वाङ्मय, खंड-9, पेज-95)

"15 अगस्त, 1938 को रात के दस बजे इलाहाबाद जंक्शन के पास एक धर्मशाला में ठहरने के लिए गया, तो मुझे ठहरने में कोई परेशानी नहीं हुई। मैने बतौर पेशगी एक रुपया दिया, चारपाई ली और उस पर बिस्तर लगा दिया। लेकिन जब धर्मशाला में रहने वाले लोग मैनेजर के पास अपना पता लिखाने गए और जब मैंने अपना पता लिखाते समय अपनी जाति जाटव लिखी, तब मैनेजर आग-बबूला हो गया और उसने कहा कि यह धर्मशाला नीच जाति के लोगों के ठहरने के लिए नहीं है। उसने मुझे तुरंत धर्मशाला छोड़कर चले जाने को कहा। मैंने उससे कहा कि धर्मशाला के नियमों के मुताबिक यह धर्मशाला सिर्फ हिंदुओं के ठहरने के लिए है और किसी अस्पृश्य के ठहरने पर कोई पाबंदी नहीं है। मैंने यह भी कहा कि मैं फर्रुखाबाद का रहने वाला हूं और मैं इलाहाबाद में किसी को नहीं जानता हूं। मैं रात के ग्यारह बजे कहाँ जाऊँ। इस पर मैनेजर आपे से बाहर हो गया और उसने रामायण की यह चौपाई दोहराते हुए (ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब सकल ताड़न के अधिकारी) कहा कि एक नीच जाति का होने के बावजूद नियम-कानून की बात करने का दुस्साहस करता है। तेरी जब तक पिटाई न की जाएगी, तू बाहर नहीं जाएगा। तब एकाएक उसने मेरा बिस्तर और अन्य सामान उठाकर धर्मशाला से बाहर फेंक दिया। वहाँ खड़े सभी लोग मुझे पीटने के लिए तैयार हो गए। स्थिति की गंभीरता को समझकर मैंने तुरंत धर्मशाला छोड़ दी और मैं उसके सामने वाली एक दुकान से लगे तख्ते पर आकर लेट गया। मुझे उस दुकानदार को रात-भर के लिए किराए के रूप में दो आने देने पड़े। मैं अपने अनुसूचित जाति के भाईयों से अपील करता हूँ कि वे जगह-जगह मीटिंग करें और सरकार पर इस बात के लिए जोर डालें कि वह या तो हम लोगों के लिए अलग धर्मशाला बनवाए या सभी मौजूदा धर्मशालाएँ हम लोगों के लिए भी खोल दे"। (संपूर्ण वाङ्मय, खंड-9, पेज-80)

सवाल यह है कि भारत में लाखों दरिद्र अपनी कीमती व मामूली चीजों को भी गिरवी रखकर तीर्थयात्रा या कहें कि बनारस, मक्का मदीना क्यों जाते है? क्योंकि व्यक्ति के ऊपर धर्म सत्ता का राज होता है। जो पुण्य की गठरी में बंधकर सुख-दुख (स्वर्ग-नर्क) की आस बंधाता है। जीवन में गृहस्थ की चिंताओं से उबरने का स्वप्नलोक बनाता है। वहीं दूसरी तरफ धर्म सत्ता का भी स्तोत है।

"आगरा के एक चमार ने किसी ब्राह्मण को उसके घर में विष्णु की मूर्ति की पूजा करते हुए देख अपने घर में भी ऐसा ही किया। जब ब्राह्मण को इसका पता चला तो वह गुस्से से लाल-पीला हो उठा। उसने बहुत से गाँव वालों की सहायता से अभागे हरिजन को पकड़, उसकी जमकर पिटाई की और कहा, तुझे भगवान विष्णु की पूजा करने की हिम्मत कैसे हुई? इसके बाद उन्होंने उसके मुंह में कीचड़ भरकर छोड़ दिया। चमार ने हताश होकर हिंदू धर्म त्याग दिया और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया"। (संपूर्ण वाङ्मय खंड-9, पेज-66)

**डॉ. छोटू राम मीणा**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
देशबंधु कॉलेज, कालकाजी, नई दिल्ली-110019

# संघर्षशील निम्न वर्ग और समकालीन कहानियाँ

समकालीन कहानी का फलक बहुत व्यापक हैं। इसमें शोषित, पीड़ित, वंचित, गरीब, उपेक्षित, संघर्षशील वर्ग को पूरी जीवंतता के साथ उजागर किया गया है। समकालीन कहानिकारों ने जिस संघर्षरत निम्नवर्ग को अपनी कहानियों में स्थान दिया। वह अपनी आर्थिक, सामाजिक स्थिति के कारण सदैव शोषण, दमन, यातना का शिकार होता रहा है वह आज तक न तो सामाजिक सम्मान हासिल कर सका और न ही कोई विशेष उपलब्धि । निम्न वर्ग छोटी से छोटी चीजों के लिए संघर्ष करता है। आजादी से लेकर अब तक भी निम्न वर्ग की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नही हुआ है। आज भी उसे रोजी-रोटी के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है।

समकालीन कहानियों में निम्न वर्ग की उपस्थिति सर्वाधिक है कथाकार कहानी में निम्न वर्ग की स्थिति का चित्रण प्रत्यक्ष रूप से न कर उसकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति इस रूप में अभिव्यक्त करता है कि निम्न वर्ग अपनी भयावहता के साथ संपूर्णता में आंखों के सामने चलचित्र की तरह घूम जाता है। निम्न वर्ग जीवन भर शोषण की चक्की में पिसता है उसे अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए जीवन प्रयत्न संघर्ष करना पड़ता है। समकालीन कहानीकार सीधे-सीधे निम्न-वर्ग के जीवन में झाँकता है वह उनके लिए संवेदनशील है। निम्न वर्ग के लोगों के पास आय का कोई ठोस विकल्प नहीं होता है आर्थिक कमजोरी के कारण वो साधारण जीवन जीने के लिए बाध्य होता है। वे छोटे-मोटे पेशे या मजदूरी से अर्जित आय पर निर्भर होते हैं। उनकी आय इतनी कम होती है कि वो दिन-रात मेहनत करने के बाद भी दो वक्त की रोटी का जुगत नहीं कर पाते। यह वर्ग समाज में उपेक्षित रहता है और जीवन भर वह छोटी से छोटी जरूरत की चीजों को हासिल करने के लिए कठिन संघर्ष करने के लिए विवश रहता है। 'प्रेत मुक्ति' कहानी में संजीव लिखते है कि- ''अब चने फाँक-फाँककर, माड पी-पीकर दिन कटने लगे थे जगेसर के। बीमारियाँ आती, बिना दवा-दारु के, प्रतिरोध के निचोड़कर चली जाती। जगेसर फिर टहलने लगता अपनी हाफ पैंट और कमीज पहनकर। मौसम बदलते, लेकिन जगेसर के लिए दुनिया जस की तस पड़ी रहती। जगेसर ने अब यह सिद्धांत बना लिया था कि पूरी कमाई तो पूरा खाना, कमाई नही तो खाना नहीं।''[1]

निश्चित रूप से ग्रामीण वर्ग किसी तरह जोड़-जुगाड़ कर अपना जीवन यापन करते है। एक आम आदमी किसी तरह कच्चा घर बना लेता है तो अगली ही बारिश में वह घर गिर जाता है। अवधेश प्रतीत अपनी कहानी 'उफान' में लिखते है- ''गांव पहचान में नहीं आ रहा था। झोपड़िया वह गई थीं कच्ची दीवारें गिर चुकी थीं। घर के घर उजड़ चुके थे। सारे लोग माथे पर हाथ रख कर बैठ गए थे।... लोगों के पास रखा अपना सळा-चना भी खत्म हो चुका था। भूख के मारे सबका हाल खराब था। धीरे-धीरे बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था। सभी एक-दूसरे की तरफ असहाय भाव से देखते। माँएं बच्चों को छाती का दूध पिला-पिलाकर निचुड़ चुकी थीं। आखों में आंसू

और आँतों में ऐंठती हुई भूख का भयावह दौर शुरू हो गया था।''[2] संघर्षशील निम्न वर्ग इसी तरह भूखा रह-रहकर निराशा भरी जिन्दगी जी रहा है। शिवमूर्ति अपनी कहानी 'अकालदंड' में अकाल का चित्रण करते हुए लिखते है- ''खोराक खींचने से अभी भी पीछे हटने को तैयार नहीं लेकिन। दूर-दूर तक जहाँ तक दृष्टि जाती है, ऊपर नीला आसमान और नीचे तपते वीरान खेतों के बड़े-बड़े चक। बेवाई की तरह फटी हुई धरती। नंगे ठूठ पेड। पेड़ों के पत्ते सूखकर झड़ चुके है या मवेशियो के पेट में चले गए है। बकरे-बकरी लोगों के पेट में चले गए हैं और गाये भैंसे बिक चुकी हैं। लेकिन बांधकर रखें तो खिलाएं क्या? गले से 'पगहा' खोलकर हांक दे रहे हैं लोग-जाओं 'फिरी' कर दिया आज से। 'सुतंत्र हो। मरने के लिए सुतंत्र। नेह-नाता तोड़ो। चारे पानी की खोज करते मरो। लेकिन दूर जाकर। दुर्गंध से तो बचा दो गांव को। इन फिरी हुए जानवरों को बड़े-बड़े कोयों से आंसू बहाते देखा जा सकता है। मरने का इंतजार पेड़ के ठूंठ पर बैठे गिद्धों को कभी-कभी तीन-तीन चार-चार दिन करना पड़ जाता है।''[3] संघर्षशील निम्न वर्ग को आए दिन किसी-न-किसी रूप में प्राकृतिक आपदा से जूझना पड़ता है और उनका सारा जीवन लाचारी तथा बेबसी में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में गांव के पशु-पक्षियों की स्थिति भयावह हो जाती है।

समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में यह दिखाया है कि निम्नवर्ग की पारिवारिक आर्थिक स्थिति सही न होने पर बच्चों को भी मेहनत-मजदूरी के लिए बाध्य होना पड़ता है। देखा जाए तो उनके लिए न तो स्कूलों में सम्मानपूर्वक पढ़ने की व्यवस्था है और न ही उन्हें कोई बुनियादी सुविधा मुहैया करायी जाती है। अगर स्कूल है भी तो वह पढ़ने के स्थान पर किसी अन्य कार्य के लिए उपयोग किया जाता है। मधुकर सिंह ने 'माई' कहानी में लिखा है- ''गांव में एक प्राइमरी स्कूल था, जिसमें मुखिया का भूसा रहता था। दरअसल स्कूल की दीवारें बाढ़ और बरखा से खराब होकर ढह गयी थी। फिर भी छप्पर राम भरोसे लटका हुआ था। जो हर वक्त चूता रहता था। मुखिया ने एक काम यह किया कि बाँस की थुम्मी गाढ़कर छप्पर को किसी तरह टिकाए रखा था और ऊपर से पलाश और खर-पात बिछा दिया था। बरसात में तो एक तरह से स्कूल बन्द ही रहता। परन्तु रजिस्टर पर स्कूल खुला छोड़ दिया जाता था। अच्छे और सम्पन्न बाबुओं के लड़के दूसरी जगहों में पढ़ते-लिखते थे। इसलिए चिन्तित होने की कोई खास बात भी नहीं थी। गाँव के लड़कों को आवारागर्दी के लिए महज एक अड्डा था। बुरे कामों के लिए भी स्कूल का व्यवहार होता था।''[4] इस तरह निम्न वर्ग के बच्चे अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। परिणाम-स्वरूप उन्हें आजीवन दूसरों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। दूसरों पर आश्रित होना उसका स्वभाव या प्रकृति नही होती, बल्कि उसकी मजबूरी होती है। अरूण प्रकाश की कहानी 'भैया एक्सप्रेस' में लिखते है- ''दसवी का इम्तिहान खत्म होते ही माई पंजाब जाने-आने के लिए पैसे का इंतजाम करने लगी थी। गांव का कोई आदमी मार-काट की वजह से पंजाब जाकर उसके भैया विशुनदेव को ढूँढने को तैयार नहीं था कई लोगो से मिन्नत करने के बाद, माई रामदेव को ही पंजाब भेजने का तैयार हो गई पैसो की समस्या साँप की तरह फन काढ़े फुफकार रही थी। पुश्तैनी पेशा- अनाज भूनने

में क्या रखा है? कनसार में अनाज भुनवाने लोग आते नहीं। मकई की रोटी अशराफ लोग खाते नहीं। दाल इतनी मंहगी है कि लोग चने की दाल बनवाएंगे कि कनसार में चना भुनवाकर सळा बनवाएंगे? उस पर इतनी मेहनत-गांव के बगीचों, बंसवाड़ियों में सूखे पळो बटोरकर जमा करों, उन्हें जलाकर अनाज भूनकर पेट की आग ठंडी करो। किसी तरह एक शाम का भोजन जुट पाता। आखिर माई उपले थापकर, गुल बनाकर बेचने लगे थी। तब किसी तरह भोजन चलने लगा। लेकिन कोई काम आ पड़ता तो कर्ज लेने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता था।''[5] इस तरह से निम्न वर्ग तमाम मुसीबत-परेशानी उठाकर भी अपनी स्थिति सुधारने का संघर्ष करते है पर वास्तव में वह पहले की तुलना में कही ज्यादा मुश्किलो में उलझ जाते है।

समकालीन कहानीकारों ने निम्न वर्ग के यथार्थ स्थिति को बिना लाग-लपेट के अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। निम्न वर्ग धर्म की रूढ़ियों, रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ है। धर्म, ईश्वर के नाम पर किसान, मजदूर ठगे जाते है निम्नवर्ग की स्थिति सदैव संकटपूर्ण रहती है जब हालात और बुरे हो जाते है जब उच्च वर्ग उनके बाप-दादा का कर्जा जीवन भर बाप से लेता है और उसके मरने के बाद भी उनके परिवार को बंधुआ बना लेता है 'पुतला' कहानी इसका उदाहरण है उदय प्रकाश लिखते है- ''पंडित गयादीन चौधरी भजनलाल के जमाने की लाल रंग की टीप वही लेकर बैठे थे। उन्होंने किशनू के बाप ठूनू पासी के द्वारा लिये गये कर्ज का टीपना पढ़ा। किशनू ने कहा, 'लेकिन पंडित, मेरा बाप तो बाईस साल तक यही चौधरी की ड्योढ़ी पर खटते-खटते मर गया। पंडित गयादीन ने आँखे तरेरी और मय सूद के हिसाब लगाया तो सोलह सौ रुपये बैठे। किशनू की तबियत मिर्च हो गयी। उन्होंने ठूनू पासी का निशानी अँगूठा भी कागज पर लगा दिखाया। किशनू के भीतर एक अकबकाहट गुड़-गुड़ हो रही थी लेकिन इतने खूँखार गिद्ध लोगों के सामने कुछ कहते ही देह की खैर नहीं थी। चुप लगा गया।''[6] उच्च वर्ग इस तरह निम्न वर्ग का खूब शोषण करता है।

समकालीन कथाकारों ने शोषित वर्ग की निधनता, उसकी फटेहाल जिन्दगी, असुविधायें, तकलीफों को तो उभारा ही है साथ ही किसान को समकालीन व्यवस्था की मजबूरियों के कारण मजदूर बनने को विवश होते हुए दिखाया गया है। 'केक' कहानी में असगर वजाहत दिखातें है कि किसान अब बस सिर्फ सपने ही देखते है कि वो कभी किसान थे- ''नीचे सड़क पर बालू वाले ट्रक गुजर रहें है लदी हुई बालू के ऊपर मजदूर सो रहे है जो कभी-कभी किसान बन जाने का स्वप्न देख लेते हैं, अपने गाँव की बात करते हैं, अपने खेतों की बात करते है, जो कभी उनके थे।''[7] मजदूर चाहे जितनी भी मेहनत कर ले, उसे अपनी हालातों से जिन्दगी भर निजात नहीं मिलती है। यही उनकी सबसे बड़ी विंडबना है। वर्तमान कहानीकार व्यवस्था विरोधी स्वर की कहानियों की सर्जना में काफी सफल हुए है। साथ ही वर्ग शत्रुओं के शोषण के तमाम साधनों को बेनकाब करने में भी। इन कहानीकारों ने निम्न वर्ग की यथास्थिति के लिए वर्तमान व्यवस्था को ही जिम्मेदार ठहराया है।

वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था में ईमानदारी, मेहनती और सच्चे इन्सान की कोई कदर नहीं होती, ऐसे लोग मुश्किल से पेट भरते है। दरअसल निम्नवर्ग में कुछ जातियाँ ऐसी भी है जो अपना पेट भरने के लिए पशुओं की खाल उतरती है और उन पैसों से अपने परिवार का पालन-पोषण करते है। अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी 'खाल खींचने वाले' इसका सशक्त उदाहरण है- ''दोपहर होते-होते वह आध बैल को खलिया निकालने में सफल हो गया। लेकिन भूख से उसकी अंतड़ियां अब उलटने लगी थीं और खिचड़ी बालों से भरा हुआ उसका बूढ़ा चेहरा सूखे हुए कद्दू की तरह मुचमुचा गया था। मुनेसर का जोड़-जोड़ टूटने लगा था और जी हो रहा था कि एक बा रवह सुस्ता ले। लेकिन वक्त बहुत कम था अभी बैल को पलटना भी था दूसरी ओर खलियाने के लिए अत: रांपी उसने रख दी और बैल को उलटने की कोशिश में जुट गया। एक बार बैल की टांगों को उठाकर उसने चाहा कि लाश को एक झटके के साथ पलट दें, लेकिन क्षण-भर में ही उसे मालूम हो गया कि अब वह पट्ठा शरीर नहीं रहा। भुनेसर बुरी तरह हांफने लगा और सिर थामकर बैठ गया।''[8] इतना मेहनत करने के बाद भी उसे अपने काम का उचित मूल्य नहीं मिलता। वह सोचता है कि उसे इस खाल के पच्चीस रूपये तो मिल ही जाएगें जिससे वो फिर पाँच रूपये तो मालिक हक के दे देगा और बाकी बचे बीस रुपये में वो अपनी पत्नि बसंती के लिए घर का सामान लेकर जाऐगा। लेकिन भुनेसर का यह सपना जल्दी ही टूट जाता है। जब वो इस खाल को मंडी में बेचने जाता है तो मालिक सिर्फ इस पूरी खाल के पंद्रह रुपये देने के लिए मुनीम से कहता है और चला जाता था। भुनेसर पूरी कोशिश करता है बड़े मियां से बात करने की पर बड़े मिया के पीछे इतनी भीड़ थी कि वो उसकी बात ही नहीं सुनते और चले जाते हैं। निम्न वर्ग की सबसे बड़ी बिडम्बना है कि वो कठिन परिश्रम करने के बावजूद अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता। परिमाणत: वह अपनी मूलभूत आवश्कताएं पूरी नहीं कर पाता। वह सदैव जटिल परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ निम्न वर्ग की यथास्थिति बनाये रखते है।

निम्न वर्ग में संघर्ष करने का अदम्य साहस होता है। इसलिए वह आसानी से हार नहीं मानता है और जीवन के अंतिम समय तक संघर्ष करने के लिए तैयार रहता है। निम्नवर्ग अपने जीवन से कभी निराश नहीं होता, जीवन के प्रति सकारात्मक सोच बनाए रखता है। जातीय, क्षेत्रीय, धार्मिक और परम्परागत मूल्यों से संघर्ष जीवन प्रयत्न करता है। यह बात दीगर है कि निम्न वर्ग के जीवन का अधि काधिक समय संघर्ष में ही बीतता है। उन्हें इस बात का भी आभास है कि उनकी ऐसी स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है। साधन सम्पन्न वर्ग अपनी ताकत का गलत प्रयोग करके निम्न और वंचितों को दबा देते। 'मैगेयी पुष्पा' की 'छुटकारा' कहानी में ''ध न्नो डलिया-खपरा उठाए संडास कमाने चल दी। सबसे पहले डंबर प्रसाद की संकरी गैलरी का रास्ता लिया और पीछे की ओर से मैला सकेरने लगी। ऊपर की मंजिल वाले संडास में चढ़कर किसी ने हगा, गरम-गरम टट्टी छन्नों की बाँह पर गिरी। 'एड, तेरी कफन-काँटी कर लूँ, तेरी....। उसके मुँह से बेतहाशा गाली निकली। पंडितानी सामने आ गई। बोली, 'कफन-काँटी करना अपनी बेटी की'।''9

अपशब्द और अपमान झेलने पर भी उन्हे मल-मूत्र साफ करना ही पड़ता है क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प नहीं है। वे खुद को असहाय निहत्थे तथा बेबस मानकर अपनी ऐसी स्थिति को अपनी नियति मान बैठते हैं।

निम्न वर्ग की कहानियों में आदमी व्यवस्था से जूझता अधिकळार पाया गया है। आर्थिक विवशताओं से त्रस्त यह वर्ग कभी तो टूटता हुआ, कभी जूझता हुआ, कभी अपनी ही धुन में, मस्ती में झूमता हुआ, तो कभी चाहत पूरी न होने के कारण उद्विग्र व्यवस्था से समझौता कर लेता है तो कहीं उसके प्रति आक्रोश से भर उठता है। इस प्रकार विभिन्न रूपों में वह हमारे सामने आता है।

स्पष्ट है कि समकालीन कथाकारों ने संघर्षशील निम्न वर्ग के जीवन तथा उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक स्थिति का चित्रण बखूबी किया है। कहानीकारों ने अपनी-अपनी कहानियां में स्पष्ट दिखाया है कि निम्न वर्ग किन विषय परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करता है। वह प्रत्येक उस सुविधा से वंचित है जिसका वह सही मायनों में हकदार है। परन्तु वह अपनी बुनियादी जरूरतों को भी पूरा कर पाने में असमर्थ रहा। आजीविका के लिए दर-दर की ठोकरे खाना उसकी नियति बन गई।

**संदर्भ**


1. संजीव, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक-किताब घर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली- 110002, पृ. 47
2. अवधेश प्रीत, कोहरे में कंदील, प्रकाशक- अंतिका प्रकाशन, सी-56/यूजी एफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-2 गाजियाबाद-201005, पृ. 104
3. शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज,
4. मधुकर सिंह, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक-किताब घर, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, पृ. 93
5. अरूण प्रकाश, स्वप्न घर, प्रकाशक- पेगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि. 11 कम्युनिटी सेंटर पंचशील पार्क नई दिल्ली-110017 पृ. 30
6. उदय प्रकाश, दरियाई घोड़ा, प्रकाशक- वाणी प्रकाशन, 4695-21- दरियागंज पृ.77
7. असगर वजाहत, मैं हिन्दू हूँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली -110002 संस्करण-2007 पृ. 28
8. अब्दुल बिस्मिल्लाह, अतिथि देवो भव, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002 आवृळा-2007 पृ. 59
9. मैत्रेयी पुष्पा, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक- किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज पृ. 83


**डॉ. सीमा कुमारी**
हिंदी विभाग

# आधुनिक भारत के सामाजिक एवं आध्यात्मिक जागरण के पुरोध संत श्री नारायण गुरू

भारत में सामाजिक एवं आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा श्री नारायण गुरु का जन्म दक्षिण भारत के केरल में एक साधारण से परिवार में 1854 में हुआ था। हालाँकि भद्रा देवी का मंदिर उनके घर के बगल में था जिसकी वजह से एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक माहौल उन्हें बचपन में ही मिल गया था। नारायण गुरु को बचपन में 'नानू' नाम से पुकारा जाता था चूंकि नानू का जन्म अछूत परिवार में हुआ था अत: उसे अपने गुरु के घर के बाहर रहकर अध्ययन करना पड़ा। अपनी मेहनत और परिश्रम के बल पर नानू एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी सिद्ध हुआ और उसने अपने सभी साथियों से आगे निकलकर कम समय में शिक्षकों के सामने संस्कृत भाषा में अपनी विद्वता सिद्ध कर दी। संस्कृत में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् 1881 में नानू अत्यधिक बीमार पड़ गये और उसे वापस घर लौटना पड़ा। रोगमुक्त होने के बाद उन्होंने अपने पैतृक गांव में और आस-पास के क्षेत्रों में छोटे-छोटे विद्यालय खोलने का निर्णय लिया। यहीं से उन्होंने स्थानीय समाज के बालकों, विशेषकर पिछड़े वर्ग के बालकों में ज्ञान और शिक्षा का प्रसार आरम्भ किया। कम उम्र में ही घर का त्याग करके नानू आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में निकल गए। उन्होंने योग-शिक्षा ली, मारूतवमलै की गुफाओं में साधना की, कठोर अनुशासन का व्रत साधा। व्यक्तित्व के विकास और गुण-सम्पन्नता हेतु कर्म और गति का दौर शुरू हुआ।

वस्तुत: यह दौर उनके जीवन में कड़े मानसिक संघर्ष का दौर रहा। एक ओर तो उन्हें परिवार के भरण-पोषण की चिंता करनी थी तो दूसरी ओर उनके भीतर आध्यात्मिक उन्नयन और यथार्थ के अनुभव को पाने की तीव्र उत्कंठा हिलोरें मार रही थी। काफी समय बाद श्री नारायण गुरु लोगों के बीच लौटे। वे गांव-गांव घूमे, जो भोजन मिला, उसे खाया, समाज के अंतिम व्यक्ति के साथ रहे, पिछड़े और अछूत समझे जाने वाले वर्ग से घुले-मिले। सभी लोग उनसे प्रभावित हुए, उनके प्रति श्रद्धा जगी। उनके सब कामों पर उन्मुक्त आध्यात्मिक जीवन की तीव्र इच्छा की झलक दिखने लगी थी। नारायण गुरु के समय समाज वर्ण व्यवस्था और जाति के बंधनों में बुरी तरह जकड़ा हुआ था, ऐसे समय में पहली बार नारायण गुरु ने एक ऐसे मंदिर की स्थापना की जिसके द्वार सबके लिए खुले थे। दक्षिण केरल में नैयर नदी के किनारे एक जगह है अरुविप्पुरम। वह केरल का एक खास तीर्थ स्थान है। नारायण गुरु ने यहां एक मंदिर बनाया। एक नजर में वह मंदिर दूसरे मंदिरों जैसा ही लगता था। लेकिन एक समय में उस मंदिर ने इतिहास रचा था।

अरुविप्पुरम का मंदिर इस देश का शायद पहला मंदिर रहा है, उस समय जहां बिना किसी जातिभेद के कोई भी पूजा कर सकता था। जाति के बंधनों में जकड़े समाज ने इस पर बड़ा हंगामा खड़ा किया। वहां के ब्राह्माणों ने उसे महापाप करार

दिया था। हालाँकि इसकी प्रतिक्रिया में नारायण गुरु ने कहा था – ईश्वर न तो पुजारी है और न ही किसान। वह सबमें है। नारायण गुरु मूर्तिपूजा के विरोधी नहीं थे। लेकिन वह ऐसे मंदिर बनाना चाहते थे, जहां कोई मूर्ति ही न हो। वह राजा राममोहन राय की तरह मूर्तिपूजा का विरोध नहीं कर रहे थे। वह तो अपने ईश्वर को आम आदमी से जोड़ना चाह रहे थे। आम आदमी को बिना भेदभाव के वे एक ईश्वर देना चाहते थे। श्री नारायण गुरु ने महसूस किया कि उस समय तथाकथित नीची जातियों में हीन भावना बहुत अधिक है, सैकडों वर्षों के शोषण ने उन्हें तोडकर उनका आत्मविश्वास शून्य कर दिया है, शिक्षा का अभाव है, उनके पास अच्छे रोजगारों के अवसर नहीं के बराबर हैं, आर्थिक विपन्नता और अपने ऊपर थोपे गये अमानवीय सामाजिक नियमों के कारण वे गंदे ढंग से रहने-जीने और खाने के आदी हो गये हैं और इसे ही वे अपनी नियति मानते हैं। सभी अधिकारों से वंचित इनकी व्यथा और पीडा को उन्होंने गहराई से महसूस किया। उनका कहना था कि छीनकर लिये गये अधिकार स्थाई नहीं होते, बल्कि दूसरी समस्याओं को जन्म देते हैं। लोगों ने शिकायत की कि उनके बच्चों को स्कूलों में नहीं जाने दिया जाता, उन्होंने कहा कि अपने बच्चों के लिये स्कूल स्वयं बनायें और उन्हें इतनी अच्छी तरह चलाओ कि वे भी तुम्हारे स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने को इच्छुक हो जाएं। लोगों ने कहा कि उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता, उन्होंने कहा कि न तो जबर्दस्ती प्रवेश करने की जरूरत है और न प्रवेश की अनुमति के लिये गिडगिडाने की आवश्यकता है, अपना मंदिर स्वयं बना लो. और आखिरकार इस तरह के मंदिर बन गए। मंदिर परम्परा से एकदम अलग थे, एक मंदिर में उन्होंने एक शीशा और दूसरे में दीपक स्थापित कर कहा कि इनकी ही पूजा करो क्योंकि भगवान तो कण-कण में विद्यमान हैं। उन्होंने सनातन धर्म के दायरे में रहते हुए ही समस्त मानवता के लिये 'एक जाति, एक धर्म और एक भगवान' का सिद्धांत प्रतिपादित किया। श्री नारायण गुरु ने  नीची समझी जाने वाली जातियों के बच्चों को शिक्षित किया ताकि बड़े होकर वे मंदिरों में अच्छे पुजारी बनें। उन्होंने शिक्षा पर विशेष जोर दिया ताकि ये लोग हीन भावना से ऊपर उठकर अपना जीवन स्तर सुधार सकें, आर्थिक रूप से सबल बनकर सिर उठाकर चल सकें।

दरअसल वह एक ऐसे धर्म की खोज में थे, जहां आम से आम आदमी भी जुड़ाव महसूस कर सके। वह नीची जातियों और जाति से बाहर लोगों को स्वाभिमान से जीते देखना चाहते थे। उस समय केरल में लोग ढेरों देवी-देवताओं की पूजा करते थे। निम्न जाति के लोगों के अपने-अपने आदिम देवता थे। ऊंची जाति के लोग उन्हें नफरत से देखते थे। नारायण गुरु ने उन्हें ऐसे देवी-देवताओं की पूजा के लिए लोगों को निरुत्साहित किया जिसमे ऊंच नीच का भाव हो। उसकी जगह नारायण गुरु ने कहा था कि 'सभी मनुष्यों के लिए एक ही जाति, एक धर्म और एक ईश्वर होना चाहिए'। नारायण गुरु एक ऐसा मंदिर बनाना चाहते थे, जिसमें किसी किस्म का कोई भेदभाव न हो। न धर्म का, न जाति का और न ही आदमी और औरत का। उसी दौर

में महात्मा गांधी समाज में दूसरे स्तर पर छुआछूत मिटाने की कोशिश कर रहे थे। वह एक बार नारायण गुरु से मिले भी थे। गुरुजी ने उन्हें आम जन की सेवा के लिए सराहा भी था। नारायण गुरु ने ही गांधीजी से कहा था कि अपने अखबार 'नवजीवन' का नाम बदल कर वे 'हरिजन' कर लें। गांधीजी ने उसी समय उनकी बात मान ली थी। दलितों के लिए 'हरिजन' तभी से कहा जाने लगा। कुछ दशक पूर्व केरल की हरी-भरी धरती सामाजिक और आर्थिक विषमताओं का एक जीता-जागता उदाहरण थी। स्वामी विवेकानंद ने तो इसे एक 'पागलखाने' की संज्ञा दे डाली थी। एक तिहाई से ज्यादा आबादी अछूत मानी जाती थी और उनके लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों के दरवाजे बंद थे। वे न केवल सरकारी नौकरियों से बाहर रखे जाते थे, बल्कि हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा करने, मंदिर जाने तक पर पाबंदी थी।

आज भारत में केरल का नाम शिक्षा और समृद्धि में सबसे ऊपर आता है इसके पीछे नारायण गुरु का बहुत बड़ा योगदान रहा है। नारायण गुरु से पहले केरल ने कई शताब्दियों तक वर्ग व्यवस्था के क्रूरतम रूप को झेला था। यह वर्ग व्यवस्था कभी-कभी इतनी क्रूर हो जाती थी कि निम्न वर्ग के लोगों को न केवल अछूत माना जाता था बल्कि उन्हें लोगों की नजरों से भी दूर रखा जाता था। नीची जातिवालों के लिये मंदिर, विद्यालय और सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश वर्जित था, कूओं का इस्तेमाल वे कर नहीं सकते थे। नीची जाति के मर्द और औरतों के लिये कमर से ऊपर कपडे पहनना एक बडा गुनाह था। गहने पहनने का तो सवाल ही नही था। इन्हें अछूत तो समझा जाता ही था। उनकी परछाइयों से भी लोग दूर रहते थे। बडे लोगों से कितनी दूर खडे होना है वह दूरी भी जातियों के आधार पर निर्धारित थी - 5फुट से 30 फुट तक। कुछ जातियों के लोगों को तो देख भर लेने से छूत लग जाती थी- वे लोग चलते समय जोर-जोर से चिल्लाते जाते थे - 'मेरे मालिकों, मै इधर ही आ रहा हूँ, कृपया अपनी नजरें घुमा लें' विडंबना तो थी कि निम्न जातियाँ भी आपस में एक दूसरे को छोटा बड़ा समझती थीं और अपने से छोटी जातियों पर ब्राह्मणों से भी अधिक अत्याचार करती थीं। नीची जातियों के लोग अपने बच्चों के सुन्दर और सार्थक नाम भी नहीं रख सकते थे, नाम ऐसे होने चाहिये जिनसे दासता और हीनता का बोध हो। ऐसे किसी भी सामाजिक नियम का उल्लंघन करने पर मौत की सजा निर्धारित थी, भले ही उल्लंघन गलती से हो गया हो।

ऐसे समय में नारायण गुरु ने केरल में एक बड़ा सामाजिक परिवर्तन कर दिखाया इन्होने समाज को एक जुट कर सामाजिक और आध्यात्मिक जागरण के क्षेत्र में युगांतकारी कदम उठाये इसी में एक कदम था केरल का 'वैकम सत्याग्रह' इस आंदोलन के तहत उन लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर लाने की मांग की जिन्हें समाज में उच्च वर्ग के लोगों के सामने आने की अनुमति नहीं थी और खासतौर से वैकम के मंदिरों में। पिछड़ी सोच के लोगों ने इसका घोर विरोध किया। मंदिर के अंदर ब्राह्मणों का भोजन करना ईश्वर की आराधना का प्रमुख हिस्सा माना जाता था जो लोग इस आंदोलन के खिलाफ थे उन्होंने इस विधि का समर्थन किया।

इसके बारे में दलील दी गई कि यदि अवर्णों, अछूतों को सड़कों पर या फिर मंदिर में आने की अनुमति दी जाएगी तो ईश्वर अपवित्र हो जाएंगे। अग्रणी समुदायों में कुछ ने इस मामले को निपटाने के लिए सत्याग्रह का रास्ता अपनाया तो बड़ी संख्या में जिसमें नायरों के अलावा हिंदुओं की कई जातियों के लोग शामिल थे। इसके कुछ समय बाद ही महात्मा गांधी ने मीनम 1100 में (1924) वैकम का दौरा किया और यहां कई अंधविश्वासी ब्राह्मणों तथा अन्य से बातचीत की जिसमें इस आंदोलन का कारण सामाजिक अन्याय को खत्म करने और मानवता के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रेरित करने की बात की गई थी और सरकार ने मंदिर वाली सड़क अवर्णों अछूतों के लिए खोल दी। गांधी ने इसे 'बेड रॉक फ्रीडम' की संज्ञा दी थी, उनका कहना था कि यह लोगों के साथ बातचीत के आधार पर राज्य सरकार आजादी की दिशा में लिया गया एक बड़ा कदम है। बुद्धिजीवी और पर्यवेक्षकों की राय में केरल में यह बदलाव भारत के अनूठे सुधारवादी संत-महात्माओं में श्री नारायण गुरु के कारण हुआ है। श्री नारायण गुरु ने जमीनी स्तर पर सामाजिक व धार्मिक सुधार किए और केरल में ठोस तथा रचनात्मक सामाजिक सुधार लाने में सफल भी रहे। सामाजिक जड़ता के दौर में उन्होंने अद्वैत सिद्धान्त का प्रसार किया और 'भगवान के लिए सभी जन बराबर हैंश, का सूत्र गुंजाया।

गुरु नारायण के तरीकों ने लोगों में पश्चिमी शिक्षा के प्रचार को एक नई गति प्रदान की राज्य द्वारा शुरू की गई सहिष्णु योजना के तहत पिछड़े वर्ग की मांगों को पूरा करने का प्रयास किया। मंदिर में प्रवेश की घोषणा का लाखों त्रावणकोर निवासियों के लिए ही फायदेमंद नहीं रही बल्कि पूरे भारत पर इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा और उम्मीद की एक नई किरण नजर आई। मंदिर में प्रवेश की घोषणा कुछ प्रकार से थी- 'अपने धर्म की सच्चाई और विश्वसनीयता से पूर्णतया इस बात पर विश्वास किया जा सकता है कि यह दिव्य मागर्दशन और सभी सम्मिलित सहिष्णुता के आधार पर यह समझा जा रहा है कि यह परंपरा आने वाली सदियों तक चलती रहेगी, इसे बदलते समय की जरूरत के अनुसार अपनाया जा रहा है, यह बात ध्यान देने योग्य है कि कोई भी हिंदू विषय जिसका जन्म वर्ग या समुदाय के कारण हुआ है वह हिंदू विश्वास की दया और सांत्वना नहीं है'। इसके अलावा भी उन्होंने कई और तरीकों का सुझाव दिया जिसके द्वारा परंपराओं की कठोरता मंदिर में अछूतों के लिए लचीले हो सकें। गांधीजी ने इसके प्रति उम्मीद जताते हुए कहा कि आशा है कि इस राज्य की तरह ही अन्य राज्य भी इसे अपना कर एक उदाहरण पेश करेंगे। मद्रास के प्रधानमंत्री ने इस घोषणा की चर्चा करते हुए कहा कि अशोक के बाद भारत में यह सबसे बड़ा धार्मिक सुधार है।

समाज कार्य में सबसे पहले श्री नारायण गुरु ने तिरुअनंतपुरम से 20 कि.मी. दक्षिण में आरूविपुरम में नेय्यार नदी के तट पर 1888 में शिव मंदिर की स्थापना की और इस मान्यता को ठुकरा दिया कि केवल एक ब्राह्मण ही पुजारी हो सकता है। हिन्दू मंदिरों में जिनका प्रवेश वर्जित था,

वे इस मंदिर में निर्बाध आ सकते थे। मंदिर के ही निकट उन्होंने एक आश्रम बनाया तथा एक संगठन बनाकर मंदिर-संपदा और श्रद्धालुओं के कल्याण की व्यवस्था की। यही संगठन बाद में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् (एस.एन.डी.पी.) के नाम से जाना गया, जो श्री नारायण धर्म का प्रसार करने लगा।

1904 में श्री गुरु ने क्विलोन (आज कोझीकोड) के एक तटीय उपनगर वर्कला में एक शांत, सुरम्य पर्वतीय स्थल शिवगिरि में अपनी सार्वजनिक गतिविधियां केन्द्रित कीं। 1928 में अपनी महासमाधि तक श्री गुरु ने यहीं रहकर साधना की थी। शिवगिरि में श्री गुरु ने दो मंदिरों और एक मठ की स्थापना की। शिवगिरि आकर ही श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी ने श्री नारायण गुरु के दर्शन किए थे। 1920 में त्रिशूर में उनके द्वारा स्थापित कारामुक्कू मंदिर में किसी देवता की प्रतिमा नहीं बल्कि एक दीपक स्थापित किया गया था, जिसका संदेश था-चहुंओर प्रकाश ही प्रकाश हो। 1922 में मुरुक्कुमपुझा में बनाए गए मंदिर में देव प्रतिमा की जगह 'सत्य, धर्म, प्रेम, दया' लिखवाया गया था। 1924 में उनके द्वारा स्थापित अंतिम मंदिर कलवनकोड मंदिर में उन्होंने गर्भ गृह में एक दर्पण लगवाया। समाज सुधार के क्षेत्र में 100 से अधिक मंदिरों से उन्होंने मदिरा एवं पशु-पक्षी बलि से जुड़े देवताओं की मूर्तियां हटवा कर शिव, गणेश और सुब्रह्मण्यम की मूर्तियां स्थापित कीं। उन्होंने नये मंदिर भी बनवाये, जो उद्यान, विद्यालय एवं पुस्तकालय युक्त होते थे। उस समय चौंकाने वाली बात ये थी कि इनके द्वारा बनवाये मंदिरों में पुजारी तथाकथित छोटी जातियों के होते थे। मंदिर की आय का उपयोग विद्यालयों में होता था। दिन भर काम में व्यस्त रहने वालों के लिए रात्रि पाठशालाएं खोली गयीं। अनेक तीर्थों में अनुष्ठानों की उचित व्यवस्था कर पंडों द्वारा की जाने वाली ठगाई को बंद किया। स्वामी जी ने सहभोज, अंतरजातीय विवाह तथा कर्मकांड रहित सस्ते विवाहों का प्रचलन किया। बाल विवाह तथा वयस्क होने पर कन्या के पिता द्वारा दिये जाने वाले भोज को बंद कराया। उन्होंने अपने विचारों के प्रसार हेतु 'विवेक उदयम्' पत्रिका प्रारम्भ की। 20 सितम्बर, 1928 को एकात्मता के इस पुजारी का देहांत हुआ। केरल में उनके द्वारा स्थापित मंदिर, आश्रम तथा संस्थाएं आज भी समाज सुधार के उनके काम को आगे बढ़ा रही हैं। श्री नारायण गुरु स्वामी जैसे भारतीय संतों ने एक जात, एक धर्म और एक ईश्वर का मंत्र देकर विश्व को प्राकृतिक तथा मानव सृजित समस्या से बचने का मार्ग दिखाया है। श्री नारायण स्वामी के जीवन आदर्शों से प्रेरणा लेकर नारी सशक्तिकरण और युवाओं के कौशल विकास के लिए अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं, वास्तव में भारतीय संस्कृति से जुड़े संत-महंतों की संत-शक्ति ने भारत को गुलामी से मुक्त कराने के लिए आजादी के आंदोलन का आधार संत आंदोलन के जरिए खड़ा किया, नतीजतन समग्र समाज में सामाजिक एकता और जागरण का वातावरण निर्मित हुआ है। श्री नारायण स्वामी ने दलितों, शोषितों एवं वंचितों के विकास, नारी सशक्तिकरण एवं युवाओं के कौशल विकास के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व

शिक्षा एवं संस्कार का समाज जागृति एवं समाज सुधार का जो अभियान छेड़ा था उसमें आध्यात्मिकता का अद्‌भुत समन्वय रहा है। मंदिरों को उन्होंने सामाजिक चेतना का केन्द्र बनाया था और शिक्षा के लिए विद्या मंदिर बनाये। अंग्रेजों के खिलाफ उन्हीं की भाषा में टक्कर लेकर उन्होंने भारत माता को आजाद कराने के लिए अंग्रेजी शिक्षा की सुविधा हेतु साहसिक कदम उठाए।

नारायण गुरु ने हमेशा अपने अनुयायियों को यही शिक्षा दी कि 'शिक्षा के माध्यम से जानकार और जागरूक बनो, संगठित होकर मजबूत बनो और कठिन परिश्रम से समृद्धि प्राप्त करो' सामाजिक प्रगति के लिए श्री नारायण गुरु ने तीन उपाय सुझाए थे – संगठन, शिक्षा और औद्योगिक विकास। आज केरल में दिख रहा सामाजिक–आर्थिक–शैक्षणिक विकास का श्रेय श्री नारायण गुरु और उनके द्वारा स्थापित श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् संस्था को जाता है। वास्तव में सही मायने श्री नारायण गुरु आधुनिक भारत के सामाजिक और आध्यात्मिक जागरण के अग्रदूत थे उनके अनुसार कमजोर और गरीबों की सेवा तथा मानवता का कल्याण ही सच्चा अध्यात्म है। उनके विचार – संगठन, शिक्षा और औद्योगिक विकास के सिद्धांत को आज समाज के सभी धर्मों और संस्कृतियों के लोगों अपनाया और उससे प्रेरणा ली है।

**नरेंद्र कुमार 'भारती'**

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर हैं दलित और आदिवासी मुद्दों पर लगातार लिखते रहते हैं)

# समय

अच्छा हो तो टिकता नहीं,
बुरा हो तो कटता नहीं,
मैं हूँ और नहीं भी हूँ,
समय हूँ मैं दिखता नहीं !!

समझ सको, तो विज्ञान हूँ
भेद जान लो, तो सर्व–ज्ञान हूँ
हूँ तुच्छ भी , अमूल्य भी
सर्जन हूँ, अंत का आह्वान भी !!

समझने में निकल जाऊँगा,
फिर लौट कर ना आऊँगा,
कोशिशें कर के देख लो,
मैं क्षण भर में बदल जाऊँगा !!

मैं क़ैद हूँ, आज़ाद भी
जीत हूँ, किसी की मात भी
मैं कल भी था, और कल भी हूँ
मैं दिन हूँ, मैं ही रात भी !!

जो सार मेरा पा सको,
जो मुझको वश में ला सको,
मैं भेद हूँ, एक अभेद सा
मुट्ठी में सिमटी रेत सा !!

जो भेद मेरा पा सको,
समझ में मैं आ जाऊँगा,
जो हुई मेरी अवहेलना,
समय हूँ मैं खा जाऊँगा !!

**Harpratap Singh** (P&S Bank)

# हिन्दी पाठक, और उर्दू कविता की गुण विवेचना की समस्याएँ

उर्दू काव्य का अलंकृत रूप हिन्दी समेत अन्य भारतीय भाषाओं के पाठकों के लिए एक आकर्षण का कारण बना रहता है। किंतु हिंदी के आम पाठकों की उर्दू कविता के संदर्भ में जानकारी सीमित होती है, जिसके कारण वह उर्दू कविता की उसके विस्तृत अर्थ में विवेचना करने में असमर्थ होते हैं। उर्दू कविता पढ़ते हुए हिंदी के पाठकों को प्रायः कुछ समस्याओं का आभास होता है। इस लेख में मैं इन्हीं बाधाओं को लिपिबद्ध) करने का प्रयत्न करूँगा। एवं मेरे उर्दू कविता को समझने के प्रयत्न में जो बातें, साधान उपयोगी रहे हैं उन्हें भी चिन्हित करने की कोशिश करूँगा।

## 1. लिपि की समस्या

उर्दू कविता पढ़ने में हिंदी पाठकों के लिए लिपि की समस्या प्रमुख है यह कहना आज से 5–10 वर्ष पूर्व तो संभवतः उचित होता, किंतु आज यह कहना अनुचित होगा। आज कम से कम इतना उर्दू साहित्य देवनागरी लिपि में तो उपलब्ध है जो हिन्दी के पाठकों को उर्दू कविता की गुण विवेचना करने में समर्थ बनाने के लिए पर्याप्त है। लिपि से संबंधित नई समस्या यह है की इस देवनागरी में प्रकाशित हो चुके साहित्य तक पहुँच कैसे हो?

उर्दू कविता के ''क्लासिकी'' ग्रंथ जैसे दीवान-ए-ग़ालिब एवं दीवान-ए-मीर, जो उर्दू कविता के बुनियादी ग्रंथ हैं, का देवनागरी में लिपियान्तरण तो बहुत पहले हो चुका है। पिछले 5–10 वर्षों में नए प्रकाशनगृहों ने उर्दू के आधुनिक प्रतिनिधि कवियों की कृतियों का प्रकाशन भी किया है। नए डिजिटल माध्यमों पर भी देवगनागरी समेत रोमन लिपि में उर्दू कविता उपलब्ध है।

## 2. संप्रेषण की समस्या (शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से)

उर्दू कविता में उपयोग किए जाने वाले शब्द हिंदी के पाठकों को प्रायः कठिन लगते हैं। इसका कारण यह है कि उर्दू कविता के बहुत से उपमान फ़ारसी कविता से उर्दू में सम्मिलित कर लिए गए हैं। चूँकि उर्दू गजल, विधा/शैली की दृष्टि से, फ़ारसी ग़ज़ल परंपरा से जुड़ी हुई है, उर्दू कविता का वाक्य विन्यास तो मुख्यतः हिन्दी जैसा ही है परंतु शब्दावली फ़ारसीनिष्ठ है।

उर्दू कविता में वाक्य विन्यास के कुछ ऐसे तरीक़े भी हैं जो फ़ारसी कविता से लिए गए हैं, जिन से हिंदी के आम पाठक परिचित नहीं होते हैं। इसमें फ़ारसी कविता में उपयोग की जाने वाली 'इज़ाफत', जिसमें 'ए' स्वर के उपयोग से दो शब्दों के बीच में संबंध दिखाया जाता है, सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त ''क्लासिकी'' ग्रंथों में प्रायः मिल जाने वाले शब्द जैसे अज़, ता, अज़ बस कि, अगरचे, क्यूँकर, गो, गोया, हर-चंद इत्यादि सम्मिलित हैं।

यद्यपि बहूलता में उर्दू कविता पढ़ना इस अंतर को पाटने में सहायक होता है (चूँकि इस प्रक्रिया में पाठक शब्दों के अर्थ सन्दर्भानुसार पता कर लेते हैं) किंतु उर्दू-हिन्दी शब्दकोश इसमें अत्याधिक उपयोगी होते हैं।

### 3. संप्रेषण की समस्या (सांकेतिक अर्थ की दृष्टि से)

शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से संप्रेषण की समस्याएँ तो शब्दकोश हल कर देते हैं, परंतु उर्दू कविता (मुख्य रूप से ग़ज़ल) में उपमा एवं रूपक अलंकार के प्रयोग की बहूलता के कारण, बहुत से शब्द अपने पारंपरिक अर्थों से जुड़े होते हैं। चूँकि उर्दू ग़ज़ल एक निर्धारित ढाँचे में लिखी जाती है इसलिए ग़ज़ल में बहुत ज़्यादा शब्दों के उपयोग का अवकाश नहीं होता है। इसीलिए कवि इन्हीं पारंपरिक शब्दों के माध्यम से अपनी बात कहने के लिए बाध्य होते हैं। इसी कारण शब्दों का शब्दकोशिय अर्थ पाठकों को कविता के एक संकुचित अर्थ तक ही सीमित कर देता है।

यह समस्या मुख्य रूप से ''क्लासिकी'' उर्दू कविता पढ़ते हुए आती है। और ग़ालिब जैसे कवि, जो बहुत से रूपकों के मिश्रण से एक जटिल बिंब बनाकर कविता में प्रस्तुत करते हैं, को पढ़ते हुए यह समस्या प्रायः महसूस की जा सकती है। यद्यपि ग़ालिब की जटिलता को समझने के संदर्भ में यह बात उर्दू के पाठकों के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक है। किंतु, हिन्दी और उर्दू में उपयोग किए जाने वाले रूपकों के भिन्न साहित्यिक परंपरा द्वारा पोषित एवं निर्मित होने के कारण, दोनों भाषाओं की कविता के कुछ रूपक तो समान हैं लेकिन कुछ भिन्न हैं।

इन रूपकों, उपमाओं का बोध करने के लिए देवनागरी में प्रकाशित किए गए दीवान-ए-ग़ालिब, दीवान-ए-मीर एवं उनपर लिखी हुई टिप्पणी सहायक होती है जो आम तौर पर इन्हीं किताबों में पृष्ठ के फुट्नोट में लिखी होती हैं। आयोध्यप्रसाद गोयलिया जी द्वारा 'शेर-ओ-सुख़न' के नाम से लिखी गई पुस्तक-शृंखला भी इसमें सहायक हो सकती है।

### 4. छंदबोध की समस्या

उर्दू कविता की परंपरा का बड़ा हिस्सा ऐसी विधाओं से मिलकर बना है जो छंदबद्ध) हैं। ग़ज़ल, रुबाई, मर्सिया, मसनवी, नज़्म जैसी अनेक विधाएँ बह्र (छंद) में लिखी जाती हैं। ''नसरी नज़्म'' या जिसे ''छंदमुक्त कविता'' कहा जा सकता है इसका एक अपवाद है। अधिकतर हिंदी के पाठकों का ग़ज़ल से तआरुफ़ एक संगीत की विधा के रूप में होता है, किन्तु ग़ज़ल मुख्य रूप से एक साहित्यिक विधा है। ग़ज़ल का छंदबद्ध (एक निश्चित लय में) होना ही उसे गाए जाने के उपयुक्त बनाता है। छंदबोध की समस्या का एक कारण संभवतः यह भी है कि हिंदी के आधुनिक पाठक अधिकतर छंदमुक्त कविताओं को पढ़ने के आदि हैं, किंतु उर्दू कविता में छंद अब भी कविता के आधारभूत ढाँचा है।

यद्यपि छंदबोध (बह्र को समझने) की समस्या आम पाठकों के लिए इतनी बड़ी नहीं है

जितनी वह ऐसे पाठकों के लिए है जो ग़ज़ल कहने/लिखने की अभिलाषा रखते हैं। बह्र/छंद का बोध इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है चूंकि यह पाठकों को ग़ज़ल के स्ट्रक्चर की बारीकियों से अवगत कराता है एवं उसकी बेहतर गुण विवेचना करने योग्य बनाता है।

बहुत सारी कविताओं के निरंतर पठन से भी बह्र/छंद का बोध होने लगता है। वीनस केसरी द्वारा रचित ''ग़ज़ल की बाबत'' हिंदी के पाठकों को ग़ज़ल का छंदशास्त्र समझने में सहायक हो सकती है।

## 5. क्या उर्दू कविता का सरोकार केवल प्रेम और शराब से है?

उर्दू कविता (मुख्यत: उर्दू ग़ज़ल) पर प्राय: यह आरोप लगता रहा है कि उस का प्रयोजन केवल प्रेम और शराब एवं उन से जुड़े विषयों से है। यह आरोप पूरी तरह उचित तो नहीं है किंतु पूरी तरह बे-बुनियाद भी नहीं है। ग़ज़ल की परंपरा के उद्भव के समय अरबी कविता में ग़ज़ल शब्द का मूल अर्थ 'स्त्रियों से बातें करना' रहा है। और फारसी/उर्दू साहित्यिक परंपरा में भी बहुत से अशआर (शे'र का बहुवचन) प्रेम और शराब के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे हैं। और ये ऐसे अशआर हैं जिनका कोई व्यंजित अर्थ भी नहीं है। किंतु यह भी सत्य है कि उर्दू कविता समय के साथ-साथ विविध विषयों को सम्मिलित करने में सफल रही है।

खुदा-ए-सुख़न (शायरी के खुदा) माने जाने वाले कवि मीर-तक़ी-मीर के काव्य में प्रेम और शराब से इतर बहुत से विषय मिलते हैं, मानवीय संवेदनशीलता के विभिन्न पहलुओं को मीर ने अपनी कविता में स्थान दिया है। उदाहरण के लिए वह कवियों को कवि होने के दायित्व का बोध कराते हुए कहते हैं:

*शाइर हो मत चुप के रहो अब चुप में जानें जाती हैं*
*शेर कहो अब्यात पढ़ो कुछ बैतें हम को बताते रहो*

मिर्ज़ा ग़ालिब की कविता में मिलने वाले जटिल दार्शनिक बिंबविधान को आलोचक गोपीचन्द नारंग ने अद्वैत-वेदांत, एवं माध्यमिक शून्यवाद की दार्शनिक परंपराओं से जोड़ा है। ग़ालिब के काव्य में आस्तिविक प्रश्नों से जूझते हुए मनुष्य की ध्वनि साफ़ सुनाई देती है:

*न था कुछ तो खुदा था कुछ न होता तो खुदा होता*
*डुबोया मुझ को होने ने न होता मैं तो क्या होता*

उर्दू कविता की गुण विवेचना करने के लिए आवश्यक है कि कविता को समझने की प्रक्रिया में उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़ा जाए। और चूँकि उर्दू कविता में (मुख्यत: ग़ज़ल में) मआनी-आफ़रीनी (अर्थ की बहुस्तरीयता) की संभावनाएँ हमेशा होती हैं इसीलिए पाठकों को चाहिए कि वह अपनी कल्पना के निवेश से कविता को मानवीय भावभूमि के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयत्न करें।

**अर्हत मेश्राम**
बी ए प्रोग्राम (चतुर्थ वर्ष)
देशबंधु महाविद्यालय

# सच्चा मित्र कौन

बहुत समय पहले की बात है। दो बहुत पक्के दोस्त थे। एक बार वे जंगल से गुजरते हुए एक खतरनाक रास्ते से जा रहे थे। वह रास्ता बिलकुल सुनसान था। जैसे-जैसे सूरज ढलने लगा, उन्हें डर लगने लगा, लेकिन उन्होंने एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा। तभी अचानक उन्होंने देखा कि सामने से एक भालू आ रहा है, एक दोस्त सबसे नजदीकी पेड़ की ओर दौड़ा और फटाफट ऊपर चढ़ गया, लेकिन दूसरा पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता था इसलिए वह मृत होने का नाटक करते हुए जमीन पर लेट गया। भालू जमीन पर पड़े लड़के के पास गया और उसके सिर के चारों ओर सूंघने लगा। लड़के को मरा हुआ जानकर, भालू आगे बढ़ गया।

अब पेड़ पर चढ़ा दोस्त नीचे उतरा और उसने अपने दोस्त से पूछा कि भालू ने उसके कान में क्या कहा? दूसरे दोस्त ने जवाब दिया, 'उन दोस्तों पर कभी भी भरोसा मत करना जो तुम्हारी परवाह नहीं करते हैं। जो मुसीबत में खुद की जान बचाए और दूसरे के काम ना आए वो कैसा दोस्त।' अब पहले दोस्त को अपनी गलती का एहसास हो गया और उसने अपने मित्र से माफी मांगते हुए कहा- माफ करना दोस्त, मैं अपनी गलती पर शर्मिंदा हूँ।

**-महेश**

बी. ए प्रोग्राम - प्रथम वर्ष

# चिड़िया

चिड़िया चहक-चहक कर

करती है पूरे आकाश को रौशन

पेड़ से ही जीवन हमारा

पेड़ से ही मृत्यु

वर्षा से ही जीवन का आधार

उसके बिना हम सब बेकार

प्रकृति को देख मिलता है एक सुकून

ये सब माया है उसकी जिसका नाम है प्रकृति

**-पायल शर्मा**

प्रथम वर्ष

## गजल

हैं पाँव शल कि दश्त को जाया न जाएगा
हम बे-घरों से घर भी बनाया न जाएगा

इक बात है जो तुझ को बताई न जाएगी
इक जखघ्म है जो मुझ से दिखाया न जाएगा

जो जा चुके अब उनको न दी जाएगी सदा
जो खो गए हैं उन को भुलाया न जाएगा

हम इश्क के सफर में ये सामान-ए-आगही
खो देंगे यूँ की फिर कभी पाया न जाएगा

बुलबुल बहार-ए-रफ्ता का करती रहेगी सोग
अब उस से बोस्तान में जाया न जाएगा

सीने से कोई शय अब उतारी न जाएगी
पलकों से कोई बोझ उठाया न जाएगा

श्अर्हतश अगरचें गलियों में फिरता है मिस्ल-ए-कघ्स
हमसे ये संग उस पे उठाया न जाएगा

**-अर्हत मेश्राम**

## गजल

बिखरा हूँ अब जो शहर में मानिंद-ए-गर्द मैं
लौटा हुआ हूँ शब का, बयाबाँ-नवर्द मैं

पझघ्मुर्दगी पजीर है आलम में हर नुमूद
होता हूँ ऐसे सब्ज कि होता हूँ जर्द मैं

उस चश्म-ए-गर्म-दीद की है मुझ को आरजू
वो देख ले इधर तो पिघल जाऊँ, सर्द मैं

यक-जाई-ए-बदन का भरम क्यूँ न टूट जाए
निकलूँ जो इस बदन से अभी फर्द फर्द मैं

'अर्हत' से दोस्ती है सो उसका है ये मआल
फिरता हूँ अब जो दर-ब-दर आवारागर्द मैं

**-अर्हत मेश्राम**

## ग़ज़ल

दुनिया छोड़ के कभी न जाने वाला मैं
दुनिया को ही दश्त बनाने वाला मैं

इक लम्हे को तुझे ख़ुदा करने के लिए
अपनी ख़ुदी को सदा मिटाने वाला मैं

दिन ढलते घर लौट के आने वाला तू
और हर ताक़ पे शम्अ जलाने वाला मैं

शजर शजर घर अपना बनाने वाले परिंद
डगर डगर पर पेड़ उगाने वाला मैं

मुझको अपने साथ में रखने वाला तू
तेरे किसी भी काम न आने वाला मैं

**-अर्हत मेश्राम**

## ग़ज़ल

'जिस को जैसा भी है दरकार उसे वैसा मिल जाए'
रूह को जिस्म मिले जिस्म को साया मिल जाए

और मिल जाए चमन-ज़ार को बाद-ए-ताज़ा
और इक ग़ुंचे को खिलने का बहाना मिल जाए

इस तरह उस से मिले हम कि किसी दरिया को
बीच दरिया के कोई डूबने वाला मिल जाए

क्या अजब है कि अंधेरों के तअक्कुब में मुझे
जो मुझे ढूँढ रहा हो वो उजाला मिल जाए

**-अर्हत मेश्राम**

# ग़ज़ल

कैसे बताऊं कि रातें कैसी होती है
किसी अजनबी से चाहतें कैसी होती है

हम तो बोल ना पाए उनसे एक लफ्ज भी
वो पूछते है की बातें कैसी होती है

ताक लगाए बैठे है न जाने कब निकलोगी
तुम क्या जानो मूलक़ातें कैसी होती है

गर खफा हो तो बताओ मुझको
मुझसे न कहने वाली शिकायतें कैसी होती है

जिनको चाहिए हीरे मोती प्यार में
वो क्या जाने आखिर सौगातें कैसी होती है

**-राहुल दीप**
द्वितीय वर्ष

# हमारी पहचान

जिस देश की सरहदें दिलों में दूरियां पैदा नहीं करती
जिस देश की नारी सिर्फ सुभाष नहीं झांसी को भी है जन्मती
उस देश से है हम!
फिरंगी आकर अतरंगी बन जाए जहां
15 तारीख को सिर्फ तिरंगा लहराए जहां
उस देश से है हम!
जिस देश की मिट्टी से किसान और जवान दोनों को है प्यार
जिस देश में शून्य का हुआ आविष्कार
उस देश से है हम!
जिस देश के दिवाली में अली आए
और मुहराम में राम आए
जिस देश में हिंदू मुस्लिम एक दूजे को कहें प्रणाम सलाम
उस देश से है हम!
जिस देश में लोग मिसाल मिसाईल मैन की देते हैं
जिस देश में बेटियों को हम लक्ष्मी का रूप कहते हैं
उस देश से हम।

**-तोफीजा जमाल**
द्वितीय वर्ष

# सुख किसमें हैं?

एक छोटे से गाँव में रामू नामक किसान रहता था। उसकी फसलें हमेशा अच्छी होती थीं, लेकिन उसका दिल हमेशा दुखी रहता था। एक दिन, उसे एक बूढ़ा साधु मिला। साधु ने रामू से पूछा, "तुझे क्या चाहिए?"

रामू बोला, "मुझे सुख चाहिए।'' साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, "सुख बाहर नहीं, भीतर होता हैं।''

रामू ने साधु की बात नहीं मानी और फिर भी मेहनत करने लगा। सालों बाद, जब उसकी फसल बहुत अच्छी हुई, उसने गाँव के बच्चों को बुलाया और उन्हें फसल का हिस्सा दिया।

उस पल उसे एहसास हुआ कि खुशी बाँटने में ही है। अब रामू की आँखों में चमक थी। उसने समझा कि सुख खुद से नहीं, दूसरों के साथ जुड़ने से मिलता है।

**-सुहानी पींजजि**
प्रथम वर्ष

# भूल जाती हूँ

मैं भूल जाती हूँ...
कप मैं छनी हुई अदरक वाली चाय को पीना
अपनी मनपसंद कुरती की खुली सिअन को सीना
सोसाइटी के गेट वाले ठेले से गोलगप्पे खाना
'विंक' पे अपने पंसदीदा गाने बजाना
अधूरी नॉवेल के आखरी चार पन्ने पढ़ जाना
वीडियो कॉल पर माँ को पूरे दिन का हाल बताना

मैं भूल जाती हूँ...
कभी कभी दिन
तारीख
महीना
और हर दिन
बस कुछ पल को
अपने लिए जीना

**-डा. शिल्पी श्रीवास्तव**
सहायक प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र विभाग
देशबन्धु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

# गलती

मानव तो गलती का पुतला
कौन ना गलती करता है
गलती बस उनसे ना होती
जो काम मे हाथ ना धरता है।

हम सबका है फर्ज सदा
गलती से हम कुछ सीखे
गलती से हम अनुभव लेकर
राह मे आगे बढते है।

जो मानव काम करने की क्षमता रखता
वही गलती का सामना करता
जो हमें आगे का राह दिखाता
दुनिया का सामना करने में सक्षम बनाता।

मानव तो गलती का पुतला
कौन ना गलती करता है
जो लोग गलती का सामना करते
वहीं राह में आगे बढ़ते हैं।

मानव का कर्त्तव्य रहता
हमेशा कुछ नया सीखना सिखाना, कुछ कर दिखाना
मानव तो गलती का है पुतला
इसिलिये हस्ता हसाता गलती करता।

**-श्रेया**
प्रथम वर्ष

# झूठ–सच

सच और झूठ
झूठ और सच
हैं दोनों ही सापेक्ष
कहते हैं सयाने
देखा हुआ सच है
और सुना हुआ झूठ
अतः सच और झूठ में
फासला है तो
आंख और कान के बीच का
लेकिन बड़ा अंतर है
कानों से मिले सच
और आंखों से मिले सच में
और सच तो यह है
कि सच नहीं आता
कानों के रास्ते
क्योंकि एक कान से
दूसरे कान तक
जाता सच
आखिर
बन जाता है झूठ
इसलिए सच कानों के रास्ते
चुपचाप नहीं
बल्कि आता है हमेशा
धड़ल्ले से
सामने के खुले
दरवाजे के रास्ते।

**-डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी** (सेवानिवृत्त)

# कविता

हाँ एक कच्चा मकान हूँ मैं,
कुछ दुनिया के चहरों की एक छोटी सी मुस्कान हूँ मैं,,
हां एक कच्चा सा मकान हूँ मैं।
माना समय से मरम्मत नहीं होती मेरी, ना भर पेट मसाला खाया है,
पर मैने अपने इसी अधूरे रूप से
उन आंखो के सपनो को सजाया है,
जो उड़ना चाहती है पंख खोल, जो नहीं मानती किसी को अनमोल,,
जिनके लिए जीवन के हर सपना बड़ा है,
अफसोस, जिन पर जिम्मेदारियों का बोझ बड़ा है।

मैं उन सबकी एक छोटी सी आस हूँ,
किसी अमीर का तो नहीं पर, हाँ इनका में खास हूँ।
इनके चहरे की मुस्कान हूँ मैं,
हां एक कच्चा स मकान हूँ मैं,

बारिश में भले ही रोता हूँ,
सर्दी में चादर तान कर सोता हूँ,,
इतराता नहीं, दिखलाता नहीं,
जो हूँ मैं वही दिखाता हूँ, इतराना मुझे आता ही नहीं,,
कैसे दीवारों को सजाऊँ, कैसे उन पर रंग लगाऊं, ये सब मुझे भाता ही नहीं।
अब कर भी क्या सकता हूँ,
मेरा मालिक जो कमाता है, मेरे लिए उसमें से कुछ बचाता ही नहीं,

अब वफादारी का पाठ पढ़ा है,
आखरी दम तक साथ निभाऊंगा,,
जिस दिन मालिक कामयाब होगा मेरा,
उस दिन खुशी मनाऊंगा,,
लीपूँगा, पोतूंगा अपनी भुजाओं को मैं, रंग बिरंगी सजाऊंगा,

कई टूटती सी आस का सहारा हूँ मैं,
दूसरों को शरण दे खुद लाचार हूँ मैं,,

दुख में रहकर हँसना सीखा है,
तभी बहुत उभरते चहरों की पहचान हूँ मैं,,
कई दुनिया के रुलाए चहरों की मुस्कान हूँ मैं,
हां, एक कच्चा सा मकान हूँ मैं।

**-विपिन करनोजिया**
बी ए प्रोगाम- तृतीय वर्ष

# कहाँ है पहलगाम

पूछिये मत
पूरी शैतान की नानी थी लिद्दर नदी
बर्लिन में मिली जिप्सी लड़की-सी अल्हड़
पूरी-की-पूरी उतर गई थी मुझ में
आकाश से उतर मेरी धरती पर।

पाँव डालते ही पानी में
काट ली थी
एक ठिठुरती चिकोटी
शैतान ने।

'आओ
तुम भी यहाँ बैठो
मेरे पास इस पत्थर के वक्ष पर
और डाल दो पाँव पानी में'-

हर आते-जाते को न्योतती थी
बिना भेदभाव के
लिद्दर नदी पहलगाम की।

ठिठुरते पानी में टिके
पत्थर की नमी में भी
कितनी तपिश थी
किसी अपने के सामने
जी खोल देने की तरह।
कहीं कोई नहीं था वहाँ अकेला।

पूरे ब्रह्माण्ड में
हमारे होने का एक विराट उत्सव
फूटने लगा था हममें चश्मों-सा।

हद ही हो गई थी
कितनी बेशर्म हो गई थी हवाएँ अचानक
और तुम कितना लजा गई थीं।

याद है न वह गर्मी
जो फूट गई थी
हमारे पाँवों के असावधान स्पर्श से।

पूस की रात में
हमें मिल गया था
अलाव की आँच-सा।

बात यूँ कितनी छोटी है
मामूली भी
खरगोश के
फुदककर ओट में हो जाने-सी

पर सवाल होते ही
कितनी तीखी हो जाती है।

हम क्या उत्तर देंगे
अगर कोई पूछ ले
क्या चलेंगे इन छुट्टियों में
पहलगाम?

**-दिविक रमेश**
संकलन कर्ता - सं. हिंदी

**Desh**
**2024-25**

# English Section

**Editor** : **Sh. Saswat Battacharya**
**Student Editor** : **Anshuman Mishra**

## LIST OF CONTENT


| | | |
|---|---|---|
| Doctor-Patient Relationship : A Challenge During Covid 19 | - Dr. Subasini Barik | 34-38 |
| The Weather | - Dr. Pradeep Kant Mukharjee | 38 |
| Our Enlightened Buds : An Inspiring Memory | - Dr. Subasini Barik | 39-43 |
| Role of Technology to Digitally Enrich the Indian Languages | - Dr. Monika Bajaj | 44-47 |
| Computing on the Cloud | - Dr. P.K. Mukherjee | 48 |

# Doctor-Patient Relationship: A Challenge During Covid-19

Covid-19 pandemic 2020 was an eye opener for the entire world. It made us learn a phenomenal experience, which may not be expressed by mere words, but can be felt and realized in many different ways. When the whole world was completely engrossed with their self-centric activities, suddenly this unexpected corona forced everyone to lead a deserted life. What an irony! A manual environment suddenly converted to a virtual platform, as if the over-burdened life took a pause for a while for its own sustenance. This crisis was manmade but beyond any human control. During this process of lockdown and physical distancing, we realized the importance of our surrounding and learnt the beauty & relevance of values in our life. Corona helped us connecting globally on virtual platform and also made us realize our limitations of life. Covid-19 had left a significant scar in almost everyone's mind due to its impact in all sections of the society. One of the most affected areas of this pandemic was the medical sector which is not only the most essential one due to its own nature that serves the society as a part of their duty, but also been worshipped by the public as holy messengers for saving the lives of people during this unprecedented period. In between these two major scenarios of medical sector, many problematic zones are there to be resolved and to be analyzed from multiple angles.

Let us revisit those days for a while. On 31st December 2019 WHO was informed about the cases of pneumonia of unknown cause in Wuhan city of China. A novel corona virus was identified as the cause by Chinese authorities on 7th January 2020 and was named as Covid-19 virus. On 30th January 2020, Director General WHO declared the novel corona virus outbreak to public health emergency. By mid-March 2020, 40% of globally confirmed cases and 63% of global mortality from the virus was reported. Because of the highly contagious nature of the disease WHO declared few restrictions like maintaining physical distancing, wearing mask and constant sanitizing as a precautionary measure. This disease made the whole world suffer due to many reasons.

1. Because of the highly contagious and infectious nature of the disease, the healthcare unit got overburdened and compelled to introduce new modalities for patient care like telemedicine that guaranteed the possibility of remote assistance, but made the skin-to-skin contact impossible.

2. Because of the basic infectious nature of the disease and implementation of social/physical distancing as a remedial measure, doctors/health care personals were expected to act more humanly and responsibly in addition to their

basic duty as health worker. Hence Doctor-Patient relationship became the center of focus during the period particularly for this deadly pandemic.

3. Hospitals and ICUs are always complex units of health care system where all kind of patients enter on everyday basis. Due to the outbreak of the pandemic a division is made amongst all such health care units for various reasons. The units that served pandemic patients and the units serving all others were kept separated strictly, again keeping in mind the safety of both the public as well as the concerned persons. Pressure of work was exceptionally enhanced due to the increasing number of patients and simultaneously the mental pressure got multiplied due to both personal as well as professional demands.

Such aspects not only created hindrances for medical care but also opened doors for skeptical zones in public mind. Reasons are not one but many and illustrations are innumerable based on individual case histories.

All the medical ethics codes, going back to ancient Hippocratic Oath and Charaka Samhita's Oath of Initiation, stress that the first and foremost consideration of the health care professional must always be the best interest and welfare of the patient. During the serious health disorder, both the patient and the family always go through a major endangered fear factor which is not only stressful but also dangerous. Trust between the two could reduce the fear factor as well as risk of any further health disorder. This trust between the patient and the medical person can either be justified or betrayed. How things are moving these days is not unknown to public. It is equally essential to mention here that mutual respect and maintenance of dignity during the treatment is equally expected from each other for retaining both mental and physical health. That means any kind of breaching of trust between the doctor-patient relations is always unhealthy for both the parties.

Doctor-patient relationship has always been very challenging inside Intensive Care Units with its restrictions and type of care. Other than the ICU unit there always happens to be an 'information gap' between the patient/ his attendants and the health care persons. The responsibility of the health professional is to communicate the essential information to the patient in such a language that the person can easily understand and follow. The task in this context is challenging, responsibility covers life risk and the relation needs to nurture a holistic approach due to its own nature in normal health disorder factors. Outbreak of Pandemic made this issue even worse to its effect. Earlier inside ICU the attendants of the patients were available outside the ICU for any kind of assistance/emergency in

addition to the normal care aspects. But covid patients were completely left to the mercy of doctors and other health care persons without having any one around whom he/she can express her concern or pain. Hence the responsibility of health care professional including the doctor became extremely challenging including their duty and work force. At this stage they are not only a mere professional like doctor, nurse or attendant having their own typical designated duties, rather they work as multitasking units in addition to their task of health care units. They normally are expected to take care of:-

- Treatment as well as one to one care of the patient.
- The expectations of Health and Welfare department as and when assigned to them.
- The expectation of the family of the patient who left isolated at hospital without having any familial attendant of his/her own.
- The expectation of the Government Policy makers being an employee.
- The mental/psychic concerns and issues of the patient including the fear factor that arises due to the unknown and unpredictable/unprecedented episodes arise during this treatment.

Expectations are endless and challenges are innumerable, but pros-n-cons analysis is really miniscule at this situation. In case of Doctor-Patient Relationship (DPR) we debate over the issue normally when there is no compatibility in what we expect from a doctor and what we get in reality. We get information about the inner layers of hospital during the treatment only from the patient out of danger zone. But in case of patient who lost life during treatment, the health care professional is a major part of blame game most of the time. Their efforts/care/ concerns along with their duty are not recognized normally at these circumstances. It is because the normal human beings do not have an access to this health care unit due to the basic nature of the disease, due to the law-order system during this high-risk zone and also due to the personal safety of the individual which is equally essential. Let me focus on three aspects of DPR.

How was the relation between doctor/ health care personal with their patients earlier? How is it now during this high-risk zone? And finally, how is it expected to be?

As per the code of conduct of Medical Ethics, **'the health of my patient will be my first priority.'** Patient should be the priority for a doctor and all other aspects of personal profit, reputation, Government policy, Departmental requirement or any other related issues should be secondary. The deciding factor for treatment should always be for the best interest of the patient. In DPR a compatible zone of trust, confidentiality, truthfulness and honesty need to be maintained. Medical paternalism is

another key factor in this relation. Irrespective of any caste/creed/religion/name/ fame/power/ position/ livelihood/financial condition, any and every patient should be treated with similar sensitivity and seriousness. Even World Health Organization defines health as a state of complete physical, social and mental wellbeing and not simply absence of illness and disease. Bond between Doctor-Patient is mostly a bond of empathy which is based on their oath to save life. But today this relation is under question mark due to many factors. The major among them is the gradual disorder in health care system. For example: even the access of ICU is not decided as per the intensity of the need of the patient, but on many other secondary factors. Power-game as well as self-centric attitudes are of major concern. Even though we observe a consistent decline in health care unit, I am sure empathy along with trust, communication, understanding and mutual respect collaboration will definitely create wonder in DPR irrespective of all odds.

Earlier the DPR was confined to the treatment of a patient along with his/her psycho-physical related issues. Friends and family were around the patient for personal care and concerns. Health care unit along with doctor were accountable for treatment related issues. Hence the doctor-patient relationship for any other disease as compared to Corona are visibly different. In Corona the Personal Protective Equipment (PPE), telemedicine and fear factor of patients created maximum disaster. We normally expect empathy from doctors and trust from patients. But when both are sufferers at a particular time then the decision-making grounds get disturbed. Due to contagious nature of this disease patients are left alone with doctors/health care personals and the family expects all type of care from the hospital persons. Due to the nature of this disease, number of patients were increasing with a fix number of medical care unit. Overnight increase in medical care unit or number of doctors was next to impossibility. Hence pressure was multiplied along with the risk factor even with the health personals. Even patients these days complained as if they are being treated as an object while being examined, tested, diagnosed and medicated. They were not being treated as persons with respect and consideration. Such complaints are also not baseless due to several other factors. But the additional pressor with the increasing number of covid patient created many unprecedented physical as well as psychological problems. Media and press also created havoc with each case of deceased person.

In addition to the various expectations of the public for their own patients, there need to have similar or more respect and empathy for the health care workers by the public and press, which would work as a motivational force to cater more presser. Normally we expect humanity and quality treatment from the doctors/health workers for the patients and expect them to work

day and night as machines which is neither justified nor appreciable. The stretched staff and resources can certainly not always deliver high quality care and treatment. Sanctity of life should be understood and applied uniformly to both. Both the lives are equally precious for the family and society. But during this corona period the risk factors are exceptionally high incase of these health care units who works as the frontline warrior directly with the patient when no family member even comes forward to take the personal care of their own patient. A sensible patient can have an idea that how seriously these health care unit works in and around the hospital. Challenges are many but the question is how to address them. In DPR during Covid both are equally in high-risk zone. Whom to address and give priority? A highly challenging question. Ethically both need to be addressed with equal importance. Even in between doctor & patient when Govt intervene with various policies, the priority factor gets imbalanced. In such crucial situation we need to think about some uniform norms to safeguard their interest, so that the fear factor develops in both sides will be minimized and trust & confidence on each other would develop to protect each other's interest. This is how we can address even the hidden challenges of any such diseases.

**Dr Subasini Barik**, Associate Professor
Department of Philosophy
Deshbandhu College,
University of Delhi

## The Weather

Really unpredictable is the weather
Sometimes it scares us badly
By thunderous sounds
of clouds
while at other times
it starts drenching us
by mindlessly throwing water on us
like a naughty boy
By increasing its heat
The weather sometimes
makes us feel uncomfortable
and irritable
while on other times
wrapping us in extreme cold
it gives us feeling of shivering
with our teeth cluttering
Falling short of topic
we sometimes have to resort to
talking about weather
Whatever the case
It goes without saying that
the weather dominates us al
It makes us speechless at times
while at other times
it makes us come to our toes
by shocking us

**Dr. P. K. Mukherjee**
Asociate Professor of Physics (Retd.)

# Our Enlightened Buds: An Inspiring Memory

"Sanjeevani-2018", the Annual function of Botany Department, Deshbandhu College, University of Delhi, was like every other annual functions of the College, full of multifarious programs like lectures, competitions, entertainments, prize distribution ceremony and many more. I had been invited to judge one of the event which was probably very common to all Botanist, but the reflections made by each one of the participants was not only unforgettable but also very inspiring for me as a teacher.

**Date:-** Sanjeevani- 2018

**Place:-** Botany Department, Deshbandhu College

**Event:-** Leaf Painting Competition

Every student participants were given a Peepal (Ficus) leaf to paint on their own without any specific theme. At the end of the competition they were judged on the basis of the painting prepared by them as well as the supportive story narrated by each one of them to support their creation. The whole episode prompted me to bring a few of them in front of all of you. The depiction as well as the narration by a student less than twenty years of age definitely needs a special attention by all of us who claim to be the educators of the society. The revelations are not only praiseworthy but truly inspiring.

**1.**

Male and female both are integral part of the society and shares their valuable contribution to the growth of this universe as a whole. We all owe our existence to that divine power but directly we owe our existence to our parents. Every new life is a creation of divinity. During this process a mother gives birth to a child after carrying the fetus in her womb for long nine months, who is a part of their physical form. Physically the mother carries the fetus in her womb since conception and bears all pain, but mentally the father is always with the mother and fetus together till the birth of the child. After the birth of the baby both parents share, care and feel the presence of their own living form every moment and try to protect their own baby from all odds. Each moment is precious, challenging as well as pleasant for both the parents. It's a misconception that mother takes all pain about child's birth and father feels nothing in comparison to the mother. The above painting is a beautiful depiction of how the baby occupies the mind and brain of father in its entirety.

**2.**

Light and darkness are complimentary. But it has a great impact on Universe system. Universe is comprised of all living and non living beings amongst which man is considered to be the best creature. But in reality it is not the case. In waking state the person plays a negative role intentionally, i.e. by allowing/doing/creating negative acts like corruption, performing mostly self centered acts and exploitation and also by not contributing voluntarily for other's well being. Rather he promotes all kind of destructive acts in the name of developments that yield in environmental pollution, health hazard and many such things as a barrier to the nature. On the other hand nature plays a major role to safeguard the interest of the Universe. It works day and night without any break, such that during night when the human beings fell asleep & their negative contributions take a pause, nature's contribution becomes powerful and contributes positively by generating oxygen and utilizing carbon dioxide that provides vital energy of life to all of us. The above painting paints beautifully how life sustains due to nature and conveys a strong message for human being to rectify themselves for the betterment of the environment. Our young artist expresses that the nature should be considered as better than Man.

**3.**

Education is the main source of knowledge. It creates awareness and spreads positivity. Since childhood we get educated by different sources including our mythology, epics, and through the books of science, commerce and humanities. From books only we collect information regarding our environment, our society, and our national and international events. These are our real friend of life that shows us a right way to achieve the goal of life and provide mental strength to overcome the negative impacts. The artist communicates here through his painting as if our whole life is a book in which our past experiences contains some pages and rest of the pages are left for the future days till death. With a reflective mind through introspection we can analyze our past from the previous written pages to create a bright future for our own. The book will be available for all to judge the overall performance of the personality. Man is the maker of his own destiny. By analyzing the previous pages from the book of life we can eliminate our wrong doings and contribute more significantly for a better future. I

sincerely salute to the thoughts of our young mind to think and paint such an enriched thought of life.

**4.**

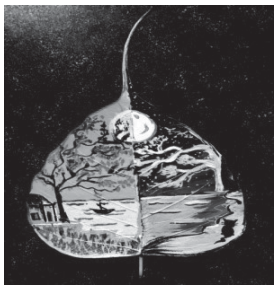

Day & night, brightness & darkness, positive & negative are complimentary to each other. Darkness normally portrays the negative aspects or the devastated states of nature like storm, snakes, drowning trees that highlight the disappointment and despair. Bright side provides the rays of hope, sustainability, cherished life with blooming flowers, flowing River with musical journey of life, flowering trees with singing birds, celebrating life with peace and tranquility. Both aspects are painted nicely in this leaf. Both contrasts have its existence in the journey of life. Hence getting disappointed in pain and feeling overwhelmed in joy should be avoided. With the experience of both pain and pleasure, one can lead a balanced life and have the feeling of brightness or positivity for one's own self.

**5.**

Human brain is the most complicated aspect of this universe. On the one hand this painting neatly depicts the imagination of the painter. How human brain works positively and negatively at one time. Every human being has three qualities (gunas) i.e. Satva, Rajas and Tamas. At the time of every act one quality overpowers the other. Even if one starts any activity with good intention ends up negatively or vice versa. The other aspect of this painting highlights how the soul gets influenced by the Satva (positive) guna and tries to diminish the darker side of life to lead a better life. It also highlights one's admiration towards the Creator, environment and crave for stress-free life. 'Service to all is the greatest Religion' is the message given by the participant to the Society.

**6.**

This painting is full of multiple aspects of life, yet neatly painted with many messages distinctively in three colors i.e. Black, white and blue. 'Love yourself', 'Be happy', 'Be positive', 'Free to fly' and 'Art is my life' are various messages of the artist with innumerable painted illustrations from everyday life. Flora and fauna depicts life. Life without freedom is meaningless. But life with a positive attitude is not only worthy for one's own self but also cite a

remarkable example for all. Excellent attitude will full of bright ideas are the major highlights of this painting.

**7.**

Women are the centre of everything. Be it personal, professional, social, political or even economical life. The general mindset is portrayed by the painter. How social boundaries never allow her to be free. No family, no society or no nation can grow without her, yet she is controlled, mutilated and oppressed always by others. Being the root cause of all creation, she always keeps her positive attitude on even after mass exploitation. At this phase of life, when girls have proved their power in almost all sectors of life, time has come to accept the reality that she is much beyond the conventional aspects. She is not only powerful to control the trade and commerce industry, but also proved her caliber in highly scientific zones as well as defense sector. Oppressing a woman shows the insecurity of male domain.

**8.**

The painting remarkably paints the growth of spirituality amidst all positive and negative life. 'Crave for the union of the individual soul with the Universal soul finds its own path for liberation', is the theme of this painting. Whether one live in pleasant state or in state of despair, always the soul want to get liberated from this worldly life. Spirituality is an inbuilt urge in every individual. With sincere urge to reach the ultimate truth Almighty, every creation finds a path for itself and that path takes one towards the invisible power. A young artist with such a matured thought is rare but really proves the potency available in these tiny minds.

**9.**

This is a unique painting that depicts over all aspects of one individual. Hope, prosperity, steadiness & celebration all are connected to the happy state of an individual, whereas misery, suffering, pain, despair and helplessness are states of unhappiness. One's time portrays each moment's mental state. Desires are endless. Satisfied desires bring smile with a pleasant state of mind whereas unsatisfied desires bring all kind of unpleasant feelings. With all of them together one needs to lead his life. This is the ground reality. From this art form one can try to visualize one's own self and can think of his

or her own future. This painting provides a glimpse of human nature.

**10.**

Lord Krishna is the root of everything. The creator and the creation are one and same. The entire universe lives, dances and also suffers due to their karmic bondages. Even Lord Krishna took birth to lead human life and enjoyed the beautiful moment of worldly life as well as left for his heavenly abode with a painful end. Equality for all is the message communicated through this painting, be it God, the creator or His creation, the space, greenery, darkness or hope. All are equal and all are one. We are nothing other than a part and parcel of the supreme Reality.

Such canvases with such exceedingly significant portrayal, drawn by our young energetic minds, mirror an extremely rich and edified outlook of our youngsters. When the society is witnessing negativity every now and then, such magnificent, enriched mindsets of our young generation really brings hope against hope. Their creations are so inspiring that I feel enlivened and elated as an educator and decided to bring their beautiful creation in front of all of you.

**Dr Subasini Barik**
Department of Philosophy
Deshbandhu College, DU

# Role of Technology to Digitally Enrich the Indian Languages

In a digital world language plays a dual role. On one side it is inherently linked with technology, people use programming languages to control and instruct technology and on other side it an important tool to establish a relationship amongst online users across the globe. English is the most common language for internet users to share their opinions, experiences and access digital services. But in India, English is used by less than 1% of the population as their primary language and less than 10% as a second or third language. This language barrier needs to be broken by offering more of Indian Language content on the internet.

In 2017 KPMG and Google conducted a survey "Indian Languages-Defining India's Internet" to study the use of Indian languages by Indian Internet users. The report states that in 2011 out of 110 million Indian online users only 42 million users were using Indian languages and in 2016, 234 out of 409 million users where as in 2021 out of 735 users 536 million users were using Indian languages over internet. This growth momentum is likely to continue with the Indian language Internet users as compared to English Internet users.

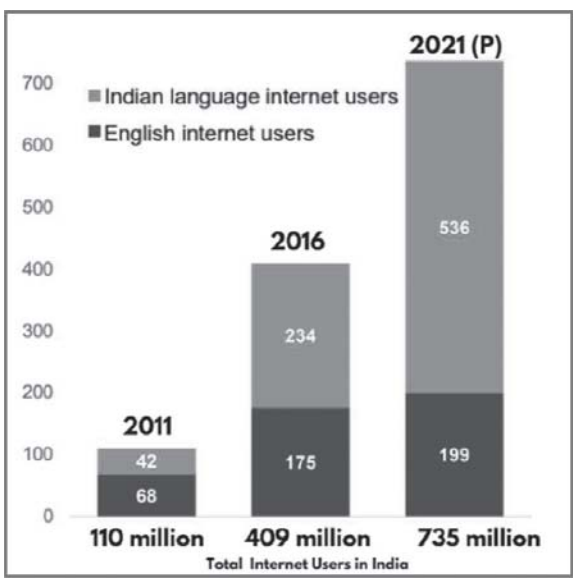


*Source: Defining India's Internet, A report by KPMG in India and Google, 2017*

However, now a days majority of the online content currently available in Indian languages includes news and entertainment, local language-based chat and social media platforms, regional websites for accessing e-government and other business services, but there are some challenges that need to be addressed:

- **Lack of Native/Regional Language Content -** There is a section of Indian population that is still deprived of digital facilities because their native language is either not supported by the technology or there is a lack of content in their native language.
- **How to search the content in regional language -** The most top activities on the internet are watching videos and listening to music followed by using social media platforms, online shopping and finally online searching. So, the main issue is how to search this content in regional language.
- **How to write in the Native Language-** Majority of Indian online users are forced to adopt English language over internet because either they are not able to type in its own native language or there is lack of keyboard support.

Now technology has been integrated in three dimensions to overcome these challenges and promote Indian Languages in Internet world

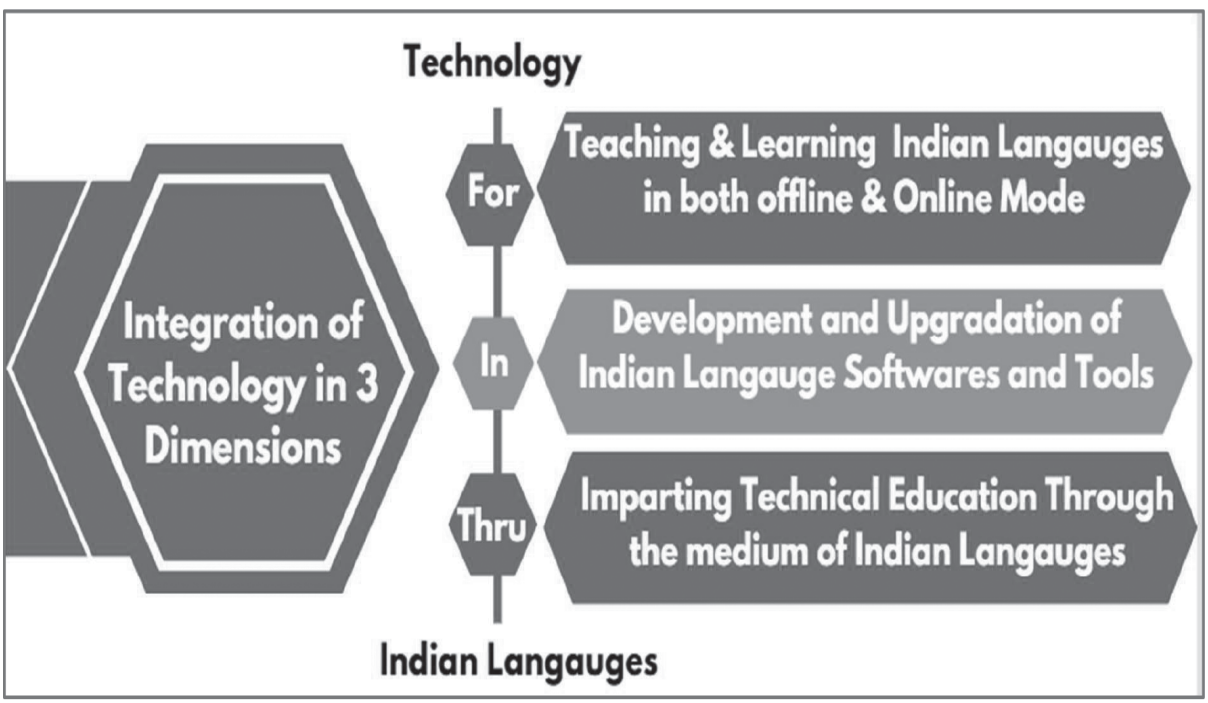

1. **Technology for Indian Languages -** In alignment of New Education Policy (NEP) 2020 various ICT tools and digital platforms have been developed for teaching and learning Indian languages. Leveraging the technology for Indian languages includes development and dissemination of teaching-learning materials, pedagogical methods, translating educational materials and other digital content.

2. **Technology In Indian Languages -** The next revolution in making compatibility of Indian Languages with modern technology is to develop hardware and software tools in Indian languages. It means to create Indian operating systems, use of Indian languages in writing codes and programmes, development of mobile apps and web browser in Indian Languages.

3. **Technology Through Indian Languages -** This refers to imparting technical education through the medium of Indian languages that makes a better understanding of the technical concepts. In accordance with the vision outlined in NEP 2020, the main focus of vocational education institutions, universities, and professional educational institutions is to offer skill courses and deliver technical education in Indian Languages.

***Some of Indian tools for promoting and supporting Indian Languages in the Digital World***

**Translation Platform**

- ***BHASHINI*** *(BHASa INterface for India)*, India's Artificial Intelligence (AI)-led Online language translation platform that can perform speech to speech, text to speech and text to text machine translation for multiple Indian languages.
  https://anuvaad.bhashini.gov.in/

**Desktop Softwares**

- **e-Aksharayan:** It is a desktop software that converts scanned document in Indian language/script into fully editable text format with 90-95% accuracy. It supports 7 major Indian languages- Hindi, Bangla, Malayalam, Gurmukhi, Tamil, Kannada & Assamese.
  https://tdil-dc.in/eocr/index.html

**Typing Software**

- **Unicode Typing Tools**, is a typing software for Indian Languages in editors of Windows based applications. It supports 22 Indian languages (Assamese, Bangla, Boro, Dogri, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Konkani, Maithili, Malayalam, Marathi, Manipuri, Nepali, Odia, Punjabi, Sanskrit, Sindhi, Santali, Tamil, Telugu,

and Urdu). It also provides On-screen keyboards for each language with also predictive typing feature with Inscript Keyboard which currently supports 10 languages like Assamese, Bangla, Boro, Hindi, Marathi, Odia, Punjabi, Tamil, Telugu, and Urdu. It provides multiple options for auto-completion of word and intelligent self-learning feature. https://www.tdil-dc.in/index.php?option=com_download&task=showresourceDetails&toolid=1285&lang=en

However, the accuracy and reliability of all these artificial intelligence tools depends upon one key component i.e. the quality of data used to train them. High quality data can lead to accurate predictions. Thus, this needs to build large data repositories of Indian languages. Bhasha Daan is one platform for multiple crowdsourcing initiatives to create large training datasets for Indian languages. One can also contribute to these open repositories by donating content in their own native language in the following ways. https://bhashini.gov.in/bhashadaan/en/home

- **Suno India-** Enrich your language by Listening the audio that you hear. Contribute by typing what you hear.
- **Bolo India-** Enrich your language by donating your voice. Contribute your voice by recording the sentences.
- **Likho India-** Enrich your language by translating the text. Contribute by translating the prompted text in your language.
- **Dekho India** Enrich your language by typing the text you see. Contribute by labelling the images.

*Contribute and become a Bhasha Samarthak*

**Dr. Monika Bajaj**
Assistant Professor
Department of Computer Science
Deshbandhu College

# Computing on the Cloud

In this modern age
You don't need bulky hardware
or local storage
Computing can be done
with the aid of cloud
not however the natural cloud
which afoat in the air in the sky
Cloud technology is what name is given
to this new technology
Storage of data and information in it
is in the 'cloud'
You say it loud
Filled with water
is what is natural cloud
Filled with digital data
is what actually is 'cloud'
To understand better this technology
Consider the following apology
Just as you keep your valuables
not in your home
but in a bank locker
You keep your
digital data
not in the hard disc of your computer
but in a distant cloud rather
This cloud is kept
on a big computer
on a server
in a data centre
This actually is
computing on the cloud
It is so vast and grand
Sharing and processing
data on demand
So let cloud be your
processing power
And watch your productivity flower.

**Dr. P.K. Mukherjee**

देश

2024-25

# संस्कृत-अनुभागः

संपादकः : डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः
छात्र-संपादकः : राघवकुमारझा

## विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| आचार्यमम्मटस्य काव्यलक्षणम् | - | डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः | 50-58 |
| गणितशास्त्रीयव्याख्यानस्य भाषारूपेण संस्कृतम् | - | डॉ. श्यामसुन्दरशर्मा | 59-71 |
| संस्कृत निबंध<br>विषयः - संस्कृतं नाम दैवी वाक् | - | राघवकुमारझा | 75-76 |
| विज्ञानप्रौद्योगिकी-क्षेत्रे संस्कृतस्य योगदानम् | - | सन्देशस्कन्दः | 77-79 |
| संस्कृतस्य शिक्षायाः महत्त्वं संरक्षणञ्च | - | शशांकशेखरः | 80-82 |
| देशबन्धु-महाविद्यालयः | - | जतिनवेदी | 83 |
| भारतदेशः | - | राहुलः | 84 |

# आचार्यमम्मटस्य काव्यलक्षणम्

डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः
सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः
देशबन्धुमहाविद्यालयः, देहलीविश्वविद्यालयः
कालकाजी, नवदेहली - 110019

सत्यमेव उक्तम् -

कविः करोति काव्यानि स्वादुं जानन्ति पण्डिताः।
सुन्दर्या अपि लावण्यं पतिर्जानाति न पिता।।

स्पष्टं यत् कवेः कर्म काव्यम् अथवा कवेः कर्म स्मृतं काव्यम् - इति काव्यशब्दस्य व्युत्पत्तिमूलकाशयः। तदनुसारं तु कवेः कृतिः काव्यं भवति। अत्र कविशब्दस्य काव्यशब्दस्य च व्याख्या समीचीनमेव। कोशग्रन्थेषु अन्यत्रापि च कविशब्दस्य व्युत्पत्तयः एवं वर्तन्ते -

**(i)** कवते सर्वं जानाति सर्वं वर्णयति सर्वं सर्वतो गच्छति वा। अथवा कवते श्लोकान् ग्रथते वर्णयति वा। अत्र √कवृ (वर्णने) धातोः इन् प्रत्ययो भूत्वा कविः शब्दः निष्पन्नो भवति।

**(ii)** कौतीति कविः - अत्र √कु (शब्दे) अचः इः इति इः प्रत्ययो संभूय कविशब्दः निषन्नो जातः।

**(iii)** कौति, कवते, कूयते वा कविः काव्याकृत् विद्वान् शब्दाकारः। अत्र √कु (शब्दे) अथवा √कुङ् (अव्यक्ते शब्दे) धातोः इन् प्रत्ययो संयुज्य कविशब्दः निष्पन्नो भवति।

**(iv)** सायणः कथयति - कवयः क्रान्तदर्शिनः - अत्र √कु (शब्दे) धातोः इ प्रत्यये सति कविः।

**(v)** कविः क्रान्तदर्शनो भवति कवतेर्वा - अत्र √कुङ्-शब्दे कवते तथा च √कमु धातोः कविशब्दः निष्पन्नः।

**(vi)** √क्रम √कुङ् वा धातोः इन् प्रत्ययः लग्नो भूत्वा कविशब्दः निष्पन्नो संजायते इति निघण्टोः टीकाकारः।

**(vii)** मेधावी कविः क्रान्तदर्शनो भवति इति निरुक्तकारः।

**(viii)** अतीतानागतविप्रकृष्टविषयं युगपद्दर्शनं यस्य स क्रान्तदर्शनः इति उव्वटः।

**(ix)** अतीतानागतदूरेवर्तिपदार्थानां यस्य युगपज्ज्ञानं स कविः।

**(x)** शुक्राचार्यस्यापरनाम कविः - कविस्तु उशना कविः।

**(xi)** कविशब्दस्य √कवृ (वर्णे) इत्यस्य धातोः काव्यकर्मणो रूपम् इति।

कथ्यते कविविषये, यथा -

नानृषिः कविरित्युक्तमृषिश्च किल दर्शनात्।
विचित्रभावधर्माशतत्त्वप्रख्या च दर्शनम्।।
स तत्त्वदर्शनादेव शास्त्रेषु पठितः कविः।
दर्शनाद् वर्णनाच्चाथ रूढ़ा लोके कविश्रुतिः।।

अन्यत्र कथ्यते, यत् -

अपारे काव्यसंसारे कविरेक प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्त्यते।।

कवेः गुणानां वर्णयन् केनापि कथितम् -

शुचिर्दक्षः शान्तः सुनृजनविनतः सुततरः।
कलावेदी विद्वानतिमृदुपरः काव्यचतुरः।।
रसज्ञो दैवज्ञः सरसहृदयः सत्कुलभवः।
शुभाकारच्छन्दो गुणगणविवेकी स च कविः।।

अपरः शब्दः अत्रास्ति 'काव्यमिति'। कोशग्रन्थेषु काव्यशब्दस्य व्युत्पत्तयः एवं सन्ति -

**(i)** कवेरिदं कर्म भावो वा काव्यम् अथवा कवेः कर्म काव्यम् - अत्र कविशब्दात् ष्यञ्प्रत्ययः संयुज्य नपुंसकलिङ्गे 'काव्यमिति' निष्पन्नो भवति। अस्यार्थाः ग्रन्थः, रसयुक्तवाक्यम्, कविकृत् गद्यपद्यात्मकः, वाक्यविशेषः, महाकाव्यमादयश्च।

**(ii)** शुक्राचार्यस्य अर्थे काव्यशब्दः पुल्लिङ्गे प्रयुक्तो भवति। अत्र काव्यशब्दस्य निष्पत्तिः इत्थमेव - कवेः भृगोरपत्यं पुमान् इति अथवा कवेः भृगुपुत्रस्यापत्यम्। अत्र 'कुव्वाद्दिभ्यो ण्यः' अनेन सूत्रेण ण्यः अथवा कदाचित् 'यञ्' प्रत्यये सति काव्यशब्दः निष्पन्नो जातः।

अस्यार्थः शुक्राचार्यः। शुक्राचार्यस्यार्थै √कुङ् धातोः निष्पन्नोऽयं 'काव्यः'। कौतुकमवश्यमारव्यातुमर्हत्वात् काव्यः इत्यत्र 'ओरावश्यके' इति ण्यत् प्रत्ययः।

**(iii)** कवेरिदम् इति यञ्।

**(iv)** √कव - वर्ण्णने स्तुतौ चकर्म्मणि ण्यत्, अस्यार्थः कविसम्बन्धिनि।

स्पष्टं यत् कवेः कृतिः काव्यं भवति। यायावरीयः राजशेखरः कथयति - 'सकलविद्यास्थानैकायतनं पञ्चदशं काव्यं विद्यास्थानम्'। गद्यपद्यमयत्वात् कविधर्मत्वात् हितोपदेशकत्वाच्च। तद्दि शास्त्राण्यनुधावन्ति। अन्यत्र तेन भणितं यत् पञ्चमी साहित्यविद्या। स हि चतसृणामपि विद्यानां निष्यन्दः। आभिर्धमार्थौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्।

सम्प्रति प्रश्नः अस्ति यत् काव्यस्य लक्षणं किमस्ति? काव्यलक्षणस्य विषये विचारयन् बहूनि मतानि समक्षं आयन्ति। मतबाहुल्यात् काव्यस्य विविधानि लक्षणानि दृश्यन्ते। लक्षणानां चिन्तनक्रमे सामान्यतः द्वौ पक्षौ वर्तेते। प्रथमो पक्षः

शब्दार्थयोरुभयोयोरेव प्राधान्यं स्वीकरोति। अपरश्च शब्दस्यैव प्राधान्यमुरीकरोति। शब्दार्थप्राधान्यमङ्गीकृत्य केषाञ्चन मतानि अद्यस्तात् प्रस्तूयन्ते, यथा -

**(i)** शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यं पद्यं च तद्विद्या - इति आचार्यभामहः।

**(ii)** काव्यशब्दोऽयं गुणालङ्कारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते। भक्त्या तु शब्दार्थवचनमात्रोऽत्र गृह्यते। - इति वामनः।

**(iii)** शब्दार्थौ काव्यम् - इति रुद्रटः।

**(iv)** शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालङ्कारौ काव्यम्। - इति वाग्भट्टः।

**(v)** अदोषौ सगुणौ सालङ्कारौ च शब्दार्थौ काव्यम् - इति हेमचन्द्रः।

**(vi)** गुणालङ्कारसहितौ शब्दार्थौ दोषवर्जितौ।
गद्यपद्योभयमयं काव्यं काव्यविदोविदुः।। - इति विद्यानाथः।

**(vii)** शब्दार्थौ वपुरस्य तत्र विबुधैरात्माभ्यधायि ध्वनिः। - इति विद्याधरः।

**(viii)** शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।। - इति कुन्तकः।

**(ix)** काव्यं विशिष्टशब्दार्थसाहित्यं सदलङ्कृति - इति क्षेमेन्द्रः।

**(x)** सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम् - इति आनन्दवर्धनः।

**(xi)** तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वपि - इति मम्मटः।

उक्तेषु एषु लक्षणेषु शब्दार्थयोः उभयोरेव काव्यत्वेन स्फुटम् उपन्यासः। शब्दमाश्रित्य कानिचन लक्षणानि अधोनिर्दिष्टानि, दृश्यन्ताम् -

**(i)** तैः शरीरं काव्यनामलङ्काराश्च दर्शिताः।
शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।। - इति दण्डीः।

**(ii)** इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणावद्दोषवर्जितम्।। - इति अग्निपुराणकारः।

**(iii)** आस्वादजीवातु पदसन्दर्भः काव्यम्। - इति चण्डीदासः।

**(iv)** निर्दोषा लक्षणावती सरीतिर्गुणभूषिता।
सालङ्काररसानेकवृत्तिर्वाक्काव्यनामभाक्।। - इति जयदेवः।

**(v)** काव्यं रसादिमद् वाक्यं श्रुतं सुखविशेषकृत्। - इति शौद्दोदनिः।

**(vi)** वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। - इति विश्वनाथः।

**(vii)** रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। - इति पण्डितराजो जगन्नाथः।

एतादृशेषु काव्यलक्षणेषु सहृदयहृदयाह्लादकस्य अर्थस्य स्वीकृतौ सत्यामपि शब्दस्यैव प्राधान्येन काव्त्वेनोपन्यासो भवति।

किन्तु एषु सर्वेषु काव्यलक्षणेषु काव्यप्रकाशकर्त्तुः आचार्यमम्मटस्य काव्यलक्षणम् इदानीं यावत् विदत्सु काव्यसमालोचकेषु च सादरं स्वीकृतमस्ति प्रथमस्तु काव्यप्रकाशस्यारम्भे मङ्गलाचरणे कवेः भारतेः वर्णयन् मम्मटः काव्यस्वाभावस्य साधुचित्रणं करोति। स कथयति यत् -

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

वृत्तिभागे ग्रन्थकारः कारिकां स्पष्टीकुर्वन् व्यनक्ति यत् नियतिशक्त्या नियतरूपा सुखदुःखमोहस्वभावा परमाण्वाद्युपादानकर्मादिसहकारिकारणपरतन्त्रा षड्रसा, न च हृद्यैव तैः, तादृशी ब्रह्मणो निर्मितिर्निर्माणम्। एतद्विलक्षणा तु कविवाङ्निर्मितिः। अतएव। जयति। जयत्यर्थेन च नमस्कार आक्षिप्यत इति तां प्रत्यस्मि प्रणत इति लभ्यते। अस्मिन् मङ्गलश्लोके काव्यस्वरूपसामग्रयः स्पष्टमेव प्रतिभान्ति। कविभारतेः वैशिष्ट्यं प्रतिपादयन् आचार्यमम्मटः कथयति यत् कविनिर्मितिरूपम् काव्यम् नियतिकृतनियमरहितमस्ति अर्थात् सामान्ये जगति

कमलबीजादेव कमलम् जले एव जायते किन्तु काव्यजगति मुखकमलेऽपि नेत्रकमलद्वयम् कविकृतम् भवति। काव्यम् ह्लादैकमयं भवति अर्थात् यथा ब्रह्मणः विधातुः वा सृष्टौ सुखस्य दुःखस्य च अस्तित्वं भवति किन्तु काव्यं तु आनन्ददायकमेव। पुनश्च ईश्वरस्य निर्माणं सृष्टिः वा अन्यपरतन्त्रा भवति अर्थात् कमलबीजादेव कमलम् आम्रबीजाद् आम्रं च अत्र दृश्यते। जीवात्मनः पूर्वसञ्चितकर्मानुसारम् एव विविधशरीरेण सम्बन्धः सम्भवति, न तत्रान्यथा कर्त्तुं विधातुः स्वातन्त्र्यम्। तस्य सृष्टिः कारणकार्यैः सम्बद्धः। किन्तु काव्ये कविकर्मणि वा कवेर्विधानस्वातन्त्र्यम् भाति अर्थात् कविः कुत्रापि यत् किमपि स्वप्रतिभया स्रष्टुं स्वतन्त्रः अतः ब्रह्मसृष्ट्यापेक्षा कविसृष्टिः उत्कर्षशालिनी वर्तते। परमेश्वरस्य स्रष्टुर्वा सृष्टौ षड् एव रसाः यथा मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तविराजमानाः सन्ति। सर्वे रसाः मनुष्याणां कृते न मनोरमाः यथा कटुरसः तिक्तरसो वा। किन्तु कवेः सृष्टौ काव्ये वा सर्वमनोरमाः शृङ्गारादिनवरसाः विद्यमानाः भवन्ति अतएव कथ्यते - नवरसरुचिरां इयं कविभारती।

अस्मिन् मङ्गलश्लोके काव्यनिरूपकघटकानां प्रतीतिः स्पष्टमेव प्रतिभाति। किन्तु आचार्यमम्मटस्य विशिष्टकाव्यलक्षणमस्ति -

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।

आचार्यः मम्मटः ध्वनिवाद्याचार्यः। ध्वनिसिद्धान्तस्य पुनर्प्रतिष्ठापकाचार्यः। 'रसध्वनिरेव काव्यस्यात्मा' इत्यस्य मतस्य प्रबल समर्थकः। अतएव रसध्वनिवादस्यालोके एव आचार्यस्य 'काव्यलक्षणम्' अस्ति।

अस्मिन् विशिष्टकाव्यलक्षणे 'तत्' इति पदस्याशयः 'काव्यम्' इत्यस्ति; अदोषौ, सगुणौ, अनलङ्कृती इति एतानि पदानि 'शब्दार्थौ' इत्यस्य विशेषणानि सन्ति। 'शब्दार्थौ' पदमिदम् प्रथमविभक्तेः द्विवचने, अतएव अस्य पदस्य विशेषणान्यपि द्विवचने एव सन्ति। अत्र अविद्यमानः दोषः (न दोषः) ययोः तौ इति अदोषौ, गुणेन सह विद्यमानौ इति सगुणौ, अविद्यमाना अलङ्कृतिः (न अलङ्कृतिः) ययौः तौ इति अनलङ्कृती च भवन्ति।

मम्मटस्य काव्यलक्षणस्यालोचना साहित्यदर्पणकारेण पण्डितराजजगन्नाथेन चापि कृता। विश्वनाथस्यालोचनायां वस्तुतः आचार्यमम्मटस्याभिप्रायस्य आलोचना न दृश्यते अपितु मम्मटस्याभिप्रायस्य गोपनं, प्रकाशनं, समर्थनं वा तत्र सञ्जातम्। नागेशभट्टः पण्डितराजस्यालोचनायाः समर्थम् उत्तरम् दत्तवान्।

अत्र 'अदोषौ' इत्यनेन पदेन सामान्यतः दोषराहित्यं बुद्ध्यते। दोष द्विविधः नित्यानित्यश्च। तत्र च्युतसंस्कारतादिनित्यदोषः, अनित्यदोषस्तु श्रुतिकटुत्वादिः। यतो हि श्रुतिकटुत्वादिः शृङ्गारादिवर्णनप्रसङ्गे दोषोऽस्ति रसापकर्षकत्वात्, किन्तु सोऽपि दोषः वीरभयानकादिरसवर्णनप्रसङ्गे रसोपकर्षकत्वाददोषः। अतः अत्र श्रुतिकटुत्वादि अनित्यदोषः भवति। अस्मिन् सन्दर्भे नित्यदोषः हेयः यतो हि नित्यदोषः सर्वत्र रसापकर्षकत्वाद्। अतः काव्ये रसापकर्षकता मा भूत् इति काव्यकृद्ध्यानं रक्षेदित्यभिप्रायः। दोषस्य स्वरूपम् प्रकटयन् काव्यप्रकाशकारेण कथितम् -

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः।।

वृत्तिभागे स कथयति यत् - हतिरपकर्षः। शब्दाद्या इत्याद्यग्रहणाद् वर्णरचने।

अन्यत्रापि दोषविषयं वर्णयन् कथ्यते - काव्यापकर्षकाः (रसापकर्षकाः) दोषाः।

गुणस्वरूपविषये मम्मटः कथयति यत् -

ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः।।

अर्थात् गुणाः शौर्यादयरिव मन्यन्ते। आचार्यवामनदृष्ट्या गुणस्य दशप्रकाराः भवन्ति, किन्तु आचार्यमम्मटः त्रिषु एव गुणेषु अर्थात् माधुर्यौजप्रसादेषु वामनप्रतिपादितदशानेवगुणान् अन्तर्भावयति - माधुर्यौजप्रसादाख्यास्ते न पुनर्दश। कारणं निरूपणयन् स कथयति -

केचिदन्तर्भवन्त्येषु दोषत्यागात्परे श्रिताः।
अन्ये भजन्ति दोषत्वं कुत्रचिन्न ततो दश।।

गुणाः शब्दार्थद्वारा काव्यात्मनं रसं उत्कर्षं कुर्वन्ति, इति गुणवत्तापि काव्येऽपेक्षिता इत्यत्र 'सगुणौ' इत्यस्य पदस्य अभिप्रायः।

अलङ्कारस्य स्वरूपं प्रतिपादितं कुर्वन् मम्मटस्योक्तिरस्ति -

उपकुर्वन्ति तं सन्तं योऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।

वृत्तिभागे स कथयति - ये वाचकवाच्यलक्षणाङ्गातिशयमुखेन मुख्यं रसं सम्भविनमुपकुर्वन्ति ते कण्ठापङ्गानामुत्कर्षधानद्वारेण शरीरिणोऽपि उपकारका हारादय इवालङ्काराः। यत्र तु नास्ति रसस्तत्रोक्तिवैचित्र्यमात्रपर्यवासिनः। क्वचित्तु सन्तमपि नोपकुर्वन्ति।

स्पष्टमेव यत् अलङ्कारः कटकादिवत् भवति। कटकादयोऽलङ्काराः शरीरं भूषयन्ति, तथा च शरीरद्वाराशरीरिणं यथा भूषयन्ति तद्वत् शब्दालङ्काराः अर्थालङ्काराश्च काव्यात्मानं रसम् उपकुर्वन्ति। अनुप्रासादयः शब्दालङ्काराः उपमादयश्च अर्थालङ्काराः भवन्ति। अलङ्कारारपि काव्ये सर्वत्र अपेक्षिताः सन्ति किन्तु क्वचित्तु स्फुटालङ्कारविरहेऽपि काव्यत्वहानिः क्षतिः वा न भवति। अस्याशयः अस्ति यत्र व्यङ्गस्य अथवा रसस्य स्थितिः विद्यमाना भवति तत्र स्पष्टालङ्काररहितेऽपि काव्यत्वक्षतिः न जायते इत्यत्र 'अनलङ्कृती' पदस्याभिप्रायः। स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः - कथनस्य अभिप्रायम् आचार्यः एकेनोदाहरणेन स्पष्टं करोति। उदाहरणमस्ति -

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा-
स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढ़ाः कदम्बानिलाः।
सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ
रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते।।

ग्रन्थकारः कथयति यत् अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः। रसस्य च प्राधान्यान्नलङ्कारता। अर्थात् अत्र कोऽपि स्पष्टालङ्कारो नास्ति। रसस्तु अत्र

प्राधान्यरूपेण वर्तते। रसप्राधान्यत्वाद् रसवदालङ्कारः अपि अत्र न विद्यते। अलङ्काराभावेऽपि अत्र काव्यत्वहानिः न भवति।

एवं शब्दार्थशरीरे काव्ये दोषाभावः, गुणसद्भावः, अलङ्कारस्य चापि बहुधा सद्भावः कदाचिदभावः सर्वतोभावेन रसस्यसद्भावः एव मम्मटस्य काव्यलक्षणस्य साररूपः।

# गणितशास्त्रीयव्याख्यानस्य भाषारूपेण संस्कृतम्
# (Sanskrit as a language for mathematical discourse)

डॉ. श्यामसुन्दरशर्मा
सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः
देशबन्धुमहाविद्यालयः, देहलीविश्वविद्यालयः
कालकाजी, नवदेहली - 110019

भूमिका

संस्कृतं केवलं काव्यस्य वा धर्मस्य भाषा नास्ति, अपितु एषा गणितस्य अपि आधारभूता अस्ति। गणितं विज्ञानस्य प्रमुखं आधारशिलायाः रूपेण प्रसिद्धं वर्तते। प्राचीनभारतीयसंस्कृतग्रन्थाः गणितविज्ञानस्य विविधक्षेत्रेषु महत्त्वपूर्णं योगदानं दत्तवन्तः। संस्कृतभाषायां गणितस्य महत्त्वं प्राचीनकालात् आरभ्य दृश्यते। भारतीयगणितज्ञाः यथा आर्यभट्टः, ब्रह्मगुप्तः, भास्कराचार्यः, महावीराचार्यः, श्रीधराचार्यः च संस्कृतभाषायांगणितीयसिद्धान्तान् प्रतिपाद्य आधुनिकगणितस्य आधारं निर्मितवन्तः। गणनापद्धतिः केवलं संख्यानां गणनायै उपयोगी नास्ति, अपितु ज्योतिषशास्त्रस्य, वास्तुशास्त्रस्य, आयुर्वेदस्य, अर्थशास्त्रस्य दर्शनस्य चापि मूलाधाररूपेण स्थितम्। वेदकालात् आरभ्य आधुनिककालपर्यन्तं गणितस्य उत्तरोत्तरविकासः संस्कृते दृश्यते।

गणितस्य विविधक्षेत्रेषु उपयोगः

१. ज्योतिषशास्त्रे - ग्रहाणां गतिः, कालगणना, नक्षत्रज्ञानं इत्यादिषु गणितस्य मुख्यभूमिका अस्ति।

२. वास्तुशास्त्रे - मन्दिरनिर्माणे, नगरयोजनायां च गणितीयनियमाः प्रयुक्ताः।

३. आयुर्वेदे - औषधपरिमाणं, मिश्रणविधिः, औषधनिर्माणे गणितस्य उपयोगः दृश्यते।

४. व्याकरणे - पाणिनीयव्याकरणे सूत्रसंख्यानां तथा संख्यानुक्रमस्य गणितसंबद्धत्वं दृश्यते।

भारतीयगणितस्य प्राचीनमूलानि

भारतस्य गणितपरम्परा अत्यन्तं प्राचीनम् अस्ति। वेदेषु गणितस्य प्राचीनतमं उल्लेखः दृश्यते। वेदेषु, विशेषतः यजुर्वेदे तथा अथर्ववेदे, संख्याः, मापनविधयः, तथा गणनापद्धतयः उल्लिखिताः सन्ति। विशेषतः यजुर्वेदे गणितस्य प्रयोगः यज्ञकुण्डनिर्माणे, छन्दःविज्ञाने, कालगणनायां च दृश्यते। शुल्बसूत्रेषु (आपस्तम्ब, बौधायन, कात्यायन इत्यादिषु) रेखागणितस्य वर्णनं दृश्यते।

प्रमुखाः गणिताचार्याः

१. बोधायान: - बौधायनशुल्बसूत्रे पायथागोरसस्य सिद्धान्तस्य (a^2 + b^2 = c^2) प्रथमं उल्लेखः दृश्यते।

२. आर्यभटः (५वीं शताब्दी) - आर्यभटीयं ग्रन्थे दशमलवपद्धतिः, बीजगणितं, त्रिकोणमिति, तथा ग्रहचालनमिति चर्चिता।

३. ब्रह्मगुप्तः (७वीं शताब्दी) - ब्रह्मगुप्तस्य ग्रन्थे 'ब्रह्मस्फुटसिद्धान्ते' शून्यस्य परिभाषा, ऋणसङ्ख्यानां प्रयोगः, तथा क्षेत्रफलस्य गणनापद्धतिः विस्तृतरीत्या विवृताः।

४. भास्कराचार्यः (१२वीं शताब्दी) - लीलावती, बीजगणितं इत्यादि ग्रन्थेषु समाविष्टं यत्, गणितस्य विविधप्रयोगाः, विशेषतः क्रमश्रृङ्खला, कल्पितसंख्याः, इत्यादीनां विवेचनं अस्ति।

५. वराहमिहिरः (६वीं शताब्दी) - ज्योतिषशास्त्रे, विशेषतः त्रिकोणमितौ, गणितस्य उपयोगं कृतवान्।

# बौधायनः

भारतीयगणितस्य समृद्धइतिहासे बौधायनशुल्बसूत्रम् अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं ग्रन्थम् अस्ति। एषः ग्रन्थः प्राचीनभारतीय-गणितज्ञेन बौधायनेन विरचितः। शुल्बसूत्राणि विशेषतः यज्ञवेदीनां निर्माणाय आवश्यकानि गणितीयसिद्धान्तान् प्रतिपादयन्ति। एतेषु सूत्रेषु गणितस्य मूलभूतनियमाः, क्षेत्रफलविधयः, तथा ज्यामितीयसिद्धान्ताः प्रतिपादिताः। बौधायनशुल्बसूत्रे पायथागोरससिद्धान्तस्य प्रतिपादनं दृष्टव्यं भवति। यद्यपि एषः सिद्धान्तः पाश्चात्त्यगणितज्ञेन पायथागोरसेन प्रतिपादितः इति सामान्यतः ज्ञायते, किन्तु बौधायनशुल्बसूत्रे अस्य सिद्धान्तस्य प्राचीनतमं रूपं दृष्टुं शक्यते। अस्य ग्रन्थस्य महत्त्वं केवलं धार्मिकविधिषु न तु आधुनिकगणिते अपि दृश्यते।

## बौधायनशुल्बसूत्रस्य परिचयः

बौधायनः प्राचीनभारतस्य गणितविद्यासु प्रमुखस्थानं धारयति। बौधायनशुल्बसूत्रं बौधायनाचार्येण लिखितं, यः प्राचीनकालस्य विख्यातः गणितज्ञः आसीत्। अयं ग्रन्थः ईसापूर्वं ८०० तमे शतके विरचितः इति गणितविदः मन्यन्ते। अत्र विविधज्यामितीयनियमाः, क्षेत्रफलनिर्णयः, वर्गमूलगणना, तथा अनेके संख्यात्मकविषयाः प्रतिपादिताः। अयं ग्रन्थः केवलं गणितस्य न अपितु वास्तुशास्त्रस्य अपि आधारभूतः अस्ति। बौधायनशुल्बसूत्रे महत्त्वपूर्णाः विषयाः – १. यज्ञवेदीनिर्माणाय गणनापद्धतयः। २. ज्यामितीयसिद्धान्तानां निरूपणम्। ३. पायथागोरससिद्धान्तस्य प्रतिपादनम्। ४. संख्यात्मकगणनापद्धतयः।

## पायथागोरससिद्धान्तस्य निरूपणम्

बौधायनशुल्बसूत्रे पायथागोरससिद्धान्तस्य प्रतिपादनं स्पष्टं दृष्टुं शक्यते। सूत्रे लिखितम्–

*"दीर्घचतुरस्रस्य क्षेत्रे कर्णप्रमाणं पृथग् भूते कृत्वा तत् समचतुरस्रयोः योगः भवति।"*

अस्य अर्थः यः – यदि कोणयुक्तचतुर्भुजस्य (right-angled triangle) कर्णं ज्ञातुं इच्छामः, तर्हि अन्ययोः भुजानां वर्गयोगः कर्णस्य वर्गसमः भवति ।

गणितीयरूपेण,

$c2 = a2+b2$

यत्र,

- c = कर्णः (hypotenuse)
- a,b = लम्बबाहुः तथा आधारबाहुः (legs of the right triangle)

बौधायनसिद्धान्तस्य ऐतिहासिकमहत्त्वम्

१. पाश्चात्त्यगणितस्य पूर्वरूपम् – एषः सिद्धान्तः पायथागोरसनामकस्य गणितज्ञस्य सिद्धान्तस्य प्राचीनरूपमस्ति।

२. भारतीयगणितस्य समृद्धपरम्परा – अस्य सिद्धान्तस्य उल्लेखः भारतीयगणितस्य गहनं ज्ञानं सूचयति।

३. यज्ञवेदीनिर्माणे प्रयोगः – बौधायनशुल्बसूत्रे अस्य सिद्धान्तस्य उपयोगः यज्ञवेदीनिर्माणाय वर्णितः।

पायथागोरससिद्धान्तस्य प्रयोगः

१. यज्ञवेदीनिर्माणे – समतलवेदीनां निर्माणे क्षेत्रफलगणना अत्यावश्यकम्।

२. वास्तुशास्त्रे – प्राचीनभारतस्य भवननिर्माणे अयं सिद्धान्तः प्रयुक्तः।

३. खगोलविज्ञाने – ग्रहगणनायां ज्यामितीयसिद्धान्तानां प्रयोगः दृष्टः।

बौधायनशुल्बसूत्रस्य ज्यामितीयमहत्त्वम्

बौधायनशुल्बसूत्रे यज्ञवेदीनां सम्यक् निर्माणार्थं अनेके महत्त्वपूर्णाः ज्यामितीयनियमाः दत्ताः - १. समकोणत्रिभुजस्य गणना। २. क्षेत्रफलगणनाय सूत्राणि। ३. वृत्तस्य तथा

चतुरस्रस्य परिमाणनिर्धारणम्। ४. समचतुर्भुजस्य विकसनप्रक्रिया। एते नियमाः केवलं धार्मिकविधिषु न अपि तु वास्तुशास्त्रे, नगरयोजनायाम्, भवननिर्माणे, तथा खगोलशास्त्रे अपि प्रयुक्ताः।

बौधायनशुल्बसूत्रे संख्यात्मकमहत्त्वम्

१. वर्गमूलस्य तथा घनमूलस्य समीपमाननिर्धारणम्।

२. संख्यानां गुणोत्तरमालानां विवेचनम्।

३. दशमानपद्धतेः मूलभूतं स्वरूपम्।
एते नियमाः आधुनिकगणिते अपि प्रयुक्ताः दृश्यन्ते ।

बौधायनशुल्बसूत्रस्य आधुनिकप्रभावः

१. प्राचीनभारतीयगणितस्य पश्चिमीयगणिते प्रभावः।

२. वास्तुशास्त्रे, नगरयोजनायां, तथा स्थापत्यशास्त्रे बौधायनस्य सिद्धान्तानां उपयुक्तिः।

३. ज्यामितीयगणिते क्षेत्रफलनिर्णयानां सूत्राणां प्रयोगः।

४. आधुनिकसंख्याशास्त्रे वर्गमूलनिर्धारणप्रणालीनां योगदानम्।

बौधायनशुल्बसूत्रं केवलं वैदिकसंस्कृतिः न, अपितु आधुनिकगणितस्य महत्त्वपूर्णः आधारः अपि अस्ति। बौधायनशुल्बसूत्रे प्रतिपादितः पायथागोरससिद्धान्तः भारतीयगणितस्य एकं महत्त्वपूर्णं अंशम्। यद्यपि पाश्चात्त्यगणिते एषः सिद्धान्तः पायथागोरसेन प्रतिपादितः इति प्रसिद्धः, तथापि बौधायनशुल्बसूत्रे अस्य सिद्धान्तस्य उल्लेखः पाश्चात्त्यगणितस्य प्राचीनपूर्वरूपत्वं सूचयति। अत्र ज्यामितीयप्रयोगाः स्पष्टरूपेण दृश्यन्ते, तथा संख्यानां गूढतत्त्वानि प्रतिपादितानि। अतः बौधायनशुल्बसूत्रस्य विश्वगणिते महत्त्वं अपरिमितमप्रतिश्चास्ति।

# आर्यभटः

भारतीयगणिते आर्यभटस्य योगदानं अतिशय महत्त्वपूर्णम् अस्ति। सः ख्यातः गणितज्ञः एवं खगोलशास्त्रज्ञः आसीत्। तस्य जन्म ४७६ ईसवीतमेऽभवत्, तथा सः पाटलिपुत्रे निवसति स्म। तस्य प्रमुखग्रन्थः "आर्यभटीयम्" नामकः अस्ति, यत्र गणितस्य, ज्योतिषस्य च विविधविषयाः सम्यक् विवृताः।

आर्यभटस्य ग्रन्थाः

आर्यभटेन विरचितं प्रमुखं ग्रन्थं "आर्यभटीयम्" अस्ति। अस्मिन ग्रन्थे चारिः भागाः सन्ति – दशगीतिका, गणितपादः, कालक्रियापादः, गोलपादः च। अस्मिन् ग्रन्थे दशमलवपद्धतिः, शून्यस्य महत्त्वं, त्रिकोणमिति, ग्रहाणां गतिः इत्यादीनां वर्णनं दृश्यते।

गणिते योगदानम्

१. दशमलवपद्धतिः - आर्यभटः प्रथमं दशमलवपद्धतेः सिद्धान्तं विस्तरेण प्रतिपादितवान्।

२. शून्यस्य महत्त्वम् - यद्यपि शून्यस्य प्रयोगः पूर्वमपि आसीत्, किन्तु आर्यभटेन तस्य गणनायां व्याख्या कृताः।

३. त्रिकोणमिति - कोटिज्या, उत्कीर्णज्या, इत्यादीनां प्रयोगः तेन प्रदर्शितः।

४. ग्रहगणना - तस्य गणितीयसमीकरणानि आजपि खगोलशास्त्रे प्रयुक्तानि सन्ति।

ज्योतिषे योगदानम्

१. ग्रहाणां गतिः - आर्यभटेन तारेषु, सूर्ये, चन्द्रे च गतिसंबद्धं गणितमूलकं सिद्धान्तः प्रतिपादितः।

२. पृथिव्याः परिभ्रमणम् - सः प्रथमः गणितज्ञः आसीत्, यस्य मतानुसारं पृथिवी स्वयं भ्रमति, न तु सूर्यम्।

३. सूर्यग्रहणचन्द्रग्रहणव्याख्या - तेन वैज्ञानिकरीत्या ग्रहणानां कारणानि विवृतानि।

अन्येषु क्षेत्रेषु योगदानम्

१. कालगणना - कालस्य गणनायां विशेष योगदानं कृतवान्।

२. रेखागणितम् - क्षेत्रफलम्, परिधिः, आयतनं च गणितरीत्या निर्दिष्टम्।

आर्यभटस्य योगदानं गणितस्य तथा ज्योतिषस्य इतिहासे महत्त्वपूर्णम् अस्ति। तस्य गणितसिद्धान्ताः अद्यापि अध्ययनार्थं प्रयुक्ताः। अतः सः आधुनिकगणितस्य तथा खगोलशास्त्रस्य प्रेरणास्रोतः इति कथ्यते।

## ब्रह्मगुप्तः

भारतीयगणिते ब्रह्मगुप्तस्य योगदानम् अतीव महत्वपूर्णम् अस्ति। सः सप्तमशताब्दे जन्म प्राप्तवान्, तथा उज्जयिन्याम् स्थितः गणितज्ञः आसीत्। तेन विरचितं प्रमुखं ग्रन्थं "ब्रह्मस्फुटसिद्धान्तः" नामकः अस्ति, यत्र गणितस्य तथा ज्योतिषस्य विविधविषयाः सम्यक् विवृताः। ब्रह्मगुप्तः शून्यस्य परिभाषां दत्त्वा, ऋणसङ्ख्यायाः नियमान् निर्दिष्टवान्, तथा बीजगणितस्य मूलतत्त्वानि स्थापयामास।

ब्रह्मगुप्तस्य ग्रन्थाः

ब्रह्मगुप्तस्य प्रमुखग्रन्थौ द्वौ स्तः - "ब्रह्मस्फुटसिद्धान्तः" तथा "खण्डखाद्यकः"। एते ग्रन्थाः विशेषतः गणितस्य, खगोलशास्त्रस्य, तथा कालगणनायाः विषये विस्तृतं वर्णनं कुर्वन्ति।

गणिते योगदानम्

१. शून्यस्य महत्त्वम् - ब्रह्मगुप्तः प्रथमः गणितज्ञः आसीत्, यस्य ग्रन्थे शून्यस्य परिभाषा तथा तदन्वयि नियमाः प्रतिपादिताः। तेन शून्यस्य संख्यासम्बद्ध गणितीयक्रियाः निर्दिष्टाः।

२. ऋणसङ्ख्याः उपयोगः - ब्रह्मगुप्तेन ऋणसङ्ख्यानां गणनापद्धतिः निर्दिष्टा, यस्मिन् ऋणसंख्यायाः गुणनं, योगः, तथा अन्यक्रियाः स्पष्टीकृताः।

३. बीजगणितम् - तस्य ग्रन्थे बीजगणितीय समीकरणानि तथा तेषां समाधानप्रणाली प्रतिपादिता। विशेषतः, रैखिकसमीकरणानि तथा द्विघातसमीकरणानां समाधानं विस्तरपूर्वकं प्रतिपादितम्।

४. रेखागणितम् - क्षेत्रफलम्, त्रिभुजस्य तथा वृत्तस्य गणनापद्धतिः विस्तृतरीत्या विवृताः।

५. गुरुत्वाकर्षणसिद्धान्तः - ब्रह्मगुप्तेन गुरुत्वस्य व्याख्या कृताः, यत्र वस्तूनां पतनस्य कारणं पृथिव्याः आकर्षणशक्तिः इति निर्दिष्टम्।

खगोलशास्त्रे योगदानम्

१. ग्रहगणना - ब्रह्मगुप्तेन ग्रहाणां गतिः, कालगणना, चन्द्रग्रहणसूर्यग्रहणविषयक गणनाः प्रतिपादिताः।

२. पृथिव्याः स्वरूपम्- तेन पृथिवीं गोलाकृतिः इति सिद्धान्तः प्रतिपादितः।

३. नक्षत्रीयगणना - खगोलशास्त्रे ब्रह्मगुप्तस्य गणितीयपद्धतिः अद्यापि प्रयुक्ताः।

४. कालगणना - ब्रह्मगुप्तेन तिथीनां गणनापद्धतिः प्रतिपादिता, यया वर्षगणना, मासगणना, तथा दिनगणना सम्यक् निर्धारितुं शक्यते।

अन्येषु क्षेत्रेषु योगदानम्

१. वास्तुशास्त्रे - भवननिर्माणे गणितीयनियमाः प्रयुक्ताः।

२. आयुर्वेदे - औषधनिर्माणे परिमाणगणना तथा मिश्रणविधिः निर्दिष्टः।

ब्रह्मगुप्तस्य योगदानं गणिते, ज्योतिषे, तथा विज्ञानक्षेत्रे अतीव महत्वपूर्णम्। तस्य गणितसिद्धान्ताः अद्यापि अध्ययनार्थं प्रयुक्ताः। सः आधुनिकगणितस्य तथा खगोलशास्त्रस्य प्रेरणास्रोतः इति कथ्यते।

## भास्कराचार्यः

भारतीयगणिते भास्कराचार्यस्य योगदानं अत्यन्तं महत्वपूर्णम् अस्ति। सः द्वादशशताब्दे जन्म प्राप्तवान्, तथा कर्नाटकमण्डले विज्जल नामके स्थले निवसति स्म। तस्य प्रमुखग्रन्थः "सिद्धान्तशिरोमणिः" नामकः अस्ति, यत्र गणितस्य, ज्योतिषस्य च विविधविषयाः सम्यक् विवृताः।

भास्कराचार्यस्य ग्रन्थाः

भास्कराचार्यस्य प्रमुखः ग्रन्थः "सिद्धान्तशिरोमणिः" चत्वारः भागाः अस्ति – लीलावती, बीजगणितम्, गोलाध्यायः, तथा ग्रहगणितम्।

गणिते योगदानम्

१. लीलावती - अस्मिन ग्रन्थे अंकगणितस्य विविधविषयाः वर्णिताः, यथा क्रमश्रृङ्खला, घातमूलम्, क्षेत्रफलम् इत्यादयः।

२. बीजगणितम् - भास्कराचार्येण बीजगणिते द्विघातसमीकरणानां समाधानप्रणाली, अज्ञातसंख्यानां नियमनम्, तथा सङ्कलनविधयः प्रतिपादिताः।

३. गुरुत्वाकर्षणसिद्धान्तः - भास्कराचार्यः प्रथमः गणितज्ञः आसीत्, यस्य मतानुसारं पृथिवी गुरुत्वशक्त्या आकाशस्थं वस्तुं आकर्षति।

४. रेखागणितम् - क्षेत्रफलम्, त्रिभुजस्य, वृत्तस्य गणनापद्धतिः विस्तृतरीत्या विवृताः।

५. कालनिर्णयः - ग्रहाणां गतिः, चन्द्रसूर्ययोः ग्रहणगणना, तथा कालमापनप्रणाली अपि तेन प्रतिपादिता।

खगोलशास्त्रे योगदानम्

१. ग्रहगणना - भास्कराचार्येण ग्रहाणां गतिः, कालगणना, चन्द्रग्रहणसूर्यग्रहणविषयक गणनाः प्रतिपादिताः।

२. पृथिव्याः स्वरूपम् - तेन पृथिवीं गोलाकृतिः इति सिद्धान्तः प्रतिपादितः।

३. नक्षत्रीयगणना - खगोलशास्त्रे भास्कराचार्यस्य गणितीयपद्धतिः अद्यापि प्रयुक्ताः।

४. कालगणना भास्कराचार्येण तिथीनां गणनापद्धतिः प्रतिपादिता, यया वर्षगणना, मासगणना, तथा दिनगणना सम्यक् निर्धारितुं शक्यते।

अन्येषु क्षेत्रेषु योगदानम्

१. वास्तुशास्त्रे - भवननिर्माणे गणितीयनियमाः प्रयुक्ताः।

२. आयुर्वेदे - औषधनिर्माणे परिमाणगणना तथा मिश्रणविधिः निर्दिष्टः।

भास्कराचार्यस्य योगदानं गणिते, ज्योतिषे, तथा विज्ञानक्षेत्रे अतीव महत्वपूर्णम्। तस्य गणितसिद्धान्ताः अद्यापि अध्ययनार्थं प्रयुक्ताः। सः आधुनिकगणितस्य तथा खगोलशास्त्रस्य प्रेरणास्रोतः इति कथ्यते।

## वराहमिहिरः

भारतीयगणिते वराहमिहिरस्य योगदानं अतीव महत्वपूर्णम् अस्ति। सः षष्ठशताब्दे अवतरितः आसीत्, तथा उज्जयिन्यां स्थितः गणितज्ञः एवं ज्योतिषविद् आसीत्। तस्य

प्रमुखग्रन्थः "बृहत्संहिता" नामकः अस्ति, यत्र गणितस्य, खगोलशास्त्रस्य, तथा ज्योतिषस्य विविधविषयाः सम्यक् विवृताः।

वराहमिहिरस्य ग्रन्थाः

वराहमिहिरस्य प्रमुखग्रन्थाः त्रयः सन्ति – "पञ्चसिद्धान्तिका", "बृहत्संहिता", तथा "बृहत्जातक"। एते ग्रन्थाः विशेषतः गणितस्य, खगोलशास्त्रस्य, तथा ज्योतिषस्य विषये विस्तृतं वर्णनं कुर्वन्ति।

गणिते योगदानम्

१. त्रिकोणमिति - वराहमिहिरः प्रथमः गणितज्ञः आसीत्, यस्य ग्रन्थेषु त्रिकोणमितीयसिद्धान्ताः प्रतिपादिताः। तेन ज्या, कोटिज्या, उत्क्रमज्या, इत्यादीनां गणना तथा उपयोगः वर्णितः।

२. रेखागणितम् - क्षेत्रफलम्, त्रिभुजस्य, वृत्तस्य गणनापद्धतिः विस्तृतरीत्या विवृताः।

३. ग्रहगणितम् - तेन ग्रहाणां गतिः, ग्रहणगणना, तथा नक्षत्रीयगणितम् अत्यन्तं सूक्ष्मतया प्रतिपादितम्।

४. अंकगणितम् - वराहमिहिरेण अंकगणितस्य विविधनियमाः प्रतिपादिताः, यथा गुणनफलम्, विभाजनम्, वर्गमूलम्, घनमूलम् इत्यादयः।

५. ज्योतिषगणितम् - तेन ग्रहाणां स्थितिगणना, ग्रहणनियमाः, तथा भूकम्पसंकेताः गणितशास्त्राधारिताः प्रतिपादिताः।

खगोलशास्त्रे योगदानम्

१. ग्रहगणना - वराहमिहिरेण ग्रहाणां गतिः, कालगणना, चन्द्रग्रहणसूर्यग्रहणविषयक गणनाः प्रतिपादिताः।

२. पृथिव्याः स्वरूपम् - तेन पृथिवीं गोलाकृतिः इति सिद्धान्तः प्रतिपादितः।

३. नक्षत्रीयगणना - खगोलशास्त्रे वराहमिहिरस्य गणितीयपद्धतिः अद्यापि प्रयुक्ताः।

४. कालगणना वराहमिहिरेण तिथीनां गणनापद्धतिः प्रतिपादिता, यया वर्षगणना, मासगणना, तथा दिनगणना सम्यक् निर्धारितुं शक्यते।

अन्येषु क्षेत्रेषु योगदानम्

१. वास्तुशास्त्रे - भवननिर्माणे गणितीयनियमाः प्रयुक्ताः।

२. आयुर्वेदे - औषधनिर्माणे परिमाणगणना तथा मिश्रणविधिः निर्दिष्टः।

३. भूकम्पविज्ञानम् - तेन भूकम्पस्य कारणानि गणितशास्त्रीयरीत्या विवृतानि।

वराहमिहिरस्य योगदानं गणिते, ज्योतिषे, तथा विज्ञानक्षेत्रे अतीव महत्वपूर्णम्। तस्य गणितसिद्धान्ताः अद्यापि अध्ययनार्थं प्रयुक्ताः। सः आधुनिकगणितस्य तथा खगोलशास्त्रस्य प्रेरणास्रोतः इति कथ्यते।

उपसंहारः

भारतीयगणिते किञ्चन विशेषत्वं दृश्यते, यथा –

१. शून्यस्य आविष्करणम् - अन्येषु संस्कृतिषु शून्यस्य महत्त्वं ज्ञातं नासीत्, किन्तु भारतीयगणिते शून्यं संख्यापद्धत्याः मूलाधारमिति स्वीकृतम्।

२. दशमलवपद्धतिः - आर्यभटेन तथा अन्यैः ऋषिभिः दशमलवपद्धतिः विकसितः।

३. बीजगणितस्य प्रवर्तनम् - भास्कराचार्येण बीजगणितस्य सैद्धान्तिकमूलानि प्रतिस्थापितानि।

४. त्रिकोणमितीयपरम्परा - भारतस्य गणितज्ञाः कोटिज्या, उत्क्रीर्णज्या, इत्यादीनां प्रयोगं कृतवन्तः। भारतीयगणितस्य परम्परा केवलं प्राचीनं गौरवमात्रं न, अपितु आधुनिकगणितस्य आधारशिलारूपेण स्थितम्। एषा परम्परा केवलं सिद्धान्ततः न, अपि तु प्रयोगतः अपि समृद्धा अस्ति। अतः अस्य परम्परायाः अध्ययनं, अनुसंधानं च अत्यावश्यकं भवति। संस्कृते गणितस्य विकासः केवलं भारतीयेतिहासे न, अपितु सम्पूर्णजगति अपि महत्वपूर्णः। भारतीयगणितज्ञैः प्रतिपादितानि सिद्धान्तानि अद्यापि आधुनिकगणिते उपयुज्यन्ते। एतेषु योगदानं न केवलं प्राचीनसंस्कृते अपितु विश्वगणिते अपि दृश्यते।

सारांशः **(Conclusion)**

संस्कृतभाषायाः वैज्ञानिकविचारयात्रायां अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्थानं अस्ति। संस्कृतं केवलं धार्मिकं भाषा नास्ति, अपितु वैज्ञानिकगणितीयसंवादाय उत्तमं साधनं भवति। विज्ञानं गणितं च निर्देशयितुं उत्कृष्टा भाषा अस्ति। यद्यपि आधुनिक-संशोधनाय भिन्नभाषाः प्रयोगे सन्ति, तथापि संस्कृतस्य वैज्ञानिकविज्ञानगणितशास्त्रयोः उपयोगः विशेषरूपेण प्रासंगिकः अस्ति। भारते प्राचीनकाले संस्कृतं वैज्ञानिकग्रन्थानां भाषा आसीत्। गणितशास्त्रं, खगोलशास्त्रं, भौतिकविज्ञानं, रसायनशास्त्रं, तथा चिकित्साशास्त्रं इत्यादिषु संस्कृतस्य प्रयोगः दृश्यते।

संस्कृतं केवलं सांस्कृतिकीभाषा नास्ति, अपितु एषा विज्ञानसंस्कृतेः आधारभूता अस्ति। यदि आधुनिकयुगे पुनः संस्कृतविज्ञानग्रन्थानां अध्ययनं क्रियते, तर्हि अनेके नूतनाः वैज्ञानिकसिद्धान्ताः सम्यग् अवगन्तुं शक्यन्ते। प्राचीनभारतीयदर्शनं, गणितम्, भौतिकशास्त्रम्, आयुर्वेदः, ज्योतिषशास्त्रम् इत्यादयः विविधविज्ञानानां मूलानि संस्कृतग्रन्थेषु एव प्रतिष्ठितानि सन्ति।

# विषयः - अद्यतनयुगे संस्कृतभाषायाः आवश्यकता

नितिन लोहनी
स्नातकोत्तरस्य छात्रः

## भूमिका

संस्कृतभाषा भारतदेशस्य प्राचीनतमा, महानतमाश्च भाषा अस्ति या केवलं संवादोपायः न, अपितु भारतीयराष्ट्रस्य सांस्कृतिक-दार्शनिक-धार्मिक-बौद्धिकपरम्परायाः मूलाधारभूता संवाहिका च अस्ति। सा भाषा यत्र ज्ञानं, तत्र संस्कृतम् - इत्येव भावः। अद्य यदा वैश्वीकरणं, यान्त्रिकविकासः, चतुर्थः औद्योगिकक्रान्तिः च जगति व्याप्य वर्तमानाः, तदा तेषु सर्वेषु परिवर्तनेषु न केवलं संस्कृतस्य स्थानं चिन्तनीयम्, अपि तु तस्य पुनः प्रतिष्ठापनं आवश्यकम्।

## १. वैज्ञानिकदृष्ट्या संस्कृतस्य उपयोगिता

संस्कृतम् एकं वैज्ञानिकतया संरचितं व्याकरणशास्त्रसमेतं भाषासौष्ठवं वहति। पाणिनिमहर्षिणा रचिते अष्टाध्यायी-व्याकरणे लघुत्वं, नियमबद्धता, तार्किकता च अपूर्वतया दर्शयति। नासा (NASA) इत्यस्याः संस्थायाः अनुशीलनानुसारं अपि संस्कृतम् सर्वाधिकसङ्गणकानुकूला भाषा (most computer-friendly language) इति परिगण्यते। कृत्रिमबुद्धिमत्ता (AI), स्वयंचालितयन्त्रविज्ञानम् (Robotics), सङ्गणकभाषा (Programming languages) इत्यादिषु संस्कृतम् एकं भविष्यदृष्ट्या उपयुक्तं माध्यमं भवितुमर्हति।

## २. सांस्कृतिक-मूल्यसंवर्धनस्य माध्यमम्

भारतीयशास्त्रपरम्परायाम् अधिकतरग्रन्थाः - यथा वेदाः, उपनिषदः, महाभारतम्, रामायणम्, गीता, नाट्यशास्त्रम्, आयुर्वेदः, कामशास्त्रम्, अर्थशास्त्रम् इत्यादयः - संस्कृते एव रचिताः। एते ग्रन्थाः केवलं धार्मिकज्ञानं न, अपितु नैतिकं, सामाजिकं,

राजनैतिकं, आचारशास्त्रीयं च चिन्तनं वहन्ति। संस्कृताध्ययनं नवयुवताम् आदर्शचेतनया, अनुशासनबुद्ध्या च संस्कृतपूर्वकं जीवनमार्गं दर्शयति।

३. मानसिक-आध्यात्मिकविकासे योगदानम्

संस्कृतम् उच्चारणप्रधानया शक्तिमत्या च भाषा अस्ति। तस्य मन्त्राः, स्तोत्राणि, श्लोकाः च जप्यमानाः चेतसः स्थैर्यं, एकाग्रता, स्मृतिवर्धनं, मानसिकशान्तिः च जनयन्ति। वैज्ञानिकशोधानुसारं संस्कृतध्वन्यनुक्रमेण निर्मिताः मन्त्राः मस्तिष्के सकारात्मकस्पन्दनानि उत्पादयन्ति। अतः योगाभ्यासे, ध्यानक्रियायां, मानसोपचारविधौ च संस्कृतम् अत्यावश्यकं साधनं भवति।

४. राष्ट्रयैक्यस्य साधकम्

संस्कृतं भारतस्य भाषासमुदायस्य मूलम् अस्ति। अस्या मातृभूतत्वं हिन्दी, मराठी, बंगाली, गुजराती, उडिया, तेलुगु, कन्नड, तमिल, मलयालम् इत्यादिषु भाषासु द्रष्टव्यम्। एतेषां शब्दसम्पदा, व्याकरणरचना, वाक्यप्रक्रिया च संस्कृतनिष्ठा अस्ति। यदि संस्कृतं शिक्षायाम्, सञ्चारमध्यमेषु च समाविष्टं भवेत्, तर्हि भाषीयविविधता अपि एकतायाः साधनं स्यात्।

५. वैश्विकपटले भारतस्य सांस्कृतिकप्रतिनिधित्वम्

अद्य जागतिकमञ्चे योगः, आयुर्वेदः, ध्यानप्रणाली, वेदान्तचिन्तनं च महतीं ख्यातिं लभन्ते। एषां सर्वेषां मूलं संस्कृते एव प्रतिष्ठितम् अस्ति। अमेरिका, जर्मनी, रशिया, जापान, फ्रान्सदेशेषु अपि संस्कृतशिक्षणं प्रवर्तते। यदि भारतं स्वकीयां सांस्कृतिकसम्पदां प्रस्तुतम् इच्छति, तर्हि संस्कृतम् एव तस्य उपयुक्तमञ्चः। संस्कृतस्य प्रचारप्रसारः भारतस्य सॉफ्टपावरस्य संवर्धनं करोति।

६. शैक्षिक-पैठिकायाम् संस्कृतस्य भूमिका

संस्कृतं शिक्षायाः मूलस्तम्भः भवितुमर्हति। संस्कृतग्रन्थाः न केवलं विषयज्ञानं ददाति, अपितु चिन्तनवृत्तिं, प्रश्नविन्यासं, तर्कशक्तिं च विकसितवन्तः। विद्यालयस्तरे

संस्कृतशिक्षणं विद्यार्थिनां भाषा-प्रवाहता, स्मरणशक्ति, अनुशासनबुद्धिः च वर्धयति। अनुसंधानवृत्त्याः विकासाय संस्कृतवाङ्मयम् अपरिहार्यं साधनं स्यात्।

७. रोजगारविस्तारे सम्भावना

वर्तमानयुगे संस्कृतज्ञेभ्यः नानाविधानि रोजगारोपायाः सुलभाः। यथा - शोधकार्ये, अनुवादे, पाण्डुलिपिसंवर्धने, योग-आयुर्वेदपर्यटनमार्गदर्शने, डिजिटलकन्टेन्टविकासे, संस्कृतनाटकसञ्चालने, आकाशवाणीदूरदर्शनमाध्यमेषु च संस्कृतविशेषज्ञानां आवश्यकताः वर्धमाना दृश्यन्ते। यदि संस्कृतशिक्षणं नवप्रविधिसंयुतं भवेत्, तर्हि एषा भाषा जीविकोपार्जनस्योऽपि साधिका स्यात्।

निष्कर्ष

संस्कृतम् अतीतानां केवलं गौरवस्य प्रतीकं न, अपितु भविष्यस्य नूतनचेतनायाः, वैज्ञानिकविकासस्य, सांस्कृतिकसंतुलनस्य च अधिष्ठानभूतं साधनम् अस्ति। अस्य भाषायाः संरक्षणं, शिक्षायां समावेशनं, नवमाध्यमेषु प्रचारः च अनिवार्यः।

अस्मिन सन्दर्भे वक्तव्यम् - "संस्कृतं जीवनाय, संस्कृतं नवचेतनाय।"

# संस्कृत निबंध
## विषयः - संस्कृतं नाम दैवी वाक्

राघवकुमारझा
स्नातकतृतीयवर्षस्य छात्रः
(प्रतिष्ठापाठ्यक्रमस्य)

संस्कृतं नाम दैवी वागान्वाख्याता महर्षिभिरिति दण्डिना प्रोक्त स्वकीये काव्यदर्शनामके काव्यशास्त्रीये ग्रंथे। अस्मिनुद्धरणे 'दैवी वाग्' इत्युक्त्वा संस्कृतभाषा परिभाष्यते, महर्षिभिरन्वाख्यातेत्यशेन च सा दैवी वाग् विशिष्यते। महर्षिभिरन्वाख्याता दैवी वाक् संस्कृतमित्युच्यत् इत्यस्य तात्पर्यम्। विशेषतः प्रसिद्धेन पाणिनिकात्यायनपतञ्जलिनामकानां मुनिना त्रयेण स्वीयाष्टाध्यायीतत्पूरकवार्तिकतदुभय-व्याख्यातृमहाभाष्याख्यग्रन्थत्रयनिर्माणद्वारा, अपशब्दादिदोषनिवारणपूर्वकान्यदोषपरिष्कारेण संस्कारसमन्विता भाषा संस्कृतभाषा अन्वर्थनाम्नी। पाणिनेरनु पश्चात् वार्तिककृता कात्यायनेन तदनु च महाभाष्यकृता पतञ्जलिना परिष्क्रियमाना क्रमेण, व्यवहृति च नीता संस्कृतनामभाक् सञ्जाता। पाणिने पूर्वमपि जातैरनेकैरन्यैरपि वैयाकरणै कृतसंस्कारेयं भाषासीत्। गार्ग्यव्याडिस्फोटायनशाकटायनादयो दशाधिकवैयाकरणास्तेन स्वकीयाष्टाध्याय्या नामतोऽभिहिता उद्धृतसिद्धान्ताश्च। एभि क्रमेणान्वाख्याता सतत विकासमनुभवन्ती परिवर्तमाना पौनःपुन्येन व्याकरणादीसंस्कारमपेक्षमाणा कालान्तरे पाणिन्यादिभि पुनरपि कृतसंस्कारा बभूव। एवम् ऋषिमुनिभिरनेकश सतत संस्क्रियाणा भाषा स्वभावत एव संस्कृतमिति अन्वर्थं यथार्थं वा नामाधिगतवती।

इयं संस्कृतभाषा दैवी वागिति दण्डिनो वचः। कथमियं दैवी वागित्यस्योत्तरत्वेन वक्तुमं शक्यते यद् विद्वांसो ही देवा देववत् सत्वगुणबाहुल्यल्यात्, विद्वज्जनव्यवहृता चेयं संस्कृतभाषा तस्मादियं देवभाषा देववाणी, सुरगवी, देवगवीत्यादिभिर्नामधेयैर्व्यवह्रियते। वस्तुतः प्राचीनकालदारभ्य अद्यावधि अखण्डजीवनशालिनी जीवितात्वहा संस्कृतभाषा, तस्मादेव 'दैवी'-देवानाममराणामियमिति कथ्यते। कथमन्यथा अजरैरमरैश्च देवैः सह सम्बन्धं सम्पर्कं

वा विनैव अमरजीवनशालिनी स्थिरप्रवाहा भवितुमर्हति। यस्य कस्यापि जीवनप्रवाहोऽवरुद्ध यस्य वा जीवनधारा खण्डिता, कथं तस्य जीवनस्य स्थायित्वममरत्वापरनामक कुतो वा तस्य निर्जरत्व नित्ययौवनवत्व युवाशक्तिमत्वं अस्याः पुनः संस्कृतभाषाया अमरत्वे नित्यजीवितत्वे वा किमतोऽन्यद् बलीय प्रमाण अद्यापि अनुदिन संस्कृते नाट्यकाव्यानि लिख्यन्ते, महाकाव्यानि विरच्यन्ते, गीतकाव्यानि ग्रथ्यन्ते कथाख्यायिकादिगद्यकाव्यानि निर्मीयन्ते अन्यानि चानेकविधानि साहित्यिककार्याण्यनुष्ठीयन्ते।

एवमस्या भाषया निबद्धा विविधा विपुलवाङ्मयसमृद्धि सर्वेषामीर्ष्याप्रदा।

अतएवोच्यते अन्वच्छिन्नप्रवाहा अनवरुद्धगतिरियं भाषा अमरत्वापराभिधानदेवत्वमयी अतशचेयं दैवी वाक्।

।।जयतु संस्कृतं, जयतु भारतम्।।

धन्यवादः

# विज्ञानप्रौद्योगिकी-क्षेत्रे संस्कृतस्य योगदानम्

सन्देशस्कन्दः
स्नातकप्रथमवर्षस्य छात्रः
(प्रोग्रामपाठ्यक्रमस्य)

शैक्षिकप्रौद्योगिक्याः निरन्तरं परिवर्तनशीलवातावरणे क्रान्तिकारीसफलतातां प्रति एकं पदं गृह्यते यत् भाषाशिक्षायाः समृद्ध्यर्थं परम्परायाः आधुनिकतायाः च सामञ्जस्यपूर्वकम् मिश्रणं कुर्वन्। अस्याः क्रान्तिकेन्द्रे पारम्परिकशिक्षायां विशेषतया शास्त्रीयभाषासंस्कृतस्य सन्दर्भे नूतनं बलं दातव्यम्। अस्माकं पूर्वजानां प्रज्ञायां मूलभूता पारंपरिकशिक्षा युवानां बौद्धिक-नैतिकचरित्रस्य स्वरूपनिर्माणे महत्वपूर्णां भूमिकां निर्वहति।

"देववाणी" इत्यापि प्रसिद्धम् संस्कृतं न केवलं प्राचीनभाषा अपितु ज्ञानस्य विज्ञानस्य च विशालः भण्डारः अस्ति। भारतस्य अस्याः प्रख्यात भाषायाः विज्ञानं प्रौद्योगिकी च प्रौद्योगिक्याः विकासे अपारयोगदानं कृतवान्, यस्य प्रमाणं प्राचीनग्रन्थेषु अपि च आधुनिकसंशोधनेषु अपि प्राप्यते। एषा अन्वेषणं न केवलं अस्माकं सांस्कृतिकविरासतां प्रति गहनप्रशंसां प्रवर्धयति अपितु अस्माकं देशस्य इतिहासस्य समृद्धिवर्धनेन सह मान्यतायाः, संपर्कस्य च भावः अपि विकसयति।

"संस्कृतं ज्ञानंमूलं हि, यत्र विज्ञान वैभवं। शून्यम् दशमलवम् यन्त्रं, तत्सर्वं तत् स्फुटितम्।।"

गणितस्य क्षेत्रे संस्कृतस्य योगदानं परमं। भारते विकसिता शून्यस्य दशमलवतन्त्रस्य बीजगणितस्य च अवधारणा, एतेषां सर्वेषां वर्णनम् च संस्कृत-पुस्तकेषु प्राप्यते। आर्यभट्टः, ब्रह्मगुप्तः, भास्कराचार्यः इत्यादयः महान गणितज्ञाः स्वपुस्तकानि संस्कृतेन लिखितवन्तः, येन मानचित्रस्य गणितस्य च नूतना दिशा प्राप्ता। यथा आर्यभट्टेन लिखिते "आर्यभटीयम्" इति पुस्तके वर्णिताः खगोलगणनाः त्रिकोणमितिसिद्धान्ताः च अद्यत्वे अपि अत्यन्तं प्रासंगिकाः सन्ति।

खगोलविज्ञाने संस्कृतस्य योगदानं अपि अतुलनीयम् अस्ति। प्राचीनभारतीयमानचित्रकाराः ग्रहाणां गतिं, ग्रहणां भविष्यवाण्यः, नक्षत्राणां च पूर्वानुमानस्य विस्तरेण अध्ययनम् कृतवन्तः। सूर्यसिद्धान्तः आर्यभटीयम् इत्यादयः ग्रन्थाः खगोलगणनायाः ब्रह्माण्डस्य च विषये अस्माकं दृष्टिः दर्शयन्ति। एतेषु पुस्तकेषु ग्रहाणां स्थितिः, गतिः च विस्तरेण वर्णिता अस्ति, यत् आधुनिकखगोलविज्ञानस्य सिद्धान्तैः सह बहुमेलनम् करोति।

"यत्र संस्कृत - वाणी सा, विज्ञानस्य प्रकाशिका। गणितम् ज्योतिषम् वैद्यं, सर्वं तत्र प्रतिष्ठितम्।।"

विश्वस्य प्राचीनतमेषु चिकित्साव्यवस्थासु अन्यतमः आयुर्वेदः सम्पूर्णतया संस्कृताधारितः अस्ति। चरकसंहिता सुश्रुतसंहिता इत्यादीनि पुस्तकानि संस्कृतभाषायां लिखितानि, चिकित्साविज्ञानस्य, शल्यक्रियायाः, अन्यौषधवनस्पतयः विषये विस्तृतानि सूचनानि प्रददाति। तेषु वर्णितम् निदानं चिकित्सा शल्यक्रिया च अद्यापि चिकित्साविज्ञानस्य महत्वपूर्णाः सन्दर्भाः सन्ति।

धातुविज्ञानक्षेत्रे संस्कृतग्रन्थेषु अपि महत्वपूर्णाः सूचनाः निहिताः सन्ति। प्राचीनभारते धातुशुद्धिकरणस्य मिश्रधातुनिर्माणस्य च उन्नताः युक्तयः आसन्, येषां वर्णनं संस्कृतग्रन्थेषु प्राप्यते। शताब्दशः जङ्गमरहितः स्थितः देहलीनगरस्य लौहस्तम्भः प्राचीनभारतीयधातुविज्ञानस्य अद्भुतं उदाहरणम् अस्ति, तस्य निर्माणसम्बद्धम् ज्ञानमपि संस्कृतग्रन्थेषु निगूढं अस्ति।

"संस्कृतं सारभूतं हि, विज्ञानस्य प्रगल्भता। धातुवादो विमानं च, ज्योतिषम् गणितम् तथा।।"

भाषाविज्ञानस्य सङ्गणकशास्त्रस्य (Computer Science) च क्षेत्रे अपि संस्कृतस्य महत्त्वं स्वीकृतं अस्ति । पाणिनीयस्य अष्टाध्यायी संस्कृतव्याकरणस्य उत्तमः ग्रन्थः विश्वस्य वैज्ञानिकतमः सुव्यवस्थितः च व्याकरणः इति मन्यते। अस्य संरचना नियमाः च एतावन्तः तार्किकाः सन्ति यत् कृत्रिमबुद्धेः (Artificial Intelligence)

सङ्गणकप्रोग्रामिङ्गस्य (Computer Programming) च आदर्शः इति मन्यते। नासा - वैज्ञानिकाः अपि ए.आई. (AI) इत्यस्य कृते संस्कृतभाषां सर्वाधिकोपयुक्ता भाषा इति घोषितवन्तः।

एम्सहॉस्पिटलस्य छात्राः संस्कृतश्लोकानाम् प्रभावेषु विशेषतः मनः संतोषस्य संज्ञानात्मककार्यस्य च सम्बन्धे अनुसन्धानम् कर्तुं रुचिं प्रदर्शितवन्तः। 'एम्स' पटना-आयुर्विज्ञान-संस्थाने केचन छात्राः वैद्याः च पाठ्यक्रमे संस्कृतस्य प्रवर्तनं प्रति मिश्रितप्रतिक्रियां प्रकटितवन्तः, केचन व्यक्तित्ववर्धनस्य उपायः इति पश्यन्ति, अन्ये च समयप्रतिबद्धतायाः चिन्तां अनुभवन्ति। परन्तु प्राचीन भारतीयचिकित्साशास्त्रेण सह तस्य सम्बन्धः, श्लोकानां मन्त्राणां च, अध्ययेन पाठेन च स्मृति-संज्ञानात्मकक्षमतासु सुधारस्य सम्भावना च संस्कृतस्य संभाव्य लाभानां स्वीकारः अपि अस्ति।

निष्कर्षतः, संस्कृतं न केवलं भाषा, अपितु ज्ञानस्य अक्षयं। अद्यत्वेऽपि संस्कृतस्य प्राचीनग्रन्थेषु दत्तम् ज्ञानं प्रकाशयित्वा आधुनिकविज्ञानस्य प्रौद्योगिक्याः च नूतनाः मार्गाः उद्घाटयितुं शक्यन्ते। संस्कृतस्य एतत् वैज्ञानिकं प्रौद्योगिकं च योगदानं भारतीयधरोहरस्य गौरवं सम्पूर्णमानवजातेः प्रेरणादायिनी च।

# संस्कृतस्य शिक्षायाः महत्त्वं संरक्षणञ्च

शशांकशेखरः
स्नातकप्रथमवर्षस्य छात्रः
(प्रोग्रामपाठ्यक्रमस्य)

१. संस्कृत-शिक्षायाः महत्त्वम्

संस्कृतं प्राचीनतमा भाषाऽस्ति । संस्कृतं न केवलं भारतस्य, अपितु विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। विश्वस्य अन्येषु देशेषु जनाः यदा साङ्केतिक भाषायां कार्यं कृतवन्तः, तदा भारतदेशे संस्कृतभाषायाः प्रसारः ब्रह्मज्ञानस्य आत्मज्ञानस्य च कृते अभवत्।

ब्राह्मणातिरिक्तानाम् अन्यवर्णानां जनाः अपि एषां प्रयोगः कृतवन्तः। ये वाचने असमर्थाः आसन्। एषा भाषा सामञ्जस्यं निर्वहति। प्राचीनशिलालेखेषु अपि संस्कृतभाषा अङ्किता अस्ति। महर्षिः यास्कः पाणिनिः च अन्यविद्वांसः अपि संस्कृतस्य कृते भाषाशब्दस्य प्रयोगं कृतम्। तस्माद् स्पष्टं भवति यत् ईसा पूर्व शताब्द्यां अपि संस्कृतं जनसाधारणस्य भाषा आसीत्। संस्कृतभाषायाः लिखितसाहित्यस्य द्वे रूपे स्तः वैदिकं लौकिकञ्च।

वैदिकसाहित्यस्य दृष्ट्या संस्कृतभाषायाः विशेषमहत्त्वम् अस्ति। वेदस्य महत्त्वं अनेन प्रकारेण वर्णितम्। प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते। एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता। ऋग्वेदः संस्कृतभाषायां रचिता विश्वस्य प्राचीनतमा रचनाऽस्ति। पतञ्जलिः महाभाष्ये एकस्मिन् स्थले लिखति "ग्रामे ग्रामे काठके कालापकं च प्रोच्यते" अस्याशयः भारतस्य ग्रामे ग्रामे वेदस्य काठक कालापकश्च शाखायाः अध्ययनं क्रियते।

वैदिकसाहित्ये भारतस्य प्राचीन संस्कृतेः चित्रणमस्ति। वैदिकार्याः अनेकदेवतायाः पूजकाः सन्ति। तथापि सर्वे देवाः एकस्य सर्वव्यापकपरमेश्वरस्य एव विविधरूपाणि सन्ति। कथ्यते - एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्त्यग्निं, यमं

मातारिश्वानमाहुः। अर्थात् परमात्मा एक एव, किञ्च विद्वांसः तम् अग्निः, यमः मातारिश्वादिनाम्ना बहुधा उच्यन्ते। वेदः स्वस्य रचनाकाले एव मानवविचारस्य प्रतिभायाश्च सर्वोच्चशिखरः आसीत्। सम्प्रति जगति अल्पमेव साहित्यं यः मानवीयभावनानां गम्भीरतादृष्ट्या वेदेषु समं सम्प्रतिष्ठते। वेदज्ञस्य प्रशंसाहेतुः मनोः एषा उक्ति अपि गर्विता अस्ति - वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः यत्रः कुत्राश्वमे वसन्। इहैव लोके तिष्ठन् सः ब्रह्मभूयाय कल्पते।

२. संस्कृत-शिक्षणस्य संरक्षणम्

- संस्कृतशिक्षायाः संरक्षणाय किञ्चित् उपायाः।
- विद्यालये महाविद्यालये च संस्कृतविषयः अनिवार्यरूपेण वैकल्पिकविषयरूपेण पठितुं विधीयते।
- शिक्षापद्धतौ संस्कृतस्य समावेशः।
- संस्कृतस्य प्रथमायां, माध्यमिकायाम् उच्चशिक्षायाञ्च अनिवार्यरूपेण विकल्पविषयरूपेण वा समावेशनं करणीयम्।
- संस्कृत-शिक्षण-संस्थानानां प्रोत्साहनम्।
- संस्कृत-विश्वविद्यालयानां, महाविद्यालयानां विद्यालयानाञ्च स्थापनां विकासं च प्रोत्साहितव्यम्।
- प्रशिक्षित संस्कृत शिक्षकाः नियोजनीयाः।
- संस्कृतशिक्षकाणां प्रशिक्षणाय विशेषकार्यक्रमः आयोजनीयः तथा च प्रशिक्षणसंस्थानानि स्थापनीयानि।
- संस्कृतसाहित्यस्य प्रकाशनं प्रचारश्च।

- संस्कृतसाहित्यं प्रकाशयितुं तथा तस्य प्रचार-प्रसारं च कर्तुं सर्वकारी-गैर-सर्वकारीसंस्थाः प्रोत्साहितव्याः।

- संस्कृतभाषां प्रति जागरूकताकार्यक्रमः आवश्यकः।

- संस्कृतभाषायाः महत्त्वं तस्याः लाभानां विषये जागरूकतां वर्धयितुं विभिन्नाः जागरूकता अभियानाः चालितव्याः।

- संस्कृत भाषायाः उपयोगः।

- संस्कृतभाषायाः दैनान्दिनजीवने उपयोगं कर्तुं प्रोत्साहनं कर्तव्यं, यथा धार्मिककर्माणि, सांस्कृतिककार्याणि, शैक्षणिकार्याणि च।

# देशबन्धु-महाविद्यालयः

जतिनवेदी
स्नातकप्रथमवर्षस्य छात्रः
(प्रोग्रामपाठ्यक्रमस्य)

इतिहासः

देशबन्धु-महाविद्यालयस्य स्थापना १९५३ तमे संवत्सरे पुनर्वास-मन्त्रिणा स्वतन्त्रता-सैनिकस्य देशबन्धु-गुप्तस्य स्मारकरूपेण कृतम्।

प्रारम्भे, अयं महाविद्यालयः केवलं ७२ छात्रैः सह प्रेप् (कला), प्रेप् (विज्ञान) तथा प्री-मेडिकल् इत्येतेषु पाठ्यक्रमेषु सीमितः आसीत्। अनन्तरं शिक्षामन्त्रालयस्य अधीनं गत्वा, अयं दिल्ली-विश्वविद्यालयस्य घटक-महाविद्यालयरूपेण सम्मिलितः जातः।

वर्तमानं गौरवम्

देशबन्धु-महाविद्यालयः अद्य पूर्णरूपेण देहली विश्वविद्यालयेन संरक्षितः तथा च अस्य महाविद्यालयस्य घटक-महाविद्यालयः अस्ति। एषः दक्षिण-दिल्ली-परिसरे कला-वाणिज्य-विज्ञान इत्येषु क्षेत्रेषु शिक्षायाः संवर्धनं कुर्वन् पुरातनतमः च सर्वातिभृहत् सह-शैक्षिकसंस्थानम् इति ख्यातिम् अधिगतः।

अस्मिन् महाविद्यालये ८ स्नातकोत्तर-पाठ्यक्रमाः, २० स्नातक-पाठ्यक्रमाः, भाषा, इतिहास, राजनीति-शास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान, गणितश्च विषयेषु सञ्चालिताः।

छात्राणां कृते सामान्यकक्षः, भोजकक्षः, प्रयोगशालाः च उपलब्धाः।

श्रेष्ठतमः पुस्तकालयः अपि देशबन्धु-महाविद्यालये अस्ति।

सह-पाठ्यक्रम-क्रियाः

- एन-एस-एस, एन-सी-सी इत्यादीनां क्रियाः
- छात्रवृत्तयः, वित्त-सहाय्यम्

उत्सवाः

देशबन्धु-महाविद्यालयः प्रतिवर्षे "सबरंग" नामकं वार्षिकं सांस्कृतिक-महोत्सवं आयोजयति। महाविद्यालयः शैक्षणिकप्रोत्साहनार्थं विविधव्याख्यानानां सङ्गोष्ठीनां सांस्कृतिककार्यक्रमाणां च आयोजयति।

# भारतदेशः

राहुलः
स्नातकतृतीयवर्षस्य छात्रः
(प्रतिष्ठापाठ्यक्रमस्य)

अस्माकं देशस्य नाम भारतम् अस्ति देशोऽयम् प्राचीनतमः राष्ट्रः अस्ति। अस्य देशस्य इतिहासः अतीव गौरवशाली अस्ति। अयं देशः वेदानां, उपनिषदां, रामायण-महाभारतयोः च जन्मभूमिः अस्ति। अत्र विविधानि धर्माः, भाषाः, संस्कृतयश्च विद्यमानाः सन्ति।

भारतस्य प्राचीननाम "भारतम्" इति आसीत्, यः राजा भरतस्य नाम्ना प्रसिद्धः आसीत्। तस्य नामानुसारं अयं देशः "भारत" इति कथ्यते। अयं देशः "सत्यमेव जयते" इति वाक्येन प्रेरितः अस्ति।

भारतदेशे सप्त सागराः, महानद्यः (गङ्गा, यमुन, ब्रह्मपुत्रा, नर्मदा च), गिरयः (हिमालयः) च सन्ति। एषः देशः कृषिप्रधानः अस्ति। अत्र जनाः अतिथेः सत्कारं कुर्वन्ति, "अतिथिदेवो भव" इत्यस्मिन् विश्वासं कुर्वन्ति च।

भारते अनेकाः महानायकाः जाताः - महात्मा गान्धी, स्वामी विवेकानन्दः, चाणक्यः, रवीन्द्रनाथठाकुरः, डॉ. ए.पी.जे, अब्दुल् कलामः च। तैः देशे राष्ट्रभक्तेः आदर्शः स्थापितः।

अद्य भारतम् विज्ञान-तन्त्रज्ञान-शिक्षा-योग-आयुर्वेदादिषु च क्षेत्रेषु जगति अग्रगण्यः अस्ति।

भारतस्य राष्ट्रगानं "जनगणमन" अस्ति तथा राष्ट्रगीतः "वन्दे मातरम्" च। भारते "विविधतायाम् एकता" इति आदर्शं प्रतिपादयति।

भारतं मम मातृभूमिः अस्ति। अहं भारतस्य नागरिकः सन् गर्वं अनुभवामि।

# ਦੇਸ਼

2024-25

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਸੰਪਾਦਕ : ਡਾ. ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸੰਪਾਦਕ : ਪੂਜਾ

ਵਿਸ਼ਾ ਸੂਚੀ


| | | |
|---|---|---|
| ਸਾਹਿਤ ਸਮੀਖਿਆ | ਡਾ. ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ | 86-87 |
| ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤ: ਇੱਕ ਨਜ਼ਰ | ਪ੍ਰਿਆਂਸ਼ੂ ਕੁਮਾਰ | 88-89 |
| ਵਧ ਰਹੀ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ : ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ 'ਚ ਵਾਤਾਵਰਣਕ ਸੰਕਟ | ਸੁਸ਼ਮਿਤਾ ਸ਼ਰਮਾ | 90-91 |
| ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ (ਨੈਟਫਲਿਕਸ, ਪ੍ਰਾਈਮ ਵੀਡੀਓ ਆਦਿ) ਦਾ ਸਮਾਜ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ | ਸਵਿਤਾ | 92-94 |
| ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ : ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦਾ ਨਵਾਂ ਉਭਾਰ | ਪੂਜਾ ਚੌਹਾਨ | 94-96 |

# ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ

ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਕਲਾਤਮਕ ਸਿਰਜਣਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਵਿਲੱਖਣ ਰੂਪ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਸਿਰਫ ਬੁਨਿਆਦੀ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਸਿਰਜਣਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਸਗੋਂ ਨਿੱਤ ਦੀਆ ਜਰੂਰਤਾਂ ਤੋਂ ਅਗਾਂਹ ਜਾ ਕੇ ਵੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਿੰਦਗੀ 'ਚ ਸੁਹਜ ਹੈ ਹੀ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਸੁਹਜ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਰੂਪਾਂ ਨੂੰ ਸਿਰਜਦਾ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ ਵੀ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਹੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਰੂਪ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਦਾ ਸਵਾਲ ਕਿਸੇ ਕਾਲ-ਪਾਸਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ ਨਹੀਂ। ਵਿਕਸਿਤ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ, ਮਸ਼ੀਨੀਕਰਨ ,ਸੂਚਨਾ ਤੇ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਤੇ ਖ਼ਾਸ ਕਰ ਬਣਾਵਟੀ ਗਿਆਨ ਵਾਲੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਮਹੱਤਵ ਹੋਰ ਵੀ ਅਹਿਮ ਹੁੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹਰ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸਾਹਿਤ ਦੀਆ ਆਪਣੀਆਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਬਦਲਦੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਹਿਤ ਅੰਦਰ ਵੀ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਵਾਪਰਦਾ ਹੈ, ਪਰਿਵਰਤਨ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਬਰਕਰਾਰ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਆਲੋਚਨਾ ਦਾ ਸੰਬੰਧ, ਸਾਹਿਤ ਸਿਰਜਣਾ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਹੀ ਪੁਰਾਣਾ ਹੈ। ਜਦੋ ਕੋਈ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਸਾਹਿਤਕ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੇ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਤੀਕਰਮ ਜਾਂ ਸੰਵੇਦਨਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਅਸਲ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਸਮਾਜਿਕ ਚੋਂਗਿਰਦੇ ਨੂੰ ਪਛਾਣਦਾ ਹੋਇਆ ਉਸਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਜੀਵਨ ਯਥਾਰਥ ਨੂੰ, ਆਪਣੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਰਾਹੀਂ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਕੇ, ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਕਲਾਤਮਕ ਬਿੰਬਾਂ ਰਾਹੀਂ ,ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਢਾਲ ਕੇ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਆਪਣੇ ਮੂਲ ਸੁਭਾਅ 'ਚ ਇਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਆਲੋਚਨਾ ਹੀ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ- ਸਿਰਜਣਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ -ਸਮੀਖਿਆ ਦੋ ਵੱਖੋ -ਵੱਖਰੀਆਂ ਵਿਧਾਵਾਂ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਸਾਹਿਤ, ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਵਿਛੜੇ ਅਮਲ 'ਚ ਢਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਸਾਹਿਤ ਸਮੀਖਿਆ, ਸਾਹਿਤ/ਪਾਠ ਦੇ ਓਹਲੇ 'ਚ ਪਏ ਅਰਥਾਂ, ਚਿਹਨਾਂ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ, ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ, ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਵਿਧੀ-ਵਿਧਾਨ ਸੰਬੰਧੀ ਸਮੀਖਿਅਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਉਸਾਰਦੀ ਹੈ।

ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਦੇ ਸਮਾਨਾਂਤਰ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਜਨਵਾਦੀ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣਨ/ਪਹਿਚਾਣਨ ਹਿਤ ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਹੀ ਕੁਝ- ਇਕ ਸੰਦਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ - ਪਰਖ ਵਜੋਂ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਅੰਤਰ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਸੁਹਜ-ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਛਾਣ ਉਸਾਰਨ ਦੇ ਯਤਨ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਟੋਹ ਹੁੰਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਾਹਿਤ ਪਰਖ ਦੇ ਸਾਧਨ ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ ਬਦਲਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤੀ ਕਾਵਿ- ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਰੰਪਰਾ ਤੇ ਗਰੈਕੋ ਰੋਮਨ ਪਰੰਪਰਾ ਤੋਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਪਹੁੰਚ -ਵਿਧੀਆਂ ਦਾ ਆਗਾਜ਼

ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਪਾਠ ਵਿਚਲੇ ਅਰਥਾਂ ਦੀ ਚਿਹਨਕਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਕਈ ਅੰਤਰਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਆਈਆਂ ਹਨ। ਹੁਣ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਪੱਛਮ ਵਿਚ ਵਿਕਸਤ ਹੋਈਆਂ ਇਹ ਆਲੋਚਨਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਧਰਾਤਲ 'ਤੇ ਰਚੇ ਸਾਹਿਕਤ-ਪਾਠ ਲਈ ਕਿੰਨੀਆਂ ਕੁ ਲਾਹੇਵੰਦ ਹੋਣਗੀਆਂ? ਕਿਉਂਕਿ ਹਰ ਧਰਾਤਲ ਦੀਆਂ ਆਪਣੀਆਂ ਵੱਖਰਤਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ ਦੇ ਆਪਸੀ ਸੰਵਾਦ ਅਤੇ ਟਕਰਾਓ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਬੇਹੱਦ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਡਾ.ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ
ਦੇਸ਼ਬੰਧੂ ਕਾਲਜ

## ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤ: ਇੱਕ ਨਜ਼ਰ

ਕਲਪਨਾ ਕਰੋ, ਇੱਕ ਪਲ ਸਭ ਕੁਝ ਸ਼ਾਂਤ ਹੈ ਅਤੇ ਅਗਲੇ ਹੀ ਪਲ ਧਰਤੀ ਤੁਹਾਡੇ ਪੈਰਾਂ ਹੇਠੋਂ ਹਿੱਲਣ ਲੱਗਦੀ ਹੈ। ਅਸਮਾਨ-ਛੂੰਹਦੀਆਂ ਇਮਾਰਤਾਂ ਤਾਸ਼ ਦੇ ਪੱਤਿਆਂ ਵਾਂਗ ਢਹਿ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਇਨਸਾਨਾਂ ਦੀਆਂ ਚੀਕਾਂ ਕੁਦਰਤ ਦੀ ਭਿਆਨਕ ਗਰਜ ਵਿੱਚ ਗੁੰਮ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਉਹ ਵਿਨਾਸ਼ਕਾਰੀ ਨਾਚ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਅਸੀਂ ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਸਮੁੰਦਰ ਦਾ ਉਹ ਗੁੱਸਾ ਹੈ ਜੋ ਸੁਨਾਮੀ ਬਣ ਕੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਨੂੰ ਨਿਗਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਅਸਮਾਨ ਦਾ ਉਹ ਕਹਿਰ ਹੈ ਜੋ ਬੱਦਲਾਂ ਦੇ ਫਟਣ ਨਾਲ ਭਿਆਨਕ ਹੜ੍ਹ ਲਿਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਹਵਾ ਦਾ ਉਹ ਤੂਫ਼ਾਨੀ ਨ੍ਰਿਤ ਹੈ ਜੋ ਚੱਕਰਵਾਤ ਬਣ ਕੇ ਸਭ ਕੁਝ ਉਜਾੜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਚੰਦਰਮਾ 'ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਏ, ਅਸੀਂ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਦੇ ਭੇਤਾਂ ਨੂੰ ਸੁਲਝਾਉਣ ਦਾ ਦਾਅਵਾ ਕੀਤਾ, ਪਰ ਅੱਜ ਵੀ ਇੱਕ ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤ ਸਾਨੂੰ ਸਾਡੀ ਅਸਲੀਅਤ ਦਿਖਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਅਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਛੋਟੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਹੀ ਇਸਦੀ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ – ਅਣਕਿਆਸੀ, ਅਜਿੱਤ ਅਤੇ ਵਿਨਾਸ਼ਕਾਰੀ।

ਜੇਕਰ ਹਾਲ ਹੀ ਵਿੱਚ ਆਈਆਂ ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਭਾਰਤ ਇਸ ਤੋਂ ਅਛੂਤਾ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਭਾਰੀ ਬਾਰਿਸ਼, ਹੜ੍ਹ, ਜ਼ਮੀਨ ਖਿਸਕਣ ਅਤੇ ਬੱਦਲ ਫਟਣ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੇ ਕਈ ਰਾਜਾਂ ਨੂੰ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ 43 ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋਈ ਅਤੇ 1948 ਪਿੰਡ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬ ਗਏ। ਉੱਥੇ ਹੀ, ਹਿਮਾਚਲ ਅਤੇ ਉੱਤਰਾਖੰਡ ਵਿੱਚ ਵੀ ਭਾਰੀ ਤਬਾਹੀ ਮਚੀ ਹੈ। ਰਾਜ ਸਰਕਾਰ ਅਨੁਸਾਰ ਲਗਭਗ 38,432 ਲੋਕ ਹੜ੍ਹ ਦੀ ਚਪੇਟ ਵਿੱਚ ਹਨ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਬਾਸਮਤੀ ਫਸਲ ਨੂੰ ਕਰੀਬ 600 ਕਰੋੜ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ ਅਤੇ ਕਪੂਰਥਲਾ ਵਰਗੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹਿਆਂ ਵਿੱਚ 50% ਤੋਂ ਵੱਧ ਖੇਤੀ ਖੇਤਰ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬ ਗਏ। ਉੱਤਰਾਖੰਡ ਵਿੱਚ ਵੀ ਭਾਰੀ ਬਾਰਿਸ਼ ਨੇ ਕਹਿਰ ਢਾਹਿਆ ਹੈ। ਅਗਸਤ ਵਿੱਚ ਬੱਦਲ ਫਟਣ ਅਤੇ ਜ਼ਮੀਨ ਖਿਸਕਣ ਨਾਲ ਚਮੋਲੀ, ਰੁਦਰਪ੍ਰਯਾਗ, ਟਿਹਰੀ ਅਤੇ ਬਾਗੇਸ਼ਵਰ ਜ਼ਿਲ੍ਹਿਆਂ ਵਿੱਚ ਤਬਾਹੀ ਮਚੀ। ਇਸ ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤ ਵਿੱਚ ਹੁਣ ਤੱਕ ਕਈ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ ਅਤੇ 50 ਤੋਂ ਵੱਧ ਲੋਕ ਲਾਪਤਾ ਹਨ।

ਹਾਲ ਹੀ ਦੇ ਸਾਲਾਂ ਵਿੱਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਧਦਾ ਪ੍ਰਕੋਪ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਿਨਾਸ਼ਕਾਰੀ ਸ਼ਕਤੀ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ ਕਿ ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਸੰਤੁਲਨ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਿਗੜ ਚੁੱਕਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਕੀ ਇਹ ਆਫ਼ਤਾਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਤੋਂ ਇੰਨੀਆਂ ਘਾਤਕ ਸਨ? ਜਾਂ ਸਾਡੇ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਅੰਨ੍ਹੀ ਦੌੜ ਨੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਖਤਰਨਾਕ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ? ਜੰਗਲਾਂ ਨੂੰ ਕੱਟ ਕੇ ਕੰਕਰੀਟ ਦੇ ਸ਼ਹਿਰ ਬਣਾਉਣ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਵਾਯੂਮੰਡਲ ਵਿੱਚ ਜ਼ਹਿਰ ਘੋਲਣ ਤੱਕ, ਅਸੀਂ ਅਣਜਾਣੇ ਵਿੱਚ ਖੁਦ ਆਪਣੀ ਤਬਾਹੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਲਿਖ ਰਹੇ ਹਾਂ।

ਜੇਕਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਇਸਦੇ ਦੋ ਕਾਰਨ ਹਨ – ਇੱਕ ਕੁਦਰਤੀ ਕਾਰਨ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਭੂ-ਵਿਗਿਆਨਕ ਕਾਰਨ, ਜਲਵਾਯੂ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਰਨ ਅਤੇ ਭੂਗੋਲਿਕ ਕਾਰਨ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ। ਉੱਥੇ ਹੀ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ, ਮਨੁੱਖੀ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਜੋ ਇਨ੍ਹਾਂ ਆਫ਼ਤਾਂ ਨੂੰ ਵਧਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਬੇਰੋਕ ਸ਼ਹਿਰੀਕਰਨ, ਜੰਗਲਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ, ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ, ਖ਼ਰਾਬ ਜਲ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਆਦਿ ਇਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ।

ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰੋਕਣਾ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਨਜਿੱਠਣ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰਕੇ ਨੁਕਸਾਨ ਨੂੰ ਕਾਫੀ ਹੱਦ ਤੱਕ ਘਟਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਚੇਤਾਵਨੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ, ਆਫ਼ਤ-ਰੋਕੂ ਨਿਰਮਾਣ, ਰੁੱਖ ਲਗਾਉਣਾ ਅਤੇ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਵਧਾਉਣ ਵਰਗੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਕੇ ਇਸਦੇ ਪ੍ਰਕੋਪ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਆਫ਼ਤ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਅਥਾਰਟੀ (ਐਨ.ਡੀ.ਐਮ.ਏ.) ਵਰਗੀਆਂ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਆਫ਼ਤ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਲਈ ਨੀਤੀਆਂ ਅਤੇ ਦਿਸ਼ਾ-ਨਿਰਦੇਸ਼ ਤਿਆਰ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਰੇ ਉਪਾਅ ਮਿਲ ਕੇ ਇੱਕ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਆਫ਼ਤ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਢਾਂਚਾ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਨਾਲ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਜਾਇਦਾਦ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ ਘੱਟ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸੰਖੇਪ ਵਿੱਚ, ਕੁਦਰਤੀ ਆਫ਼ਤਾਂ ਨਾਲ ਨਜਿੱਠਣ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਇੱਕ ਸਰਗਰਮ, ਬਹੁ-ਪੱਖੀ ਅਤੇ ਸਥਾਈ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਅਪਣਾਉਣਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ, ਭਾਈਚਾਰੇ ਅਤੇ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੀ ਸਮੂਹਿਕ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਕੁਦਰਤ ਨਾਲ ਤਾਲਮੇਲ ਬਣਾ ਕੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਆਫ਼ਤਾਂ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਜੋਖਮ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਲਈ ਮਿਲ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰੇ।

ਪ੍ਰਿਆਂਸ਼ੂ ਕੁਮਾਰ
ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ

24/0285

## ਵਧ ਰਹੀ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ : ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ 'ਚ ਵਾਤਾਵਰਣਕ ਸੰਕਟ

ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਭਾਰਤ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਅਤੇ ਵਿਕਸਤ ਹੋ ਰਹੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ। ਇਹ ਇਲਾਕਾ ਆਪਣੇ ਇਤਿਹਾਸ, ਆਬਾਦੀ, ਅਤੇ ਆਧੁਨਿਕ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਥੇ ਵਧ ਰਿਹਾ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਇੱਕ ਗੰਭੀਰ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਹਰ ਸਾਲ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਸਰਦੀਆਂ ਵਿੱਚ, ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਦੀ ਹਵਾ ਇੰਨੀ ਜ਼ਹਿਰੀਲੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹ ਲੈਣਾ ਵੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਵਿਘਟਿਤ ਹੋ ਰਹੇ ਖ਼ਤਰਨਾਕ ਤੱਤ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਸਿਹਤ ਲਈ ਹਾਨੀਕਾਰਕ ਹਨ, ਸਗੋਂ ਪੂਰੇ ਵਾਤਾਵਰਣ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਤੇ ਵੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾ ਰਹੇ ਹਨ।

ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਵਿੱਚ ਵਾਧੂ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦੇ ਕਈ ਕਾਰਨ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਵਾਹਨ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ, ਉਦਯੋਗਿਕ ਧੂੰਆ, ਕੰਸਟਰਕਸ਼ਨ,ਕਿਸਾਨਾਂ ਵੱਲੋਂ ਪਰਾਲੀ ਸਾੜਨ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿੱਚ ਹਰ ਸਾਲ ਲੱਖਾਂ ਨਵੇਂ ਵਾਹਨ ਰਜਿਸਟਰ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ, ਜੋ ਕਿ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਆਕਸਾਈਡ, ਕਾਰਬਨ ਮੋਨੋਆਕਸਾਈਡ, ਅਤੇ ਹੋਰ ਖਤਰਨਾਕ ਗੈਸਾਂ ਛੱਡਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਗੈਸਾਂ ਹਵਾ ਦੀ ਗੁਣਵੱਤਾ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਖ਼ਤਰਨਾਕ ਬਣਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਦਿਨ-ਬ-ਦਿਨ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਹਵਾ ਸਾਨੂੰ ਬਿਮਾਰ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਦੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਨੋਇਡਾ, ਗਾਜਿਆਬਾਦ, ਫਰੀਦਾਬਾਦ, ਅਤੇ ਗੁੜਗਾਓ ਵਰਗੇ ਉਦਯੋਗਿਕ ਸ਼ਹਿਰ ਹਨ, ਜਿੱਥੇ ਲੋਹੇ, ਕੈਮਿਕਲ, ਤੇ ਸਿਮੈਂਟ ਦੇ ਉਦਯੋਗ ਵੱਡੀ ਮਾਤਰਾ 'ਚ ਧੂੰਆ ਤੇ ਜ਼ਹਿਰੀਲੇ ਪਦਾਰਥ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਛੱਡਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਪਦਾਰਥ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਮਿਲ ਕੇ ਇੱਕ ਜ਼ਹਿਰੀਲਾ ਮਿਸ਼ਰਣ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜੋ ਕਿ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਸਾਹ ਲੈਣ ਦੀ ਗੰਭੀਰ ਸਮੱਸਿਆ ਪੈਦਾ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ, ਪਰਾਲੀ ਸਾੜਨ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਵੀ ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਦਾ ਇੱਕ ਮੁੱਖ ਕਾਰਨ ਬਣ ਰਹੀ ਹੈ। ਹਰ ਸਾਲ ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਹਰਿਆਣਾ ਦੇ ਕਿਸਾਨ ਆਪਣੇ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਬਚੀ ਪਰਾਲੀ ਨੂੰ ਸਾੜ ਦਿੰਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਤੋਂ ਨਿਕਲਣ ਵਾਲਾ ਧੂੰਆ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਮਿਲ ਕੇ 'ਸਮਾਗ' (smog) ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਾਗ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਸਾਹ ਲੈਣ ਵਿੱਚ ਰੁਕਾਵਟ ਪੈਦਾ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਬਜ਼ੁਰਗ ਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਗੰਭੀਰ ਸਿਹਤ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਆ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।

ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕੇਵਲ ਹਵਾ ਦੀ ਗੁਣਵੱਤਾ ਤੱਕ ਸੀਮਿਤ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਇਹ ਮੌਸਮ ਉੱਤੇ ਵੀ ਗੰਭੀਰ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਰਦੀਆਂ ਵਿੱਚ, ਹਵਾ 'ਚ ਧੂੰਏ ਅਤੇ ਜ਼ਹਿਰੀਲੇ ਤੱਤਾਂ ਦੇ ਮਿਲਣ ਕਰਕੇ ਦਿੱਲੀ ਅਤੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਦਿੱਖ (visibility) ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਹਾਲਾਤ ਸਵੇਰੇ ਅਤੇ ਸ਼ਾਮ ਦੇ ਸਮੇਂ ਹੋਰ ਵੀ ਗੰਭੀਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਸੜਕ ਹਾਦਸਿਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਉੱਧਰ,

ਗਰਮੀਆਂ ਵਿੱਚ, ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਿਤ ਹਵਾ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹ ਲੈਣ ਵਿੱਚ ਹੋਰ ਵੀ ਮੁਸ਼ਕਲ ਪੈਦਾ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਿਹਤ ਸੰਬੰਧੀ ਮੁੱਦਿਆਂ 'ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਮਾਰੀਏ ਤਾਂ ਇਹ ਸਮੱਸਿਆ ਹੋਰ ਵੀ ਖ਼ਤਰਨਾਕ ਬਣਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਕਾਰਨ ਦਿੱਲੀ-ਐਨਸੀਆਰ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕ, ਖ਼ਾਸ ਕਰਕੇ ਬੱਚੇ ਅਤੇ ਬਜ਼ੁਰਗ, ਅਸਥਮਾ, ਬ੍ਰੌਨਕਾਈਟਿਸ, ਤੇ ਹੋਰ ਸਾਹ ਦੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਨਾਲ ਪੀੜਤ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਜ਼ਹਿਰੀਲੇ ਤੱਤ ਅੱਖਾਂ ਤੇ ਚਮੜੀ ਉੱਤੇ ਵੀ ਬੁਰਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਅੱਖਾਂ ਲਾਲ ਹੋ ਜਾਣਾ, ਚਮੜੀ ਤੇ ਰੈਸ਼ ਪੈਣਾ ਆਮ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਦਿਲ ਦੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਤੇ ਹਾਈ ਬਲੱਡ ਪ੍ਰੈਸਰ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਵੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਹੱਲ ਲੱਭਣਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੈ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ ਇਹ ਹਾਲਾਤ ਹੋਰ ਵੀ ਵਿਗੜ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਲਾਗੂ ਕੀਤੇ ਕੁਝ ਉਪਰਾਲੇ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ 'ਓਡ-ਈਵਨ' ਸਕੀਮ, ਵਾਤਾਵਰਣ ਸੁਰੱਖਿਆ ਦੇ ਨਵੇਂ ਕਾਨੂੰਨ, ਅਤੇ ਮੈਟ੍ਰੋ ਜਿਹੀਆਂ ਟਰਾਂਸਪੋਰਟ ਸਕੀਮਾਂ ਕੁਝ ਹੱਦ ਤੱਕ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੋਈਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਵੀ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀਕਤ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਬਣਦੀ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਵਾਤਾਵਰਣ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਵਿੱਚ ਆਪਣਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਈਏ। ਜਿਵੇਂ ਕਿ, ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਵਾਹਨਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਘੱਟ ਕਰੀਏ, ਸਰਕਾਰੀ ਆਵਾਜਾਈ (Public Transport) ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਧਾਈਏ ਤੇ ਪਰਾਲੀ ਸਾੜਨ ਦੀ ਥਾਂ ਹੋਰ ਵਧੀਆ ਵਿਕਲਪ ਲੱਭੀਏ।

ਜਦ ਤਕ ਅਸੀਂ ਆਪ ਨਹੀਂ ਜਾਗਦੇ, ਤਦ ਤਕ ਇਹ ਸਮੱਸਿਆ ਵਧਦੀ ਰਹੇਗੀ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਆਓ ਮਿਲ ਕੇ ਇੱਕ ਸਾਫ਼-ਸੁਥਰੀ ਤੇ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਮੁਕਤ ਹਵਾ ਲਈ ਅੱਜ ਤੋਂ ਹੀ ਯਤਨ ਕਰੀਏ।

ਨਾਮ ਸੁਸ਼ਮਿਤਾ ਸ਼ਰਮਾ

ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ,

(ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ)

ਰੋਲ ਨੰਬਰ: 24/0286

## ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ (ਨੈਟਫਲਿਕਸ, ਪ੍ਰਾਈਮ ਵੀਡੀਓ ਆਦਿ) ਦਾ ਸਮਾਜ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਤਕਨੀਕੀ ਵਿਕਾਸ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਹਰ ਪੱਖ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਹ ਬਦਲਾਅ ਸਪੱਸ਼ਟ ਤੌਰ 'ਤੇ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਜਿੱਥੇ ਪਹਿਲਾਂ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦਾ ਮੁੱਖ ਸਾਧਨ ਸਿਨੇਮਾਘਰਾਂ ਜਾਂ ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ ਸੀ, ਉੱਥੇ ਹੁਣ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ (ਓਵਰ ਦ ਟਾਪ ਸੇਵਾਵਾਂ) ਨੇ ਆਪਣੀ ਵੱਖਰੀ ਪਛਾਣ ਬਣਾਈ ਹੈ।

ਨੈਟਫਲਿਕਸ, ਪ੍ਰਾਈਮ ਵੀਡੀਓ, ਡਿਜ਼ਨੀ ਹਾਟਸਟਾਰ, ਸੋਨੀ ਲਿਵ, ਜੀ ਫਾਈਵ ਵਰਗੇ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨੂੰ ਬਦਲਿਆ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਸਮਾਜਿਕ ਸੋਚ, ਪਰਿਵਾਰਕ ਸੰਬੰਧਾਂ, ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਰੋਜਗਾਰ 'ਤੇ ਵੀ ਡੂੰਘੇ ਅਸਰ ਛੱਡੇ ਹਨ। ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਬਦਲਾਅ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੀ ਪਹੁੰਚ ਵਿੱਚ ਆਇਆ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਸੇ ਨਵੀਂ ਫਿਲਮ ਨੂੰ ਦੱਖਣ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿਨੇਮਾਘਰ ਜਾਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ, ਜਿੱਥੇ ਪੈਸੇ, ਸਮਾਂ ਅਤੇ ਯਾਤਰਾ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਹੁਣ ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਸਮਾਰਟਫੋਨ ਅਤੇ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਕਨੈਕਸ਼ਨ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕ ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਦੀਆਂ ਫਿਲਮਾਂ, ਵੈੱਬ ਸੀਰੀਜ਼ ਅਤੇ ਡਾਕੂਮੈਂਟਰੀਆਂ ਦੇਖ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਆਸਾਨ ਪਹੁੰਚ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਮਨੋਰੰਜਨ ਨੂੰ ਲੋਕਤੰਤਰਿਕ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਹੁਣ ਪਿੰਡਾਂ ਜਾਂ ਛੋਟੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਦੇ ਲੋਕ ਵੀ ਉਹ ਸਮੱਗਰੀ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਦੇਖ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਜੋ ਪਹਿਲਾਂ ਸਿਰਫ਼ ਵੱਡੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਤੱਕ ਸੀਮਿਤ ਸੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਦਰਸਕਾਂ ਨੂੰ ਚੋਣ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ 'ਤੇ ਸਮੱਗਰੀ ਇੱਕ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਦਿਖਾਈ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਪਰ ਹੁਣ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਸੁਵਿਧਾ ਅਨੁਸਾਰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇ, ਕਿਸੇ ਵੀ ਜਗ੍ਹਾ ਤੇ ਆਪਣੀ ਪਸੰਦ ਦੀ ਚੀਜ਼ ਦੇਖ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਰੁਚੀ ਅਨੁਸਾਰ ਸਮੱਗਰੀ ਦੀ ਚੋਣ ਕਰਨ ਦੀ ਤਾਕਤ ਮਿਲੀ ਹੈ।

ਸਮਾਜਿਕ ਸੋਚ ਵਿੱਚ ਵੀ ਬੜਾ ਬਦਲਾਅ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਉੱਤੇ ਬਣ ਰਹੀਆ ਵੈੱਬ ਸੀਰੀਜ਼ ਅਕਸਰ ਉਹਨਾਂ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਛੁਹਦੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ 'ਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਚਰਚਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਲਿੰਗ ਸਮਾਨਤਾ, ਮਹਿਲਾ ਸਸ਼ਕਤੀਕਰਨ, ਜਾਤੀਵਾਦ, ਧਾਰਮਿਕ ਸਹਿਨਸ਼ੀਲਤਾ, ਮਾਨਸਿਕ ਸਿਹਤ, ਪਰਿਆਵਰਣ ਸੰਭਾਲ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਨਵੇਂ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਵਿਸ਼ੇ ਲੋਕਾ ਨੂੰ ਸੋਚਣ 'ਤੇ ਮਜਬੂਰ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਸਮਾਜਕ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਵਧਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਸਦਾ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖ ਵੀ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਸਮੱਗਰੀ ਹਿੰਸਕ, ਅਸ਼ਲੀਲ ਜਾਂ ਅਣਚਾਹੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਬੱਚੇ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਜੇਕਰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਨਿਗਰਾਨੀ ਦੇ ਇਹ ਸਮੱਗਰੀ ਦੇਖਣ ਤਾਂ ਇਹ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸੋਚ 'ਤੇ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਛੱਡ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਨਸ਼ੇ ਦੀ ਲਤ, ਹਿੰਸਾ ਪ੍ਰਤੀ ਰੁਝਾਨ ਜਾਂ ਅਣਹੋਲੀਆ ਆਦਤਾਂ ਨੂੰ ਇਹ

ਹੋਰ ਵਧਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮਾਪਿਆਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਮੱਗਰੀ ਦੀ ਚੋਣ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਪਰਿਵਾਰਕ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਬਦਲਾਅ ਆਇਆ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਸਾਰਾ ਪਰਿਵਾਰ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠਦਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਗੱਲਬਾਤ ਹੁੰਦੀ ਸੀ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਜੁੜਾਅ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਹੁਣ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਫੋਨ ਜਾਂ ਲੈਪਟਾਪ 'ਤੇ ਆਪਣੀ ਪਸੰਦ ਅਨੁਸਾਰ ਸਮੱਗਰੀ ਦੇਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਪਰਿਵਾਰਕ ਇਕੱਠ ਘੱਟ ਹੋਏ ਹਨ ਅਤੇ ਲੋਕਾ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤੀਗਤਤਾ ਵਧੀ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਕ ਪੱਖੋਂ ਇਹ ਚੰਗੀ ਗੱਲ ਵੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਆਪਣੀ ਰੁਚੀ ਅਨੁਸਾਰ ਮਨੋਰੰਜਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਸਮਾਜਕ ਮਿਲਾਪ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਸਮਾਂ ਘੱਟ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਨਵੀਆਂ ਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ ਹਨ। ਜਿੱਥੇ ਪਹਿਲਾਂ ਸਿਰਫ਼ ਸਿਨੇਮਾਘਰਾਂ ਤੱਕ ਹੀ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਦਾ ਕੰਮ ਸੀਮਿਤ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ, ਹੁਣ ਹਰ ਕਿਸਮ ਦੇ ਕਲਾਕਾਰ, ਲੇਖਕ, ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਅਤੇ ਤਕਨੀਕੀ ਮਾਹਿਰਾਂ ਨੂੰ ਕੰਮ ਦੇ ਨਵੇਂ ਮੌਕੇ ਮਿਲ ਰਹੇ ਹਨ। ਖੇਤਰੀ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਫ਼ਿਲਮਾਂ ਅਤੇ ਸੀਰੀਜ਼ ਨੂੰ ਵੀ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ, ਬੰਗਾਲੀ, ਮਰਾਠੀ, ਤੇਲਗੂ ਅਤੇ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦੇ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਹੁਣ ਵਿਸ਼ਵ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਦਰਸ਼ਕ ਮਿਲ ਰਹੇ ਹਨ।

ਆਰਥਿਕ ਪੱਖੋਂ ਵੀ ਇਹ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਵੱਡਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਲੋਕ ਮਹੀਨਾਵਾਰ ਚੰਦ ਰਕਮ ਦੇ ਕੇ ਸਮੱਗਰੀ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਕੰਪਨੀਆਂ ਨੂੰ ਵੱਡਾ ਲਾਭ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਕੰਪਨੀਆਂ ਨੇ ਨਵੀਆਂ ਨੌਕਰੀਆਂ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਸਿਨੇਮਾ ਉਦਯੋਗ ਵਿੱਚ ਨਵੀਂ ਰੌਣਕ ਭਰੀ ਹੈ। ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਵੀ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਇਆ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਡਾਕੂਮੈਂਟਰੀਆਂ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਫਿਲਮਾਂ ਬੱਚਿਆਂ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਬਹੁਤ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਗਿਆਨ, ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਅਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਭਿਆਚਾਰਾਂ ਬਾਰੇ ਜਾਣਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਇਹ ਪਲੇਟਫਾਰਮ ਸਿਰਫ਼ ਮਨੋਰੰਜਨ ਹੀ ਨਹੀਂ. ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਸਰੋਤ ਵੀ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ। ਹਾਲਾਕਿ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾ ਨੇ ਪਾਇਰੇਸੀ ਨੂੰ ਵੀ ਕੁਝ ਹੱਦ ਤੱਕ ਘਟਾਇਆ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਲੋਕ ਗੈਰਕਾਨੂੰਨੀ ਵੈੱਬਸਾਈਟਾਂ ਤੋਂ ਫ਼ਿਲਮ ਡਾਊਨਲੋਡ ਕਰਦੇ ਸਨ, ਪਰ ਹੁਣ ਸਸਤੀ ਦਰਾਂ 'ਤੇ ਕਾਨੂੰਨੀ ਤੌਰ 'ਤੇ ਉੱਚ ਗੁਣਵੱਤਾ ਵਾਲੀ ਸਮੱਗਰੀ ਉਪਲਬਧ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਫਿਲਮ ਨਿਰਮਾਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਲਾਭ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਿਨੇਮਾ ਉਦਯੋਗ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਸਭ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਕੋਵਿਡ-19 ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਦੌਰਾਨ ਜਦੋਂ ਸਿਨੇਮਾਘਰ ਬੰਦ ਸਨ, ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮਨੋਰੰਜਨ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਰੱਖਿਆ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਹੋਰ ਵੀ ਵਧ ਗਈ ਸੀ। ਇਸ ਕਾਰਨ ਕਈ ਵੱਡੀਆਂ ਫ਼ਿਲਮਾਂ ਸਿੱਧੇ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਉੱਤੇ ਰਿਲੀਜ਼

ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ, ਜੇ ਪਹਿਲਾਂ ਅਕਲਪਨੀਯ ਸੀ। ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਓਟੀਟੀ ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਨੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਹਰੇਕ ਪੱਖ 'ਤੇ ਅਸਰ ਪਾਇਆ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਨੇ ਮਨੋਰੰਜਨ ਨੂੰ ਆਸਾਨ, ਸਸਤਾ ਅਤੇ ਸਭ ਲਈ ਉਪਲਬਧ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਨਵੇਂ ਵਿਚਾਰਾ ਅਤੇ ਚਰਚਾਵਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕਾ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਇਆ ਹੈ. ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਦੇ ਮੌਕੇ ਵਧਾਏ ਹਨ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਨਵੇਂ ਸਰੇਤ ਦਿੱਤੇ ਹਨ। ਹਾਲਾਕਿ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੀ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਲਤ, ਹਿੰਸਾ ਜਾਂ ਅਣਚਾਹੇ ਵਿਚਾਰਾ ਦਾ ਫੈਲਾਅ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਮਿਲਾਪ ਵਿੱਚ ਘਟਾਅ, ਪਰ ਜੇ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸੰਤੁਲਿਤ ਅਤੇ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ, ਤਾਂ ਇਹ ਪਲੇਟਫਾਰਮ ਸਮਾਜ ਲਈ ਇਕ ਵੱਡੀ ਵਰਦਾਨ ਸਾਬਤ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਨਾਮ - ਸਵਿਤਾ

ਬੀ.ਏ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਪੰਜਵਾਂ ਸਮੈਸਟਰ

ਰੋਲ ਨੰਬਰ- 23/0231

## ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ : ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦਾ ਨਵਾਂ ਉਭਾਰ

ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ, ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਕਲਪਨਾ ਦੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਦਾ ਇੱਕ ਲਾਜ਼ਮੀ ਮਾਧਿਅਮ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਛਪੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ ਨੇ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਨੂੰ ਆਕਾਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ, ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਅਮੀਰ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਅੱਜ, ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ (AI) ਦੇ ਆਗਮਨ ਦੇ ਨਾਲ, ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇੱਕ ਬੇਮਿਸਾਲ ਤਬਦੀਲੀ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚੋਂ ਗੁਜ਼ਰ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਜੋ ਇਸਦੇ ਨਿਰਮਾਣ, ਵੰਡ ਅਤੇ ਖਪਤ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨੂੰ ਬੁਨਿਆਦੀ ਤੌਰ 'ਤੇ ਬਦਲ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਲੇਖਣ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ, ਆਰਟੀਫੀਸੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਇੱਕ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਸਹਿਯੋਗੀ ਵਜੋਂ ਉੱਭਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਲੇਖਕਾਂ ਨੂੰ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੇ ਨਿਰਮਾਣ ਖੋਜ ਕਰਨ, ਅਤੇ ਇੱਥੋਂ ਤੱਕ ਕਿ ਹੱਥ-ਲਿਖਤਾਂ ਨੂੰ ਸੰਪਾਦਿਤ

ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਮਦਦ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਸੰਚਾਲਿਤ ਟੂਲ ਪਾਤਰਾਂ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀਆਂ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਭਾਸ਼ਾਈ ਗਲਤੀਆਂ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਅਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਵੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਸ਼ਵਵਿਆਪੀ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਲਈ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦੀ ਪਹੁੰਚ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ, ਇਹ ਸਵਾਲ ਵੀ ਉੱਠਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੀ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਰਚਨਾਤਮਕਤਾ ਨੂੰ ਬਦਲ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਕੀ AI ਦੁਆਰਾ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸਮੱਗਰੀ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਮਾਣਿਕਤਾ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਉਦਯੋਗ ਵਿੱਚ, ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਹੱਥ-ਲਿਖਤਾਂ ਦੇ ਮੁਲਾਕਣ, ਡਿਜ਼ਾਈਨ ਅਤੇ ਮਾਰਕੀਟਿੰਗ ਵਿੱਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਸੰਭਾਵੀ ਬੈਸਟਸੇਲਰਾਂ ਦੀ ਪਛਾਣ ਕਰਨ, ਆਕਰਸ਼ਕ ਕਵਰ ਡਿਜ਼ਾਈਨ ਕਰਨ, ਅਤੇ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਵਿਗਿਆਪਨ ਮੁਹਿੰਮਾ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ -ਸੰਚਾਲਿਤ ਕੀਮਤ ਨਿਰਧਾਰਨ ਐਲਗੋਰਿਦਮ ਮੰਗ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਾਰਕਾ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਪੁਸਤਕਾਂ ਲਈ ਅਨੁਕੂਲ ਕੀਮਤ ਨਿਰਧਾਰਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਸੁਚਾਰੂ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਲਾਗਤ ਨੂੰ ਵੀ ਘਟਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਧੇਰੇ ਵਿਭਿੰਨ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਸੰਭਵ ਹੋ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਵੰਡ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਨੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਲਿਆਦੀ ਹੈ। ਸਿਫਾਰਸ਼ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਪਾਠਕਾਂ ਦੀ ਪਸੰਦ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਸੁਝਾਅ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਜਿਸ ਨਾਲ ਨਵੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦੀ ਖੋਜ ਆਸਾਨ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਡਿਜੀਟਲ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਨੂੰ ਸੰਗਠਿਤ ਅਤੇ ਖੋਜਯੋਗ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਡੀਓਬੁੱਕ ਦਾ ਉਤਪਾਦਨ ਨੇਤਰਹੀਣਾਂ ਅਤੇ ਹੋਰਾਂ ਲਈ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਸੁਲਭ ਬਣਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਿੰਟ -ਆਨ -ਡਿਮਾਂਡ ਤਕਨੀਕ ਸਟੋਰੇਜ ਅਤੇ ਸ਼ਿਪਿੰਗ ਲਾਗਤ ਨੂੰ ਘਟਾਉਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਛੋਟੇ ਪ੍ਰੈੱਸ ਅਤੇ ਸੁਤੰਤਰ ਲੇਖਕਾਂ ਲਈ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਕਿਫ਼ਾਇਤੀ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਖਪਤ ਦੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਸ ਪਾਠਕਾਂ ਲਈ ਇੱਕ ਵਿਲੱਖਣ ਅਤੇ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਅਨੁਭਵ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇੰਟਰਐਕਟਿਵ ਪੁਸਤਕ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਕਹਾਣੀ ਨਾਲ ਰਸਬਾਤ ਕਰਨ ਦੀ ਇਜਾਜਤ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ, ਅਤੇ ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਸਲੇਸਣ ਟੂਲ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਪੜ੍ਹਨ ਦੀਆਂ ਆਦਤਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਅਤੇ ਸੁਧਾਰਨ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਵਰਚੁਅਲ ਰੀਡਿੰਗ ਗਰੁੱਪ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਪੁਸਤਰ 'ਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦਾ ਆਦਾਨ-ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨ ਲਈ ਇੱਕ ਮੰਚ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਸੰਚਾਲਿਤ ਟੂਲ ਪਾਠ ਦੇ ਆਕਾਰ, ਸ਼ੈਲੀ ਅਤੇ ਇੱਥੇ ਤੱਕ ਕਿ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਵੀ ਅਨੁਕੂਲਿਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਨ ਦਾ ਅਨੁਭਵ ਸਾਰਿਆ ਲਈ ਅਨੁਕੂਲ ਹੋ ਜਾਦਾ ਹੈ।

ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਦੇ ਲਾਭਾਂ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ, ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਵੀ ਹਨ। ਲੇਖਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਨੌਕਰੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਚਿੰਤਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਦੁਆਰਾ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸਮੱਗਰੀ ਦੀ ਗੁਣਵੱਤਾ ਅਤੇ ਕਾਪੀਰਾਈਟ ਬਾਰੇ ਸਵਾਲ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਨੈਤਿਕ ਵਿਚਾਰ ਵੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹਨ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਸਾਹਿਤਕ ਚੋਰੀ ਅਤੇ ਪੱਖਪਾਤ। ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਣਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਅਮੀਰ ਬਣਾਵੇ , ਨਾ ਕਿ ਇਸਨੂੰ ਕਮਜ਼ੋਰ ਕਰੇ। ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ, ਅਸੀ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ - ਜਨਿਤ ਪੁਸਤਕਾਂ, ਇੰਟਰਐਕਟਿਵ ਅਤੇ ਇਮਰਸਿਵ ਅਨੁਭਵਾਂ ਅਤੇ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਪੜ੍ਹਨ ਸੂਚੀਆਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਪਾਠਕਾਂ ਦੀਆਂ ਪੜ੍ਹਨ ਦੀਆਂ ਆਦਤਾਂ ਦਾ ਵਿਸਲੇਸ਼ਣ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸੰਭਾਵਨਾ ਹੈ ਕਿ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖੀ ਰਚਨਾਤਮਕਤਾ ਮਿਲ ਕੇ ਇੱਕ ਨਵੀਂ ਅਤੇ ਦਿਲਚਸਪ ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਕਰਨਗੇ।

ਅੰਤ ਵਿੱਚ, ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਬਦਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਭਵਿਖ ਵਿੱਚ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨਾ ਜਾਰੀ ਰੱਖੇਗਾ। ਇਹ ਲੇਖਕਾਂ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕਾਂ ਅਤੇ ਪਾਠਕਾਂ ਲਈ ਨਵੇਂ ਮੌਕੇ ਪੈਦਾ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਪਰ ਇਹ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਵੀ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀ ਇਹਨਾ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਦਾ ਹੱਲ ਕਰੀਏ ਅਤੇ ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕਰੀਏ ਜੋ ਪੁਸਤਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਅਮੀਰ ਬਣਾਵੇ, ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਕਲਪਨਾ ਦੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰੋ ਅਤੇ ਸਾਰਿਆਂ ਲਈ ਪੜ੍ਹਨ ਨੂੰ ਸੁਲਭ ਬਣਾਵੇ। ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਸ ਨੂੰ ਇੱਕ ਸਾਧਨ ਵਜੋਂ ਦੇਖਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜੋ ਮਨੁੱਖੀ ਰਚਨਾਤਮਕਤਾ ਨੂੰ ਵਧਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਨਾ ਕਿ ਇਸਨੂੰ ਬਦਲਦਾ ਹੈ।

ਪੂਜਾ ਚੌਹਾਨ

ਸਮੈਸਟਰ 4, ਰੋਲ ਨੰਬਰ - 23/0207

ਬੀ. ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ (ਪੰਜਾਬੀ+ ਹਿਸਟਰੀ)

দেশ

২০২৪-২৫

# বাংলা বিভাগ

শিক্ষক সম্পাদক : অধ্যাপক অন্তরা চৌধুরী
ছাত্র সম্পাদক : খুশবু কুমারী

## সূচীপত্র


| | | |
|---|---|---|
| সম্পাদকীয় | - খুশবু কুমারী | 98 |


## কবিতা


| | | |
|---|---|---|
| পাহাড়ের গল্প | - প্রিয়ন্তী চাকমা | 99 |
| সোনার পাতে বিজ্ঞানের আলো | - দেবাদৃতা ভট্টাচার্য | 99 |
| সাদা অ্যাপ্রণের যোদ্ধা | - অনুসূয়া শর্মা | 100 |
| ভুল | - খুশবু কুমারী | 100 |
| আগমন | - মনীশ যদুবংশী | 101 |
| শীতের প্রার্থনা | - অনন্যা সিংহ | 102 |
| এই কথাই মনে জাগে | - বিহু রায় | 102 |


## প্রবন্ধ


| | | |
|---|---|---|
| ভাষার সংজ্ঞা ও স্বরূপে ধ্বনির উচ্চারণ | - ড.ধীরাজ সরকার | 103-105 |
| বাংলা কার্টুনের কিংবদন্তী পিসিএল (কাফি খাঁ) | - অধ্যাপক অন্তরা চৌধুরী | 107-108 |

# সম্পাদকীয়

বাংলা -বাঙালির সাহিত্যধারায় বাংলার ঋতু-নির্ভর কাল-প্রকৃতি ও জীবন-জীবিকার আবেদন এখনও অপরিসীম। অখণ্ড বাংলার সমৃদ্ধ অতীত এবং বর্তমান অস্থিরতার পরিপ্রেক্ষিতেই তৈরি হচ্ছে বাংলা ধ্রুপদী ভাষার উজ্জ্বল ভবিষ্যৎ। সাহিত্যে কোন স্থির সত্য থাকে না, থাকা কাম্যও নয়, সেখানে ব্যক্তিগত দর্শনের ধারণাই শেষ কথা বলে, নিজেকে জানার ভেতর দিয়েই জন্ম নেয় ঋত -অক্ষর। এই ধ্রুব সত্য মাথায় রেখেই এবারের দেশ পত্রিকার জন্য কবিতা, ছোটগল্প, প্রবন্ধ নির্বাচন করা হয়েছে। কারণ এই পত্রিকার মূল উদ্দেশ্য হলো সাধারণ পাঠকের জন্য সাধারণ ভাষায় জীবনের পল-অনুপলের অনুভব তুলে ধরা, যেখানে না থাকে কোন নীতিশিক্ষা, না থাকে রাজনৈতিক বকবকানি বা উচ্চগ্রামের ইন্টালেকচুয়াল কচকচানি ,শুধু থাকে মন ভালো করা এক অনুভূতি যা এই মহাবিদ্যালয়ের বাংলা পঠন-পাঠনের সঙ্গে যুক্ত ছাত্রছাত্রীরা তাদের লেখনীর মাধ্যমে তুলে ধরেছে। যদি পাঠকগণ এই লেখাগুলো পছন্দ করেন তাহলেই বুঝবো আমাদের প্রয়াস সার্থক। ধন্যবাদান্তে---

খুশবু কুমারী
(ছাত্র সম্পাদক)

## পাহাড়ের গল্প

প্রিয়ন্তী চাকমা
প্রথম বর্ষ

চাকমা, মারমা, গারো সবাই,
শুনি পাহাড়ের গান।
চট্টগ্রামের পাহাড়ি জনপদ,
মায়াবী প্রকৃতি করে আহ্বান।

জুম ফসলের কত হাসি,
পাহাড়ের বুকে যায় ভাসি।
কাপ্তাই লেকের জল ভরা নীলে,
বনরূপা বাজারে লোক চলে দলে দলে।

ঝর্ণার সুরে শোনা যায় গান,
যে গানে পাহাড়িরা জীবনকে করে আহ্বান।
পাহাড়ের পথে আঁকাবাঁকা রাস্তা,
যেখানে ভরা থাকে পাহাড়ি জীবনযাত্রা।

চা বাগানের সেই সুন্দর সুবাস,
যেথায় থাকে কৃষ্ণচূড়ার আভাস।
রঙিন পালের নৌকা ভরা নদী,
একবার সেথায় যেতে পারতাম যদি !

## সোনার পাতে বিজ্ঞানের আলো

দেবাদৃতা ভট্টাচার্য
দ্বিতীয় বর্ষ

সোনার পাতের ওপর এলো আলোর বৃষ্টি,
আলোক কণারা কেড়ে নিল সবার দৃষ্টি।
কিছু গেল থমকে, কিছু গেল পেরিয়ে,
বিজ্ঞানের এক মহান ইতিহাস রচিত হল সেই নিয়ে ।
মহান বিজ্ঞানী রাদারফোর্ড বসে ভাবেন নীরব রাতের শেষে,
পরমাণুর গোপন প্রাণটা আসলে থাকে কোথায় বসে ?
কেন্দ্রে আছে নিউক্লিয়াস, ভারী আর ক্ষুদ্র,
তার চারি পাশে ইলেকট্রন নাচে তাথৈ রুদ্র।
নিউক্লিয়াস হলো সূর্যের মতো, থাকে যে মধ্যখানে,
ইলেকট্রন যেন গ্রহের মত, ঘুরে নিউক্লিয়াস এর চারিপাশে,
হলো নতুন সূর্য উদয়, হলো জ্ঞানের নবপ্রভাত,
হলো নতুন যুগের শুরু, হলো বিজ্ঞানের জয়গান।
এক বিন্দুকে কেন্দ্র করে থাকে লুকিয়ে অনেক শক্তি,
এমন আরও বিজ্ঞানীর অবদানে বিজ্ঞানের আলো পেল মুক্তি ।

## সাদা অ্যাপ্রণের যোদ্ধা

অনুসূয়া শর্মা
প্রথম বর্ষ

ভোর না হতেই বেরিয়ে যায়,
বৃষ্টিতেও থামেনা হায় !
রোগীর ডাকে ছুটে আসে,
নিজের ক্লান্তি ঢেকে হাসে ।

সাদা কোটে লুকানো প্রেম,
অন্যের বাঁচা তারই নাম।
ভুলে যায় ক্ষুধা, ঘুম আর ঘাম ,
ডাক্তার, তুমি মানবের ধাম!

## ভুল

খুশবু কুমারী
তৃতীয় বর্ষ

এই সৌর সময়ের সমুদ্র কিনারে,
এক মুঠা জীবনের কল্লোল শীকর
ছুঁয়ে যায় নোনা স্বাদ,
নুনের পুতুল।

বন ঝাড় দুলে ওঠে
ফুটে ওঠে শৃগালের প্রহরের ডাক।
বিবশ পৃথিবী চোরাবালি পার হয়ে
হৃদয় মিনারে
পাল তোলে এক ফালি
সোনা-মাজা বকচাঁদ।

আমার হৃদয় যেন হঠাৎ মাতিয়ে ওঠা দ্রাক্ষাসার।
ভূমধ্যসাগর ছেঁচা, বাতাসে বাতাসে নিয়েছো দেহ,
পৃথিবীরই বয়সে কত যুগ আগে।
তোমাকে পাওয়ার সেই ক্ষণটা,
গান হয়ে আছে স্মৃতির সৌরভে।

# আগমন

মনীশ যদুবংশী
দ্বিতীয় বর্ষ

হে কৃষক, জোরে চালাও লাঙ্গল

কঠিন মাটি ফুঁড়ে

উঠুক শস্য আর ফসল।

দেবতা

আদিম দেবতা

দেবে রোদ আর জল

কঠিন মাটির বুকে

চলুক লাঙ্গল।

শতাব্দীর বাঁধ

ভাঙছে আজ।

দুঃখ বেদনা ভোল

শত বঞ্চনা ভার

অতলে তলাবে

জয় রব তোল।

জয় রব তোল,

আকাশে বাতাসে

আসছে বিপ্লব রক্ত বহাতে

লাঙ্গলের মুখে

তাহারই আগমন তোল।

## শীতের প্রার্থনা

অনন্যা সিংহ
দ্বিতীয় বর্ষ

এরপর যদি কিছু থাকে থাক আজ
আকাশ অরণ্যের নিবিড় স্বাদ,
মনের ময়ূরের পেখমে পেখমে
শত বরণের তুলির তাজ।

আজ শুধু কাজ, জৈবিক প্রেরণায়
রোজ শোধা দিন দিনের তাড়নায়,
ভাঙ্গা নীড় হায়, নোনা জল বন্যায়,
সাগর হাওয়ায় ভরে প্রাণের কান্নায়।

কখন আসবে
শাখায় শাখায় পুষ্প সম্ভাবনা
পূর্ণ করি শীতের প্রার্থনা।

## এই কথাই মনে জাগে

বিহু রায়
দ্বিতীয় বর্ষ

পৃথিবী যখন ছিল প্রথম আলো আর বাতাসে
তখন ছিল না তার প্রকাশ।
সেই আদিম দিনে
শুধু বিকাশের অসহ্য যাতনা উঠত তার বুকে
দুলে দুলে, ফুলে ফুলে। সৃজনের অত্যুগ্র-আনন্দে
জাগিয়ে তুলত রোমাঞ্চ দেহের প্রতিটি রেখায়।
মাঝে মাঝে অবদমিত বাঁধায় গর্জে উঠতো কামনা
আর অযাচিত বিপ্লব আনত দুঃসহ যাতনা,
মুর্ত হয়ে উঠতো অচিন্ত্য সুন্দর কল্পনা।
পৃথিবীর সেই প্রথম ধূসর দিনে,
মনে জাগে কত কথা, কত ভাব আর অসহনীয়
ব্যথা।
একটা বিপ্লব আসবে নাকি এই অচল সমাজে।
মুক্ত করে দেবে নাকি অন্ধ বদ্ধ পথ,
তার পূর্বে সন্ধ্যার অন্ধকারে আজ |
এই কথাই মনে জাগে।

# ভাষার সংজ্ঞা ও স্বরূপে ধ্বনির উচ্চারণ

ধীরাজ সরকার

অতিথি অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ

মানুষ জন্মগ্রহণ করার পরে কোনও না কোনও আওয়াজ বা ধ্বনির সৃষ্টি করে। যা সেই মানব শিশুর অজান্তেই ভাষার মূলরূপ হিসেবে ধ্বনিত হয়। মায়ের কোলে শিশু ধীরে ধীরে বিকাশ লাভ করে ও বিভিন্ন ধ্বনির উচ্চারণ শেখে। এই ধ্বনি শিশুর মুখের ভেতর জিহ্বার বিভিন্ন অংশের সংস্পর্শে সৃষ্টি হয় এবং তা ধীরে ধীরে ভাষার জন্ম দেয়। এভাবেই ভাষা হাজার হাজার বছর ধরে মানব সভ্যতায় বৃহৎ জাল বিস্তার করে চলেছে। মানুষ তাঁর ভাব প্রকাশের নিমিত্তে যে সকল ধ্বনির উচ্চারণ করে তাই ভাষা। রত্না বসু মনে করেন, বিশ্ব প্রকৃতির মাঝে সকলেই আপন আপন ভাব প্রকাশে মুখর। সমুদ্রতরঙ্গ ধ্বনিও কিন্তু তার আপন ভাষা, বিচিত্র মর্মর ধ্বনি অরন্যের আপন ভাষা, নদীর কলতান তার নিজের ভাষা, পর্বতের গুরুগম্ভীর মহিমা তার নিজ ভাষা, পাখির কলকাকলিতে বিহঙ্গের ভাষার রূপ প্রতিষ্ঠা পেয়ে থাকে। তবে ভাষা হতে হলে সুবিন্যস্ত বুদ্ধিপরিকল্পিত ও ভাববিনিময়ের বাহন হতে হবে, তা না হলে ভাষা হবে না। পশু, পাখি, পাহাড় ও নদীর পক্ষে তা সম্ভব নয়, একমাত্র মানুষই এরকম ভাব বিনিময় করতে পারে। এভাবে ভাষাকে যদৃচ্ছাবশতঃ ও উচ্চারণ ধ্বনির প্রতীক রূপে উপস্থাপিত করা হয়েছে। যদিও মানুষ মনের ভাব প্রকাশ অঙ্গ-প্রত্যঙ্গের সাহায্যেও করে থাকে। আবার কখনো কণ্ঠধ্বনির সাহায্য গ্রহণ করে। কণ্ঠধ্বনির সাহায্যে ভাব প্রকাশ যতটা হয়, ইঙ্গিত এর সাহায্যে ততটা সম্ভব নয়। কণ্ঠধ্বনি বলতে মুখগহ্বর, কণ্ঠ ও নাসিকা ইত্যাদির সাহায্যে উচ্চারিত বোধগম্য ধ্বনি সমষ্টি বোঝায়। ভাষার প্রধান অঙ্গ হিসেবে এই ধ্বনি ব্যবহৃত হয়। অবশ্য বিশিষ্টতা ও শৃঙ্খলাবদ্ধতার দিক থেকে এই ধ্বনি বিভিন্ন ভাষাভাষীর মধ্যে ভিন্ন হয়। তাই বিভিন্ন গোষ্ঠীর মধ্যে নিয়ম-শৃঙ্খলাজাত ধ্বনিপুঞ্জকে এক একটি ভাষা বলা হয়ে থাকে।

ভাষার সংজ্ঞা সম্পর্কে রত্না বসু মনে করেন-

"ভাব বিনিময়ের স্পষ্টোচ্চারিত সুবিন্যস্ত এবং বুদ্ধিপরিকল্পিত ধ্বনিময় বাহনকে ভাষা বলে স্বীকার করব"।[১]

এর পরিপ্রেক্ষিতে বলা যায় মানুষের পরিণত বাগযন্ত্রের দ্বারাই স্পষ্টোচ্চারণ সম্ভব। তবে স্পষ্টোচ্চারণ হলেই যে ভাষা হবে তা নয়। তাকে হতে হবে অর্থযুক্ত বহুজনবোধ্য।

হীরেন চট্টোপাধ্যায় মনে করেন,

"মানুষের কণ্ঠে উচ্চারিত বহুজনবোধ্য ও অর্থপূর্ণ ধ্বনি সমষ্টিই ভাষা"।[২]

উদাহরণ সহকারে বোঝালে এই দাঁড়ায়, 'শিশু' ধ্বনিটির ধ্বনিগুচ্ছ হলো 'শ্+ই+শ্+উ'। এই ধ্বনিগুলোর মিলিত অর্থকে ভাষা প্রতিপন্ন করে না, যা বোঝায় তা হলো শিশু নামক নিষ্পাপ ছোট পুত্র বা কন্যাকে। সুতরাং একথা বলাই যায়, ভাষার স্বরূপ হিসেবে ধ্বনির মাধ্যমে এক প্রতীকময়তার বিষয়টি এখানে স্পষ্ট হলো। যা সস্যুর এর চিহ্ন বিজ্ঞানের significance কে বোঝায়।

সুনীতিকুমার চট্টোপাধ্যায় মনে করেন,
কণ্ঠ নাসিকা ও মুখ অভ্যন্তরের জিহ্বার দ্বারা উচ্চারিত ধ্বনি বা শব্দ বা পদ গঠন করে। পদ অর্থে তিনি inflected word কে বুঝিয়েছেন। ভাষা গঠিত হয় বিশেষ কোন সমাজের ব্যবহৃত শব্দ ও পদের সমষ্টি নিয়ে। যেমন বাঙালি জনসমাজে ভাষা বাংলা, আবার ইংরেজ জনজাতির ভাষা ইংরাজি।

তাঁর মতে-
"মনের ভাব প্রকাশের জন্য বাগযন্ত্রের সাহায্যে উচ্চারিত ধ্বনির দ্বারা নিষ্পন্ন কোন বিশেষ জনসমাজে ব্যবহৃত স্বতন্ত্রভাবে অবস্থিত তথা বাক্যে প্রযুক্ত শব্দ সমষ্টিকে ভাষা বলে"।[৩]

ভাষা শব্দটি কথা বলা অর্থে সংস্কৃত 'ভাষ্' ধাতু থেকে নিষ্পন্ন, যার পরিভাষা হলো speech বা language।
তিনি আরো মনে করেন, কানে যে ভাষা শোনা যায়, চোখের সামনে প্রকাশ করা হয় লিখিত রূপে। আর লিখিত রূপকে মূর্ত করা লিপির কাজ।
উচ্চারিত ও শ্রুত বিশেষ কোন ধ্বনির প্রতীক রূপে বিশেষ কোন চিহ্ন ব্যবহার করা হয়। আবার কখনো কখনো এই লিখিত ভাবচিত্রের ও প্রতীকের সাহায্যে মনের ভাব প্রকাশ করা হয়। তাদের যথাক্রমে চিত্রলিপি (Pictogram) ও ভাবলিপি বা প্রতীক লিপি (Ideogram) বলে।

সুকুমার সেন মনে করেন,
"মানুষের উচ্চারিত অর্থবহ বহুজনবোধ্য ধ্বনি সমষ্টিই ভাষা।
রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর ভাষা সম্পর্কে বলেন, সমাজ এবং সমাজের লোক এদের মধ্যে মনের মিলনের এবং আদান-প্রদানের উপায় স্বরূপে মানুষের সবচেয়ে শ্রেষ্ঠ যে সৃষ্টি, সে হচ্ছে তার ভাষা।

মুহাম্মদ শহীদুল্লাহ মতে-

"মনুষ্য জাতি যে ধ্বনি বা ধ্বনিসকল দ্বারা মনের ভাব প্রকাশ করে তার নাম ভাষা"।[৫]

মুনীর চৌধুরী ও মোফাজ্জল হায়দার চৌধুরী বলেন, "বাগযন্ত্রের দ্বারা উচ্চারিত অর্থবোধক ধ্বনির সাহায্যে মানুষের ভাব প্রকাশের মাধ্যম কে ভাষা বলে অভিহিত করা যায়"।[৬]

রফিকুল ইসলাম মতে, "ভাষা বলতে আমরা বুঝি ছোট বা বড় একটি জনসমষ্টির ভাবের আদান প্রদানের মাধ্যম বা মৌখিক যোগাযোগ এর বাহনকে"।[৭]

আবুল কালাম মনজুর মোরশেদ বলেন, "ভাষা হচ্ছে কণ্ঠনিঃসৃত ধ্বনি, যার অর্থগত দিক বিদ্যমান এবং বিশেষ সম্প্রদায় দ্বারা ব্যবহৃত"।[৮]বর্ণনামূলক ভাষাবিজ্ঞানে ভাষা হচ্ছে, "মানুষের উদ্ভাবিত বাক্ সংকেতের সংগঠন, যার দ্বারা কোনো একটি জনসমাজের মধ্যে পারস্পরিক যোগাযোগ ও ভাবের আদান-প্রদান করা চলে"।[৯] মনসুর মুসা মনে করেন, "ভাষা মূলত সংকেত বিনিময় এর একটি সামাজিক চুক্তি"।[১০]

উপরোক্ত ভাষা সংজ্ঞার আলোচনায় বলা যায়, ভাষা হচ্ছে কণ্ঠনিঃসৃত ধ্বনির সাহায্যে গঠিত কথা। যার অর্থদ্যোতকতা গুন বিদ্যমান, যার বিশেষ সম্প্রদায়ের মধ্যে প্রচলিত ও ব্যবহৃত একটি শৃঙ্খলাপূর্ণ ব্যবস্থা আছে এবং যার ধ্বনিরাশি বস্তু বা ভাবের প্রতীক।

**তথ্যসূত্রনির্দেশ :-**

১) রত্না বসু, ১৯৭৭, ১

২) হীরেন চট্টোপাধ্যায়, ১৯৮২, ২

৩) তদেব, ৩

৪) সুকুমার সেন, ১৯৮৩, ২৬

৫) মুহম্মদ শহীদুল্লাহ, ১৯৯৮, ২২

৬) গিয়াস শামীম, ২০১০, ৩

৭) তদেব ,পৃষ্ঠা-৩

৮) তদেব ,পৃষ্ঠা -৩

৯) তদেব, পৃষ্ঠা -৩

১০) তদেব ,পৃষ্ঠা -৩

# উৎসপঞ্জি

রাজিব হুমায়ুন, ২০১৬/২০০১, *সমাজভাষাবিজ্ঞান*, আগামী প্রকাশনী, ঢাকা

রামেন্দ্রসুন্দর ত্রিবেদী, ১৯৮৪, *ধ্বনিবিচার প্রবন্ধ, বাংলা ভাষা,* হুমায়ূন আজাদ (সম্পা), বাংলা একাডেমী, ঢাকা

রামেশ্বর শ, ১৪১৯ ব , *সাধারণ ভাষাবিজ্ঞান ও বাংলাভাষা,* পুস্তক বিপনী, কলকাতা

ডঃ মুহম্মদ শহীদুল্লাহ, ১৯৯৮, *বাংলা ভাষার ইতিবৃত্ত,* মাওলা ব্রাদার্স, প্রথম প্রকাশ, ঢাকা

ডঃ সুকুমার সেন, ১৯৮৩, *ভাষার ইতিবৃত্ত,* ইস্টার্ণ পাবলিকেশন, কলকাতা

ডঃ হীরেন চট্টোপাধ্যায়, ১৯৮২, *ভাষাতত্ত্ব ও বাংলা ভাষার ইতিহাস,* এস ব্যানার্জি এন্ড কোং, কলকাতা

ডক্টর গিয়াস শামীম, ২০১০, *উচ্চতর বাংলা ব্যাকরণ ও রচনাবলী,* জুপিটার পাবলিশিং, ঢাকা

রত্না বসু, ১৯৭৭, *ভাষাবিজ্ঞান ও সংস্কৃত ভাষা,* সংস্কৃত পুস্তক ভান্ডার, প্রথম প্রকাশ, কলকাতা

# বাংলা কার্টুনের কিংবদন্তী পিসিএল (কাফি খাঁ)

অধ্যাপক অন্তরা চৌধুরী
বাংলা বিভাগ

ইংরেজি শব্দ 'কার্টুন' হলো 'চিত্রসাহিত্য' আর তার সঙ্গে হালকা ক্যারিকেচার যুক্ত হলে তাকে বলা হবে 'নক্সাসাহিত্য'- এমনটাই জানিয়েছিলেন রবীন্দ্রনাথ তাঁর সচিব নন্দগোপাল সেনগুপ্তকে আর নন্দগোপাল বলেছিলেন ব্যঙ্গচিত্রী পিসিএল-কে (১৯০০ থেকে ১৯৭৫)। সাহিত্য ও চিত্রকলার একনিষ্ঠ ভাবসাধক রবীন্দ্রনাথের এই অনুভূতিকে পিসিএল তাঁর নিজের সৃষ্টির মাধ্যমে তুলে ধরেছিলেন। ইতিহাসে প্রথম শ্রেণীতে উত্তীর্ণ পিসিএল (প্রফুল্ল চন্দ্র লাহিড়ী) অধ্যাপনা দিয়ে কর্মজীবন শুরু করেন। রাষ্ট্রবিজ্ঞান, সমাজবিজ্ঞান, অর্থনীতিতে গভীর জ্ঞান তাঁর ব্যঙ্গচিত্র রচনার সহায়ক হয়েছিল। তাঁর তৈরি কার্টুন বুদ্ধিজীবী দর্শককে সাহিত্যরস উপলব্ধির সুযোগ করে দিয়েছে। সেই সঙ্গে ভাবিয়েছে, কাঁদিয়েছেও। প্রফুল্ল চন্দ্র লাহিড়ী (১৯০০-১৯৭৫) আধুনিক বাংলা রাজনৈতিক কার্টুনের পথিকৃৎ, অপরদিকে বাংলা কার্টুন স্ট্রিপ্ট ও পরবর্তীতে বাংলা চিত্রকাহিনী বা কমিক্সের জন্মদাতাও তিনিই। ১৯৩৫ সালে 'অমৃতবাজার পত্রিকা'য় তাঁর প্রথম কার্টুন স্ট্রিপ 'খুড়ো' প্রকাশিত হয়। কিছুকাল পরে 'যুগান্তর' পত্রিকায় শুরু করেন ছোটদের জন্য বিখ্যাত কার্টুন স্ট্রিপ 'শেয়াল পণ্ডিত'। খুড়ো যেমন মধ্যবিত্ত বাঙালির প্রতিনিধি, তেমনই 'শেয়াল পন্ডিত' ছিল ছোট থেকে বড় সকলের কাছেই অত্যন্ত চিত্তাকর্ষক। ইতিমধ্যে 'যুগান্তর' পত্রিকার রবিবারের ক্রোড়পত্রে স্বরচিত কাহিনী সহ মজার কমিক্স শুরু করেন- লাল, নীল, সবু ও কালো রঙে ছাপা সওয়া এক ফুট বাই পৌনে এক ফুট জায়গা নিয়ে। ধারাবাহিক এই চিত্রকাহিনীগুলির অভিনব পরিবেশন খুব সহজেই আপামর পাঠকের মন জয় করে নিল। একই সঙ্গে রামায়ণ-মহাভারতের পৌরাণিক চরিত্র ও ঘটনাকে কেন্দ্রে রেখে অত্যন্ত মজাদার ও কিম্ভূত পরিস্থিতি সৃষ্টিতে তাঁর জুড়ি মেলা ভার ছিল। নীতিহীন রাজনীতি আর সামাজিক অসাম্যের বিরুদ্ধে তিনি সোচ্চার হয়েছিলেন তুলির আঁচড়ে ও কলমের ধারে। তাঁর রচিত বিখ্যাত যে কমিক্সের নামগুলি না উল্লেখ করলেই নয়, সেগুলি হল- 'মাস্টারবাবু', 'ট্রলিবাবু', 'রিকশাওয়ালা', 'মহাভারতের কথা', 'সবজান্তা বাবা', 'ভীমের গল্প', 'কুম্ভকর্ণের কান্ড', 'মহাভারতের বনপর্ব', 'দুই বোকার গল্প' ইত্যাদি।

ছোটদের জানার বিষয়কে গল্পের মোড়কে ছবির মাধ্যমে বোঝানোর জন্য পিসিএল এর আন্তরিকতা ছিল অনবদ্য। 'ছবিকথা' বইটি দেখলে অবশ্যই এই প্রত্যয় দৃঢ় হয়। কমিক্সের স্টাইলে প্রতি পৃষ্ঠায় চিত্রের সাহায্যে পিসিএল বাচ্চাদের সামনে তুলে ধরেছেন কেমন করে রেলইঞ্জিন চলে, কিভাবে ওড়ে বা নানা যন্ত্র কেমন ভাবে কাজ করে। মনীষীদের জীবন নিয়ে তৈরি কমিক্স 'সুভাষ আলেখ্য', 'সত্যের সন্ধানে', 'In search of the truth'- এ রেখায় ও লেখায় মনীষীদের জীবনের পর্যায়গুলি অনন্যতায় মূর্ত হয়ে উঠেছে। বিদেশি ফ্লিপবুকের স্টাইলে পিসিএল একটি নতুন ধরণের অ্যালবামের প্রবর্তন করেন এদেশে 'কাফিস্কোপ'। দেখতে ছোট মাপের তাসের প্যাকেটের মতো একটি পুস্তিকা। তাস সাফল্ করার মতন দ্রুত গতিতে পাতাগুলো যখন উল্টে যেত তখন ছবিগুলির ক্রম দ্রুত পরিবর্তিত হয়ে চলমান কার্টুন দেখার দৃষ্টিবিভ্রম তৈরি হতো। হয়তো এই কারণেই বইগুলির শিরোনামে লেখা থাকতো KAFISCOPE -Animated cinema in picture pad- A Kafi Khan Enterprise | Long and short ও Jumbo boy, fish story ও milk sucker গল্পগুলির অভিনবত্ব ও মৌলিকত্ব নিঃসন্দেহে তৎকালীন পাঠকের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছিল।

লেখার শেষ পর্যায়ে কয়েকটি কথা অবশ্যই বলতে হয়। তা হল পৃথিবী জুড়ে এক অতি দুঃসময়ে ব্যঙ্গচিত্র আঁকা শুরু করেছিলেন তিনি। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ, ভারতের স্বাধীনতা আন্দোলন, সাম্প্রদায়িক উত্তেজনা, দেশভাগ ও চারপাশে বিদ্রোহের আগুন যখন জ্বলছে তখন ব্যঙ্গচিত্রের তীক্ষ্ণতায় একের পর এক বিস্ফোরণ ঘটিয়ে চলেছেন প্রফুল্লচন্দ্র কখনও পিসিএল-এর তুলিতে, কখনো কাফি খাঁর কলমের ধারে। আজও বিড়লা প্ল্যানেটরিয়ামে তাঁর তৈরি স্কাইলাইন তাঁর অদ্বিতীয়তার স্বাক্ষর বহন করে চলেছে। সর্বোপরি স্বরচিত কাহিনী ও সেই সঙ্গে তার চিত্রায়ন খুব কম কমিক্স শিল্পীই সৃষ্টি করতে পেরেছেন। মৌলিক কাহিনী নিয়ে কমিক্স রচনায় ময়ুখ চৌধুরী ও শৈল চক্রবর্তীর নাম সুবিদিত। তবে মনে হয় পূর্বসূরী হিসেবে বাংলা কার্টুনের জনক রূপে প্রফুল্লচন্দ্র আকা পিসিএল আমাদের হৃদয়ের স্থায়ী আসনে চিরকাল বিরাজমান থাকবেন।

देश

2024-25

# सिंधी विभाग

संपादक : आचार्य ललित मोहन

छात्र-संपादिका : वर्षा लुधवानी

## विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | ''राष्ट्र-गीतु'' जो सिंधी तर्जुमो | 110 |
| 2. | ''सिंधी'' में राष्ट्र गीत जी समझाणी | 111 |
| 3. | आजादी | 112 |
| 4. | पाडेसिरी | 112 |
| 5. | बहसु | 113-115 |

डॉ. नीलम बोरवण्कर
एसोसीएट प्रोफेसरु
डिपार्टमेंट ऑफ पोलिटिकल साइंस

## ''राष्ट्र–गीतु'' जो सिंधी तर्जुमो

जन–गण–मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब –सिंध– गुजरात मराठा–
द्राविड़ –उत्कल –बंगा,
विंध– हिमाचल– यमुना– गंगा,
उच्छल, जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मांगे
गाये तव जय गाथा।
जन गण–मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय हे, जय हे, जय जय हे।

# ''सिंधी'' में राष्ट्र गीत जी समझाणी

तूं सभिनी माण्हुनि जे मनु ते राजु कंदड़ु आहीं, हे भारत जा भाग्य विधाता, तुंहिंजी जय आहे। तुंहिंजो नालो पंजाब, सिंधु, गुजरात, महाराष्ट्र, द्राविड़ भूमी उत्कल ऐं बंग देशनि में गूंजे थो; उनजो नालो विंध्य ऐं हिमाचल जे पहाड़न में गूंजे थो; जमुना, गंगा ऐं महासागर जूं ऊंचियूं लहरूं तुंहिंजी जयकार जा गीत गाइनि थियूं। इहे सभु तुंहिंजो आशीर्वाद हासिलु करणु लाइ प्रार्थना कनि था ऐं तुंहिंजी प्रशंसा जा गीतु गाइनि था।

तूं सभिनी माण्हुनि खे सुख कल्याणु डींदड़ आहीं, हे भारत जे भाग्य विधाता, तुंहिंजी सदाईं जय थिए, जय थिए, जय थिए।

## आज़ादी

पखी आहिनि कैद जेकड़ुहिं
उड़ामण में करि मदद तूं
राति आहे कारी जंहिं करे
डीओ बारे करि रोशन तूं

गुजरी विया घणा ई साल
पुराणे वीचारनि में रहि करे

मर्दु, औरत या हुजे कोई बार
सभिनी जे जीवन जो करि आदरु तू
भञी छदि दीवारू सभु
अगिते वधु जीत जी राह ते
उन्हनि वीरनि छा पातो
जेकड़ुहि तूं हाणे बि डिजी वियों आहीं
उथु, वञु ऐ छू आसमान खे
आज़ादीअ ते आहे सभिनि जो हकु।

वर्षा लुधवानी

## पाडेसिरी

सभिनि जा थींदा अहिनि पाडेसिरी तमामु
कुझु कंदा आहिनि निण्ड़ हरामु
सुबुह थींदे ई हली था अचनि बियनि जे घरू
मुफ़्त जी चांहिं पीअंदा अहिनि
कपड़ा धोअण लाइ सर्फ़ बि न घणी ईंदा आहिनि
हर छंछरू हिक मुठि सर्फ़ घुरण ईंदा आहिनि
संदनि घरु वञु त गिलास पाणी बि न पुछनि
असांजे घरु अची पीअण लाइ
शर्बत जो गिलास घुरनि।

कुझु पाडेसिरी हुदां आहिनि डाढा सुठा
जेका इहो सभु न कदां अहिनि
ऐ हूंदा अहिनि दिल जा सच्चा
असांजो बि आहे पाडेसिरी हिक अहिड़ो
ख्याल जो आहे डाढो सुठो
घुरण बदिरां असांखे ही डेई वेंदो आहे
पर असाखे बि इहो याद रखण घुरिजे
हिक सुठो पाडेसिरी ठहण जी कोशिश करण खपे।

वर्षा लुधवानी

# बहसु

सजे गोठ में साधूरामु हिकिड़ी अहिड़ी शख़्सियत वारो विरलो शख़्सु मञियो वेंदो हुओ, जेको नईऊं नईऊं गाल्हियूं सोचणु में माहिरु हुआ। हिन दफ़े हुन पंहिंजे मगजु में हिक नई योजिना जो ख़ाको तैयार कयो जंहिं जे हिसाब सां गोठ जे बाग़ीचे में डह माण्हुनि जी मजिलस लगी रहे ऐं चिलम बि न विसामें। हिन वीचारु खे साधूअ गोठ जे अलगि अलगि ज़ाति जे माण्हुनि जी विचु रखियो। बाग़ जे विचो विचु हिकिड़ो तलाउ खोटियो वञे, गड इहो बि चयो वियो त जेकड़हिं को बि शख़्सु हिन कम लाइ मदद डियणु लाइ तैयार नथो थिए त बि चंदो घुरी बि हिन कम खे पूरो कयो वेंदो।

हीअ गालिह बुधंदे ई गोठ में सुसपुस शुरू थी वेई। नफ़े नुक़सानु जो जाइज़ो वरितो वियो। पंडितनि राइ डिनी हीउ हिक डाडो सुठो ख़्यालु आहे। हिन काज सां गोठ जे

रहाकुन जी भलाई थींदी। सभिनी खां वधीक वड़ी गालिह हीअ आहे त हिन कम सां सभनिन खे पुञ मिलंदो।

पर 'दुसाधनन' ताक़ीद कई त हिन मनसूबे सां किसाननि ऐं चरवाहन खे को बि फ़ाइदो हासिलु नाहे, ही हिकिड़ो बेकारु जो मनसूबो आहे छो जो खेतनि खे जोतण वारा हिन तलाउ जे पाणीअ खे पंहिंजे फ़ाइदे लाइ इस्तेमाल कंदा ऐं खेतनि में पाणी डींदा रहंदा। असांखे त हुन तलाउ जे पाणीअ सां स्नानु करणु जी बि इजाज़त न मिलंदी, न ई असीं हुन में मछी पकड़ी सघंदासीं। गोठ जो बाबु हिन तलाउ मां मछियूं पकड़ी विकिणंदो ऐं सज़ो मुनाफ़ो फबाए वेंदो।

सलाह कई वई त हर गोठाई जे घर जे बाहिर हिकु –हिक नंढो खूअ खोटियो वञे। वापारियुनि राइ डिनी त तलाउ खोटियो वञे त बि ठीकु न ठही तड़हिं बि कोई फर्कु नथो पए।

उन्हीअ वीचारु खे गोठ जे वैजु नकारे छड़ियो। वैजु जे वीचारु सां तलाउ जो पाणी गंदो थींदो रहंदो। इन में मछरु पैदा थींदा रहंदा, जंहिं सां घणियूं बीमारियूं थियणु जो डपु

आहे। हुन बीमारियुनि जी त मूं वटि दवा बि कोन्हे। हुन पाणीअ सां गोठ जा रहवासी बीमारु पई सघनि था।

हीअ राइ बुधी सभनिन जी अखियूं खुलजी वयूं त हिन सौदे में फ़ाइदो घटि ऐं नुक़सानु वधीक आहे। हीअ गाल्हि बुधंदे ई कुझु वक़्त लाइ साधूरामु जे खूअ खोटणु जी ताक़ीद मुंतकिल थी वेई।

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

# छात्र संपादक

अर्हत ( हिंदी )

अंशुमान मिश्रा ( अंग्रेजी )

राघव झा ( संस्कृत )

पूजा चौहान ( पंजाबी )

खुशबू कुमारी ( बांग्ला )

वर्षा लुधवानी ( सिंधी )

# DESHBANDHU COLLEGE

( UNIVERSITY OF DELHI )

Kalkaji Main Rd, Block H, Kalkaji,
New Delhi, Delhi 110019

A++ NAAC Accredited Institute with CGPA 3.65
13 Ranked in NIRF 2025 in Colleges Category

CONTACT INFO:

Phone : 011- 26439565,011-26235542
Anti-Ragging : +91-9818385270
E-mail : dbcollege.du@gmail.com

WEBSITE

Website: www.deshbandhucollege.ac.in
Facebook : www.facebook/deshbandhucollege
Twitter : www.twitter/deshbandhucollege

Printed by: Parnassus, Ph.: 9810054402, E-mail: parnassus202@gmail.com